BNHN402DET

राष्ट्रीय काव्यधारा

एन ई पी -2020 पाठ्यक्रम पर आधारित

बी. ए. (हिन्दी)

(चतुर्थ सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

Copyright © 2025, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
All right reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing form the publisher (registrar@manuu.edu.in)

ISBN : 978-81-68324-23-7
Course : Rashtriya Kavyadhara
First Edition : August 2026
Copies : 300
Price : 205/- (The price of the book is included in admission fee of distance mode students)

Course Coordinator

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Editorial Board/Editors

Prof. Rishabha Deo Sharma
Former Head, P.G. and Research Institute,
Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha,
Hyderabad
Consultant (Hindi), CDOE, MANUU

Prof. Shyamrao Rathod
Professor, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

Dr. Gurramkonda Neeraja
Associate Professor, PGRI,
DB Hindi Prachar Sabha, Chennai

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Dr. Wajada Ishrat
Assistant Professor (Hindi)
CDOE, MANUU

Dr. L. Anil
Assistant Professor (Cont.)
CDOE, MANUU

Production

Prof. Nikhath Jahan, Professor (Urdu), CDOE, MANUU
Mr. P Habibulla, Assistant Registrar, Purchase & Stores Section, MANUU
Dr. Mohd Akmal Khan, Assistant Professor (C), CDOE, MANUU
Mohd Abdul Naseer, Section Officer, CDOE, MANUU
Shaik Ismail, UDC, CDOE, MANUU
Syed Faheemuddin, LDC, Purchase & Stores Section, MANUU

On behalf of the Registrar, Published by:

Centre for Distance and Online Education
Maulana Azad National Urdu University
Gachibowli, Hyderabad-500032 (TG), India
*Director:*dir.dde@manuu.edu.in*Publication:*ddepublication@manuu.edu.in
Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

CRC Prepared by Dr. L. Anil, Faculty of Hindi, CDOE, MANUU
Printed at : Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

विषयानुक्रमणिका

संदेश		कुलपति	5
संदेश		निदेशक	6
भूमिका		पाठ्यक्रम–समन्वयक	7
क्र. सं.	**इकाई**	**लेखक**	**पृ.सं.**
1	मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. एल. अनिल	9
2	भारत भारती- भविष्यत खंड शिक्षा : व्याख्या	डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा	22
3	माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	प्रो. डी. शेषु बाबु	39
4	पुष्प की अभिलाषा, गगन पर दो सितारे : एक तुम हो : व्याख्या	प्रो. डी. शेषु बाबु	50
5	रामधारी सिंह 'दिनकर' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. वाजदा इशरत	65
6	कलम, आज उनकी जय बोल : व्याख्या	डॉ. बी. संतोषी कुमारी	81
7	सोहनलाल द्विवेदी एवं बालकृष्ण शर्मा नवीन: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. बी. संतोषी कुमारी	94
8	बढे चलो, अरे तुम हो काल के भी काल : व्याख्या	डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	112
	परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना		128

लेखक विविरण

डॉ. एल. अनिल. असिस्टेंट प्रोफेसर (संविदा), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद	Dr. L. Anil, Assistant Professor (C) CDOE , MANUU
डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, एसोसिएट प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै	Dr. Gurramkonda Neeraja, Associate Professor, Higher Education and Research Institution, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Chennai
प्रो. डी. शेषु बाबु, हिंदी विभाग, मानू	Prof. D. Seshu Babu, Dept. of Hindi, MANUU.
डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू	Dr. Wajada Ishrat, Assistant Professor (Hindi) CDOE , MANUU
डॉ.बी. संतोषी कुमारी, असिस्टेंट प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै	Dr. B. Santoshi Kumari, Assistant Professor, Higher Education and Research Institution, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Chennai
डॉ. सुपर्णा मुखर्जी, प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, भवन्स विवेकानंद डिग्री कॉलेज, सैनिकपुरी, हैदराबाद.	Dr. Suparna Mukharjee, Lecturer, Bhavan's Vivekananda College, Sainikpuri, Hyderabad

प्रूफ रीडर (Proof Readers) :

1. डॉ. एल. अनिल, असिस्टेंट प्रोफेसर (सं), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
2. डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
3. डॉ. आफ़ताब आलम बेग, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद

मुख पृष्ठ (Title Page) : श्री. इब्राहीम अकरम सिद्दीकी

संदेश

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है जिसे NAAC द्वारा ग्रेड A+ प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है, 1. उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार, 2. उर्दू माध्यम में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को सरल भाषा में उपलब्ध कराना, 3. पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा माध्यमों के द्वारा शिक्षा प्रदान करना, 4. महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। ये विशेषताएँ इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग और विशिष्ट बनाती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान प्रसार का मुख्य उद्देश्य यह है कि उर्दू जानने वाले समुदाय को समकालीन ज्ञान और विभिन्न विषयों तक सहज पहुँच मिल सके। लंबे समय तक उर्दू में पाठ्य सामग्री की कमी रही है। अब उर्दू विश्वविद्यालय के पास उर्दू में 350 से अधिक पुस्तकों का भंडार है, और यह संख्या हर सेमेस्टर के साथ बढ़ती जा रही है।

उर्दू विश्वविद्यालय को यह गर्व है कि वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार मातृभाषा/घरेलू भाषा में सामग्री उपलब्ध कराने के राष्ट्रीय मिशन का हिस्सा है। इसके परिणामस्वरूप, उर्दू भाषी समुदाय अब अद्यतन ज्ञान, उभरते हुए क्षेत्रों की जानकारी और मौजूदा विषयों में नवीन ज्ञान प्राप्त करने में पिछड़ा हुआ नहीं रह गया है, क्योंकि अब उर्दू में पढ़ने योग्य सामग्री उपलब्ध है। इन ज्ञान क्षेत्रों से संबंधित विषय-वस्तु की उपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति एक नई जागरूकता उत्पन्न की है, जो उर्दू जानने वाले समुदाय की बौद्धिक प्रगति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु, विश्वविद्यालय का दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र संबंधित विषयों में स्व-अध्ययन सामग्री तैयार करना सुनिश्चित करता है। विश्वविद्यालय दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा के छात्रों को यह स्व-अध्ययन सामग्री नि:शुल्क प्रदान करता है। यही सामग्री ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए नाममात्र मूल्य पर भी उपलब्ध है। शिक्षण तक पहुँच को और अधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से उर्दू/हिंदी/अंग्रेज़ी/अरबी में स्व-अध्ययन सामग्री(eSLM) विश्वविद्यालय की वेबसाइट से नि:शुल्क डाउनलोड की जा सकती है।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि संबंधित संकाय के परिश्रम और लेखकों के पूर्ण सहयोग से चारवर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम के अंतर्गत बी.ए.(आनर्स), बी. एस. सी.(आनर्स) और बी.काम. (आनर्स) पाठ्यक्रमों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर आरंभ हो चुकी है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को सुविधा प्रदान करने हेतु स्व-अध्ययन सामग्री(Self-Learning Material) की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मेरा विश्वास है कि हम अपनी स्व-अध्ययन सामग्री के माध्यम से एक व्यापक समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे और इस विश्वविद्यालय के उद्देश्य को सफलतापूर्वक निभाते हुए देश में अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध कर पाएँगे। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

वर्तमान युग में दूरस्थ शिक्षा को पूरी दुनिया में एक बहुत ही प्रभावशाली और उपयोगी शिक्षा प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है और बड़ी संख्या में लोग इस शिक्षा प्रणाली से लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय ने भी उर्दू भाषी जनसंख्या की शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थापना के समय से ही दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के साथ हुई थी और नियमित कार्यक्रमों की शुरुआत 2004 से हुई, इसके पश्चात विभिन्न विभागों की स्थापना की गई।

भारत में शिक्षा प्रणाली को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (Centre for Distance and Online Education) के तहत चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम, जो ओपेन और दूरस्थ शिक्षा मोड में हैं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो द्वारा अनुमोदित हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने दूरस्थ और नियमित शिक्षा के पाठ्यक्रमों को समन्वित करने पर जोर दिया है, ताकि दूरस्थ शिक्षा के छात्रों के स्तर को बढ़ाया जा सके। चूंकि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय एक ड्यूल मोड विश्वविद्यालय है, जो दूरस्थ और पारंपरिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है, इसलिए UGC-DEB के दिशानिर्देशों के अनुरूप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (CBCS) लागू किया गया और स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिए नई स्व-अध्ययन सामग्री तैयार की गई है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र फिलहाल उन्नीस (19) कार्यक्रम चला रहा है, जिनमें स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कार्यक्रम शामिल हैं। इसके साथ ही, तकनीकी कौशल आधारित कार्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। इस केंद्र ने अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) के अनुसार जुलाई 2025 से 4-वर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम प्रारंभ किया है। ऑनर्स कार्यक्रम B.A., B.Sc. और B.Com राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (NCF) के अनुसार डिजाइन किए गए हैं, जो छात्रों को ऑनर्स डिग्री प्राप्त करने में सहायता करेंगे। वर्ष 2025-2026 से MBA कार्यक्रम ODL मोड में शुरू किया गया है।

छात्रों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बैंगलोर, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची तथा श्रीनगर) और 6 उप-क्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, वाराणसी तथा अमरावती) का एक विशाल नेटवर्क स्थापित किया गया है। इसके अलावा, विजयवाड़ा में एक विस्तार केंद्र भी स्थापित किया गया है। इन क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत 157 से अधिक लर्नर सपोर्ट सेंटर (LSCs) और बीस कार्यक्रम केंद्र एक साथ संचालित किए जा रहे हैं, ताकि छात्रों को शैक्षणिक और प्रशासनिक सहायता प्रदान की जा सके। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र अपनी शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों में ICT का पूर्ण उपयोग करता है, और अपने सभी कार्यक्रमों में प्रवेश केवल ऑनलाइन मोड से ही प्रदान करता है।

छात्रों के लिए स्व-अध्ययन सामग्री (SLM) की सॉफ्ट कॉपी दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाती है और ऑडियो व वीडियो रिकॉर्डिंग के लिंक भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा ई-मेल और व्हाट्सएप समूहों की सुविधाएँ छात्रों को प्रदान की जा रही हैं, जिनके माध्यम से पाठ्यक्रम पंजीकरण, असाइनमेंट, काउंसलिंग, परीक्षाओं आदि जैसे कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के बारे में छात्रों को सूचित किया जाता है। नियमित काउंसलिंग के अलावा, पिछले दो वर्षों से छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए अतिरिक्त ऑनलाइन रेमेडियल काउंसलिंग की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

आशा है कि दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी आबादी को समकालीन शिक्षा की मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के अनुसार शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रमों में बदलाव किए गए हैं, इससे ओपेन और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में मदद मिलेगी।

प्रो. मोहम्मद रज़ाउल्लाह खान
निदेशक,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

भूमिका

"राष्ट्रीय काव्यधारा" शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 पाठ्यक्रम पर आधारित चारवर्षीय बीए के चतुर्थ सत्र (डीएसई) के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

स्वतंत्रता-पूर्व हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को कई उप खंडों में विभाजित किया गया है - भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद। कविता के क्षेत्र में इस उप विभाजन की एक सीमा यह है कि स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ जो राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा प्रवाहित हो रही थी, उसे अन्य प्रवृत्तियों जितनी प्रमुखता नहीं मिल सकी। इसलिए हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने द्विवेदी युग से प्रगतिवाद तक समानांतर रूप से बह रही इस काव्यधारा को 'राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता' के नाम से अभिहित किया है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम मुख्य रूप से इसी काव्यधारा के अध्ययन को समर्पित है। यों तो इस कालावधि में अनेक कवियों और कवयित्रियों ने भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में अपने कवि कर्म द्वारा प्रभूत योगदान किया, लेकिन यहाँ पाठ्यक्रम की सीमा को ध्यान में रखते हुए केवल पाँच प्रतिनिधि रचनाकारों को लिया गया है। इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित मैथिली शरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ-साथ उनकी एक-एक प्रतिनिधि रचना से भी छात्रों को परिचित होने का अवसर मिलेगा। इन कवियों और कविताओं का चयन इस प्रकार किया गया है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक संपूर्ण चित्र इनके माध्यम से छात्रों के मानस पटल पर उभर सके। साथ ही वे भारत बोध, राष्ट्र बोध, समाज बोध तथा सौंदर्य बोध की दृष्टि से भी समृद्धतर हो सकें। अर्थात यह सारी सामग्री इस दृष्टि से प्रस्तुत की गई है कि छात्रों के बौद्धिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक क्षितिज का तो विस्तार हो ही, उनकी सौंदर्य दृष्टि का भी विकास सुनिश्चित हो। इस प्रकार यह सामग्री छात्रों के भीतर भारतीय जीवन मूल्यों और मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास करने में सहायक होगी। इससे छात्रों के नैतिक और भाषिक स्तर का भी विकास हो सकेगा, ऐसा विश्वास है।

इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करते समय सरलता, सहजता, बोधगम्यता, प्रामाणिकता और पारदर्शिता का विशेष ध्यान रखा गया है। इस कार्य में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथकारों और संपादकों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

- **डॉ. आफ़ताब आलम बेग**
पाठ्यक्रम समन्वयक

राष्ट्रीय काव्यधारा

इकाई 1 : मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 मूल पाठ : मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तिव एवं कृतित्व
1.3.1 जीवन परिचय
1.3.2 रचना यात्रा
1.3.3 रचनाओं का परिचय
1.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व
1.4 पाठ सार
1.5 पाठ की उपलब्धियाँ
1.6 शब्द संपदा
1.7 परीक्षार्थ प्रश्न
1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल में राष्ट्रकवि मैथिलिशरण गुप्त का साहित्यिक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। इस काल में हिंदी की अनेक नई विधाओं का विकास हुआ। यह काल खड़ी बोली, ब्रजभाषा व गद्य लेखन की दृष्टि से स्वर्ण काल माना जाता है। आधुनिक काल को भिन्न-भिन्न चरणों में बाँटा गया है, जैसे - भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता। इन सभी चरणों के अंतर्गत अलग-अलग प्रवृत्तियाँ पाई गई। तथा इन्हीं प्रवृत्तियों के अनुरूप इस समय बहुत से कवि एवं लेखक हुए। अतः द्विवेदी युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त का नाम भी इस समय सर्वश्रेष्ठ कवियों में आता है। इन्हें राष्ट्रकवि के रूप में माना जाता है। गुप्त जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से तथा जन-जागरण का काम बहुत अधिक किया तथा उनकी कविताओं से खड़ी बोली हिंदी को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने में बहुत अधिक सहायता मिली। गुप्त जी अपनी कृति भारत-भारती के कारण राष्ट्रकवि कहलाए। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना चरम विकास पर पहुँची। नारी भावना का चित्रण करने में भी गुप्त जी हिंदी काव्य के इतिहास में बेजोड़ है।

1.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो ! इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

- राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगे।
- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं से अवगत हो सकेंगे।
- मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की प्रमुख विशेषताओं को जान सकेंगे।

- हिंदी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त के योगदान को समझ सकेंगे।

1.3 मूल पाठ: मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.3.1 जीवन परिचय

हिंदी के लोकप्रिय कवि मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनका जन्म चिरगाँव, झाँसी में 3 अगस्त, 1886 में हुआ तथा मृत्यु 1964 ई. में हुई। हिंदी साहित्य के इतिहास में वे खड़ी बोली के प्रथम महत्वपूर्ण कवि हैं। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना चरम विकास पर देखी जा सकती है। प्रारंभ में इनकी रचनाएँ कलकत्ता निकलने वाले पत्र 'वैश्योपकारक' में छपती थी। बाद में इनका परिचय महावीरप्रसाद द्विवेदी से हुआ और उसके बाद उनकी रचनाएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगी। द्विवेदी जी गुप्त जी के गुरू के समान थे उनसे गुप्त जी को बहुत अधिक प्रेरणा मिली। जिसके परिणामस्वरूप इनकी काव्यकला में बहुत निखार आया। गुप्त जी की खड़ी बोली हिंदी में लिखी रचनाएँ सरस्वती पत्रिका में 1906 ई. से छपने लगी थी। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना चरम सीमा पर पाई जाती है। इन्हें अपनी कविता 'भारत भारती' से बहुत अधिक लोकप्रियता मिली। 'भारत भारती' में गुप्त जी ने देश के अतीत और वर्तमान का चित्र खीचा था तथा भविष्य की सुखद कामना की है। इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन 1909 में हुआ तथा 'भारत भारती' का प्रकाशन 1912 ई. में हुआ और इसी कविता से इन्हें प्रसिद्धि मिली। 'भारत भारती' ने हिंदी भाषि जनता में जाति, देश के प्रति गर्व और गौरवपूर्ण भावनाएँ प्रबुद्ध की अतः इसी काव्य के कारण उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित किया गया। ये उपाधि गुप्त जी को महात्मा गांधी ने प्रदान की थी। वे 1952 में राज्यसभा के सदस्य भी नियुक्त किए गए।

मैथिलीशरण गुप्त जी की कविताओं ने खड़ी बोली हिंदी को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में अहम भूमिका निभाई। इन्होंने अपने कविता के माध्यम से जन-जागरण का कार्य बहुत ही सफलता के साथ किया। स्वदशानुराग में निमग्न रहने वाले गुप्तजी सदैव भारतीय संस्कृति के गौरव के गुणगान के साथ-साथ स्त्री, कृषक और वंचित के हक में खड़े रहते थे।

गुप्त जी एक रामभक्त कवि थे। 'रामचरित मानस' के बाद रामकाव्य का दूसरा ग्रन्थ साकेत है, जिसकी रचना गुप्त जी ने की थी। अपनी कविता में उन्होंने बहुत अधिक संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने साधारण बोलचाल की खड़ी बोली, हिंदी के जातीय मात्रिक छंद, गृहस्थ जीवन में प्रचलित पौराणिक आख्यान तथा अपने विचारों में विनम्र आत्मविश्वास ये सभी ही बुनियादी तत्व है, जिनसे गुप्त जी का रचनात्मक व्यक्तित्व निर्मित हुआ।

हिंदी के कवियों में प्रबंध-काव्य सबसे अधिक लिखने वाले कवि गुप्त जी ही हैं। उनकी वास्तविक काव्य प्रतिभा प्रबंध काव्यों में दिखाई देती है। इनके प्रबंध काव्य ज्यादातर पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानक पर आधारित है। इन प्रबंध काव्यों की मूल संवेदना आधुनिक है, इनमें

पौराणिक कथानक को नवीणता से जोड़कर दिखाया गया है। इन काव्यों में गुप्त जी धार्मिक विश्वासों का पूरी मर्यादा रखते हुए कथा के भाव पक्ष को नवीणता से जोड़ दिया है। जो पाठकों को पढ़ने में बहुत रूचिकर लगता है। गुप्त जी के लेखन में संवेदना का अंश बहुत अधिक पाया जाता था। उनकी संवेदना की व्यापकता हम मार्क्स की पुत्री जैनी पर लिखित उनके लेख 'जियनी' से आंक सकते हैं।

गुप्त जी के दो मुख्य महाकाव्य 'साकेत' और 'यशोधरा' है। जो उनकी कीर्ति के आधार है। इन दोनों काव्य में गुप्त जी की प्रतिभा बहुत ही सुंदर ढंग से प्रदर्शित हुई है। 'साकेत' में कवि ने विशेष रूप से लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की भावात्मक अनुभूतियों तथा उसकी त्याग भरी व्यथा को दिखाया है।

"युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी।
रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी॥"

इन पदों के माध्यम से गुप्त जी ने कैकेयी के चरित्र का चित्रण किया है। 'यशोधरा' में गुप्त जी ने नारी मन की करुण व्यथा को बहुत ही सुंदर ढंग से दिखाया है। उन्होंने समकालीन परिस्थितियों में नारी के दर्द को इन शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आँखों में पानी॥"

यहाँ 'दूध' माँ के वात्सल्य और आँखों में पानी उसकी विरह वेदना का द्योतक है।

यशोधरा भी एक कमज़ोर नारी नहीं है वह कहती हैं-

"सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या वे मुझको अपनी पथ-बाधा ही पाते?"

गुप्त जी को अपनी मातृभूमि से भी बहुत लगाव था। मातृभूमि की शोभा का वर्णन करते हुए वे कहते हैं-

"नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य चंद्र युग-मुकुट मेखला रत्नाकर है॥"

गुप्त जी की भाषा शुद्ध सरल, प्रसाद गुण से युक्त संस्कृत निष्ठ परिभार्जित खड़ी बोली है। इन्होंने विविध प्रकार के काव्यों की रचना की। साथ ही भाषा के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए अलंकारों का भी प्रयोग किया। गुप्त जी को बहुत सी उपाधि और पुरस्कार भी प्रदान किए गए 1948 में इन्हें आगरा विश्वविद्यालय से उन्हें डी लिट की उपाधि से सम्मानित किया गया। 1962 ई. में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया। 1954 में इन्हें साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। हिंदु विश्वविद्यालय ने भी इन्हें डी लिट की उपाधि से सम्मानित किया। इन्होंने 1911 में साहित्य सदन नाम का एक स्वयं के प्रेस की स्थापना भी की तथा मानस मुद्रण की स्थापना 1954-55 में झांसी में की। अतः इन सब गुणों से परिपूर्ण गुप्त जी जनता के प्रतिनिधि कवि हैं।

बोध प्रश्न

- मैथिलीशरण गुप्त की कौन सी रचना देश में राष्ट्र प्रेम की धूम मचा दी थी?
- मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि की उपाधि किसने दी थी?

1.3.2 रचना यात्रा

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्कृति प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का पवित्र आदर्श है। इनकी रचना में भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय जनजागरण को सुन्दरता के साथ दिखाया गया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से गुप्त जी ने अपनी रचनाओं को लिखने के लिए खड़ी बोली को चुना। तथा खड़ी बोली को अपनी कविताओं के द्वारा काव्य भाषा का दर्जा दिया। इस तरह ब्रजभाषा जैसी समृद्ध भाषा को छोड़कर समय के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने खड़ी बोली को ही काव्य भाषा के रूप में चुना। हिंदी साहित्य के इतिहास में गुप्त जी का यह योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

गुप्त जी की रचनाओं में पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय सम्बन्धों की रक्षा जैसे गुण देखने को मिलते हैं। सर्वप्रथम द्विवेदी जी ने बारह वर्ष की अवस्था में ब्रजभाषा में 'कनकलता' नाम से कविता लिखी। बाद में उनकी खड़ी बोली में लिखी गई कविताएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगी।

मैथिलीशरण गुप्त जी का रचनाकाल लगभग अर्द्धशताब्दी तक चला इस पूरी अवधि में इन्होंने दो महाकाव्यों, 19 खंडकाव्यों तथा अनेक स्फुट कविताओं की रचना की। इनके कुछ प्रमुख काव्य ग्रन्थ है- जयद्रथ-वध (1910), भारत-भारती (1912), पंचवटी (1925), झंकार (1929), साकेत (1931), यशोधरा (1932), द्वापर (1936), जयभारत (1952), विष्णुप्रिया (1957)। इन्होंने तिलोत्तमा, चंद्रहास और अनघ नाम के तीन नाटक तथा कुछ मुक्तकों की भी रचना की। पलासी का युद्ध, मेघनाद-वध, वृत्र-संहार आदि गुप्त जी के अनूदित काव्य हैं।

1909 में गुप्त जी का प्रथम काव्य संग्रह 'रंग में भंग' प्रकाशित हुआ तथा उसके बाद 1910 में 'जयद्रथ-वध' सामने आया। उन्होंने 1912 में राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण भारत-भारती का प्रकाशन किया। इस काव्य के कारण उनकी लोकप्रियता सर्वत्र फैल गई। गुप्त जी ने बहुत से काव्यग्रंथ का अनुवाद भी किया जैसे बंगाली काव्य ग्रंथ 'मेघनावध', 'विरहिणी', 'ब्रजांगना' तथा 'वीरांगना' का अनुवाद किया। इसी प्रकार उन्होंने संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'स्वप्नवासवद्रत्ता' का भी अनुवाद किया। सन् 1916-17 ई. में गुप्त जी ने महाकाव्य 'साकेत' की रचना आरंभ की तथा 1931 में यह ग्रंथ पूर्ण हुआ। गुप्त जी का दूसरा महत्वपूर्ण महाकाव्य यशोधरा सन् 1932 ई. में पूर्ण हुआ साकेत के लिए मंगला प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साकेत उनकी रचना का सर्वोच्च शिखर है। गुप्त जी भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता माने जाते हैं तथा इनकी सभी रचनाएँ राष्ट्रीयता से ओत प्रोत है। भारत-भारती ने उत्तर भारत में राष्ट्रीयता के प्रचार और प्रसार में बहुत

अहम भूमिका निभाई है।

बोध प्रश्न

- मैथिलीशरण गुप्त के किसी एक महाकाव्य का नाम बताइए?
- भारत-भारती काव्य का रचना काल क्या है?

1.3.3 रचनाओं का परिचय

हिंदी के लोकप्रिय कवि मैथिलीशरण गुप्त की कृत्तियों में आधुनिक युग की लोकोन्मुखता मानवीय करूणा के साथ घुल-मिल गई है। उनकी कृतियों पर गांधीवाद का प्रभाव देखा जाता है। वे अपने समय की समस्याओं के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील थे। सबसे बड़ी बात यह है कि वे नए विचारों का हृदय से अपने काव्य में उपयोग करते थे। गुप्त जी ने राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक जागृति और नैतिक मूल्यों पर बल दिया तथा अपनी रचनाओं के माध्यम से यह संदेश जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। गुप्त जी लोक की महिमा प्रतिष्ठित करने वाले रचनाकार हैं। साकेत के राम कहते हैं-

'संदेश नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया,
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।"

गुप्त जी मानववादी रचनाकार है। इन्होंने प्राचीन कथा में नवीणता को दर्शाया है। इन्होंने इसका अच्छा उदाहरण हम 'साकेत' में देख सकते हैं। साकेत में इन्होंने प्राचीन आख्यानों में आधुनिक बोध को कलात्मकता के साथ दर्शाया है।

राम तुम मानव हो, ईश्वर नहीं हो क्या?

तब मैं निरीखर हूँ, ईश्वर क्षमा करें।

गुप्त जी ने अपने काव्य में पारिवारिकता को केन्द्रीय संवेदना के रूप में उभारा है। संयुक्त परिवार भारतीय समाज की महत्वपूर्ण विशेषता है। इन्होंने पारिवारिक संबंधों का चित्रण भी नई चेतना के आलोक में किया है। उर्मिला, कैकेयी, यशोधरा, लक्ष्मण, सबमें कुछ न कुछ नवीनता दिखाने का प्रयास कवि ने किया है।

गुप्त जी के काव्य में नारी का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। नारी भावना को पहचानने और उसका चित्रण करने में गुप्त जी हिंदी काव्य के इतिहास में बेजोड़ है। नारी पात्रों पर स्थितियों का जो प्रभाव पड़ता है उसका चित्रण गुप्त जी बहुत ही स्वाभाविकता के साथ करते हैं। उन्हें नारी पत्र बहुत ही स्वाभिमानी, देशभक्त कर्तव्यपरायण होकर अपनी निजी वेदना खो नहीं देते। साकेत की उर्मिला, यशोधरा की गोपा इसका अच्छा उदाहरण है। भारतीय नारी के विषय गुप्त जी की यह उक्ति बहुत मार्मिक है-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

गुप्त जी के काव्य में देश प्रेम की भावना कुट-कुट कर भरी हुई है। इसका उदाहरण हम

भारत-भारती में देख सकते हैं। इनकी रचनाओं के माध्यम से हम सत्याग्रह अहिंसा, विश्वप्रेम, किसानों के प्रति प्रेम सब की झलक हम देख सकते हैं।

गुप्त जी के काव्य के कला पक्ष पर ध्यान दिया जाए तो हम पाते हैं कि इसमें शैली, छंद, भाषा, अलंकार आदि से बहुत ही समृद्ध है। इन्होंने खड़ी बोली को ही अपने काव्य का माध्यम बनाया। गुप्त जी ने अपने काव्य में प्रसाद, ओज व माधुर्य तीनों गुणों का समावेश किया है। लक्षणा और व्यंजना शब्द शब्द-शक्ति का प्रयोंग भी जगह-जगह देखा जा सकता है। इन्होंने अपने काव्य में विविध शैलियों का भी प्रयोग किया है। 'साकेत', 'जयद्रथ वध' और 'सिद्धराज' प्रबंधात्मक शैली में लिखा गया उनका काव्य है। उन्होंने अपने काव्य में छन्दों का भी सुन्दरता के साथ प्रयोग किया है।

बोध प्रश्न

- गुप्त जी के काव्य प्रमुख रूप से किस भावना को देखा जा सकता है?
- प्रबंधात्मक शैली में लिखे गए गुप्त जी के काव्यों के नाम बताइए।

मैथिलीशरण गुप्त जी की मुख्य रचनाएँ

भारत भारती

भारत भारती गुप्त जी की महत्वपूर्ण रचनाओं में एक है। इसका सृजन 1912 में हुआ तथा इसका प्रकाशन 1914 में किया गया। भारत भारती की रचना के प्रयोजन के बारे गुप्त जी बताते हैं कि "कोई दो वर्ष हुए मैंने 'पूर्व दर्शन' नाम की एक तुकबंदी लिखी थी। उस समय चित्र में आया था कि हो सकता है तो कभी इसे पल्लवित करने की चेष्टा करूँगा। इसके कुछ ही दिन बाद उक्त राजा (राजा रामपाल सिंह) का एक कृपा पत्र मुझे मिला, जिसमें उन्होंने मौलाना हाली के 'मुसद्दस' को लक्ष्य करके इस ढंग की एक कविता पुस्तक हिंदुओं के लिए लिखने का मुझसे अनुग्रहपूर्वक अनुरोध किया।" 'भारत भारती' में गुप्त जी ने स्वदेश प्रेम को दर्शाया है। तथा देश की दशा में सुधार लाने का प्रयोस किया है। गुप्त जी की इस कृति को हम सांस्कृतिक नवजागरण का ऐतिहासिक दस्तावेज़ कह सकते हैं। भारत भारती तीन खंडों में बाँटा गया है, अतीत खंड, वर्तमान खंड तथा भविष्यत खंड। इस कृति में राष्ट्रीयता की भावना को दर्शाया गया है।

भारतीय समाज और संस्कृति के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर सोच-विचार के लिए पाठकों को विवश करने वाली यह रचना इस सद्भावना के साथ आरंभ होती है कि सारे संसार में भारत और भारती का गौरव फिर से स्थापित हो जाए। इसके लिए कवि ने कोरी भावुकता के स्थान पर देश की दशा के ऊपर गंभीर विचार विमर्श की ज़रूरत बताई है -

हम कौन थे क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।

गुप्त जी मानते थे कि अपने इतिहास को जाने बिना भारतीयों का सोया हुआ स्वाभिमान जाग नहीं सकता। जबकि स्वतंत्रता के संघर्ष में कूद पड़ने के लिए इसकी बड़ी आवश्यकता थी।

इसलिए उन्होंने याद दिलाया कि भारतवर्ष अतीत में संसार का सिरमौर रहा है तथा किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति भारत जितनी पुरानी नहीं है। भारतवर्ष विद्या और कौशल के क्षेत्र में दुनिया का प्रथम आचार्य है। कवि ने यह भी याद दिलाया है कि हमारे पूर्वजों की कीर्ति अपार है। उनके लिए दैहिक सुख कोई महत्व नहीं रखते थे। बल्कि मानव कल्याण के लिए हमारे पूर्वजों ने प्राण नौछावर करने के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए थे। उनकी चेतना पूर्ण स्वाधीन थी-

वे मोह बंधन मुक्त थे, स्वच्छंद थे, स्वाधीन थे,

संपूर्ण सुख संयुक्त थे, वे शांति शिखरासीन थे।

कवि ने अपने पूर्वजों का गुणगान करते समय यह दर्शाया है कि भारतवर्ष अतीत में जगद्गुरू था। उनकी मान्यता है कि -

है आज पश्चिम में प्रभा जो, पूर्व से ही है गई,

हरते अंधेरा यदि न हम, होती न खोज नई-नई।

लेकिन जब कवि अपने समकालीन भारत की वर्तमान दशा पर विचार करते हैं तो दुख और क्षोभ से उनका हृदय हाहाकार करने लगता है। विदेशी आक्रमणों और लंबी गुलामी के कारण भारत का प्राचीन गौरव धूल में मिल गया। समाज का पतन हो गया। मर्यादाएँ भंग हो गईं। स्वार्थ, अहंकार, मद, दरिद्रता, दुर्भिक्ष और आत्महीनता ने भारतीयों को घेर लिया। स्वदेशी के स्थान पर विदेशी के आकर्षण ने भारतीय गौरव को नष्ट कर दिया। ऐसे समय कवि ने अपने देशवासियों को जागने और अपने कर्तव्य को पहचानने की प्रेरणा दी। साहित्यकारों को युग के चारण मानते हुए उन्होंने यह संदेश दिया कि काव्य का उद्देश्य मनोरंजन और चमत्कार नहीं, बल्कि लोक हित और जनता में उच्च भावों को जगाना है। वे कहते हैं -

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,

उसमें चित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

कवियो! उठो अब तो अहो, कविकर्म की रक्षा करो,

सब नीच भावों का हरण कर उच्च भावों को भरो।

'भारत भारती' के भविष्यत खंड में कवि ने यह प्रार्थना की है कि भारतीयों की 'पशु तुल्य परवशता' मिटे और यथार्थ मनुष्यता प्रकट हो। वे यह शुभकामना करते हैं कि -

सब की नसों में पूर्वजों का पुण्य रक्त प्रवाह हो,

गुण, शील, साहस, बल तथा सबमें भरा उत्साह हो।

सबके हृदय में सदा समवेदना का दाह हो,

हमको तुम्हारी चाह हो, तुमको हमारी चाह हो॥

बोध प्रश्न

- 'भारत-भारती' में गुप्त जी ने किस प्रेम को दर्शाया है?

- स्वतंत्रता के संघर्ष में कूद पड़ने के लिए किसकी आवश्यकता थी?
- 'भारत-भारती' को सांस्कृतिक नवजागरण का ऐतिहासिक दस्तावेज़ क्यों कहा जा सकता है?
- 'भारत-भारती' कितने खंडों में विभाजित है?

साकेत

साकेत राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित महाकाव्य है। इसमें उर्मिला को केंद्र में रखा गया है। यह एक रामकथा है। साकेत के नवम सर्ग में उर्मिला की विरह वेदना का वर्णन किया है। इस महाकाव्य में पूरी कथा बारह सर्गों विभक्त है। कवि ने अपना पूरा ध्यान उर्मिला पर ही केंद्रित किया है। चूँकि, उर्मिला काव्य में उपेक्षित रही है। किसी ने भी उस पर काव्य लिखने का प्रयास नहीं किया था। आठवें सर्ग में कैकेयी के पश्चाताप का वर्णन कवि ने किया है जिसमें उन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया है।

'साकेत' नवजागरण और स्वतंत्रता आंदोलन काल की समग्र चेतना को व्यक्त करने वाली अभिनव रामकथा है। मैथिलीशरण गुप्त मानते हैं कि राम का चरित्र इतना विराट है कि उस पर कलम चलाने वाला कोई भी व्यक्ति कवि बन सकता है। लेकिन राम के इस चरित्र को गुप्त जी ने अपने युग के अनुरूप नए स्वरूप में प्रस्तुत किया। इस रचना के द्वारा उन्होंने लोक कल्याण का एक नया आदर्श स्थापित किया तथा उर्मिला के चरित्र को केंद्र में रखते हुए राम कथा का स्त्री केंद्रित पाठ प्रस्तुत करके समाज के निर्माण और राष्ट्र के उत्थान में स्त्री जाति के योगदान को रेखांकित किया। कवि ने यह दर्शाया है कि सीता और उर्मिला दोनों की तपस्या अपनी अपनी जगह महान है। सीता ने जहाँ पति के साथ रहकर वन को ही राजभवन समझा, वहीं उर्मिला ने पति से अलग रहते हुए राजभवन में तपोवन जैसा जीवन जिया। नारी चरित्रों के उदात्त चित्रण की दृष्टि से 'साकेत' एक अनुपम कृति है।

बोध प्रश्न

- कवि ने 'साकेत' में अपना पूरा ध्यान उर्मिला पर ही क्यों केंद्रित किया?
- 'साकेत' को राम कथा का स्त्री केंद्रित पाठ क्यों कहा जा सकता है?
- 'साकेत' की रचना का मूल उद्देश्य क्या था?
- 'साकेत' के किस सर्ग में उर्मिला की विरह वेदना का चित्रण है?

यशोधरा

'यशोधरा' गुप्त जी द्वारा रचित प्रबंधकाव्य है। गद्य और पद्य मिश्रित होने के कारण इसे चंपू काव्य की कोटि में रखा जाता है। इसमें गौतम बुद्ध के गृह त्याग की कहानी को केंद्र में रखकर लिया गया है। इसमें नारी के विरहजन्य पीड़ा को विशेष रूप से दर्शाया गया है। इस काव्य का प्रमुख पात्र यशोधरा ही है। इस काव्य की रचना भी 'साकेत' की भाँति ही उपेक्षित नारी चरित्र को प्रतिष्ठा प्रदान करने के लिए की गई है। पति परित्यक्ता यशोधरा के हार्दिक दुख को प्रकट करना यहाँ कवि का मुख्य प्रयोजन रहा है। इसे इतिहास की विडंबना ही कहा जा सकता है कि भगवान बुद्ध के व्यक्तित्व की चकाचौंध के पीछे यशोधरा की पीड़ा कई शताब्दी तक अदृश्य रही। मानवीय

सम्बन्धों के अमर गायक और मानव सुलभ सहानुभूति को प्रतिष्ठा प्रदान करने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने उन्हें नेपथ्य से निकालकर काव्य के रंगमंच पर प्रस्तुत किया।

इस काव्य में यह दर्शाया गया है कि रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु के दृश्यों को देखकर गौतम इतने विचलित और भयभीत हो उठते हैं कि पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को सोते हुए छोड़कर अमृत तत्व की खोज में निकल जाते हैं। उनके जाने के बाद आँचल में दूध और आँखों में पानी लिए यशोधरा किस प्रकार धैर्य पूर्वक जीवन यापन करती है यही इस काव्य का केंद्रीय कथ्य है। सिद्धि प्राप्त होने पर बुद्ध के लौटने पर मानिनी यशोधरा उतावली होकर स्वागत के लिए नहीं दौड़ती, बल्कि खुद बुद्ध उनके द्वार पर आकर भीख माँगते हैं। यशोधरा के पास सबसे बड़ा धन उनका पुत्र राहुल ही था। उसे ही वे उन्हें सौंप देती हैं और स्वयं भी उनका अनुसरण करती हैं। इस काव्य की ये पंक्तियाँ नारी जाति की मर्मवेदना की गायत्री बन गई हैं -

अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

बोध प्रश्न

- गौतम किसे देखकर विचलित हुए?
- 'यशोधरा' काव्य का केंद्रीय कथ्य क्या था?
- यशोधरा के पास क्या धन था?

1.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

आधुनिक काल के प्रमुख कवियों में गुप्त जी का नाम आता है। ये आम जनता में बहुत लोकप्रिय थे। इन्होंने हिंदी साहित्य की सेवा बड़े उत्साह और इमानदारी के साथ किया। गुप्त जी द्विवेदी जी के आग्रह पर खड़ी बोली हिंदी को काव्य भाषा के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ी बोली को अपने काव्य की भाषा बना ली। उनकी रचनाएँ बहुत अधिक जनप्रिय हैं। हिंदी साहित्य में तुलसीदास के बाद मैथिलीशरण गुप्त ही एक ऐसे कवि हैं जिन्हें जनता ने बहुत अधिक प्यार दिया है। नव-जागरण की चेतना ने इनके काव्य संवेदना में मिलकर नया काव्य-संस्कार पाया है। भारतेंदु ने जो राष्ट्रीयता की भावना का बीज़ काव्य में डाला था उसका विकास गुप्त जी के काव्य में बहुत अधिक देखा गया और उनका काव्य नए युग की नई चेतना का वाहक बना।

गुप्त जी की कविता ने जन-जागरण का काम बहुत अधिक सफलता के साथ किया। ये भारतीय सभ्यता और संस्कृति के परमभक्त थे, किंतु वे अंधभक्त नहीं थे। उन्हें सभी धर्मों से बहुत अधिक प्यार था। अन्य धर्मों के गुण लेने में वे संकोच नहीं करते थे। गुप्त जी के बारे में पं.रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है- "गुप्त जी प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है कालानुसरण की क्षमता अर्थात उत्तरोतर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहन करते चलने की शक्ति। इस दृष्टि से ये निस्संदेह हिंदी भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं। भारतेंदु के समय से स्वदेश-प्रेम की भावना जिस रूप में चली आ रही थी उसका विकास 'भारत भारती' में मिलता है। इधर के राजनीतिक आंदोलनों ने जो रूप धारण किया उसका पूरा-पूरा अभास पिछली रचनाओं में

मिलता है। इनमें हम सत्याग्रह, अहिंसा, मनुष्यत्ववाद, विश्वप्रेम, किसानों और श्रमजीवियों के प्रति प्रेम और सम्मान सबकी झलक पाते हैं।"

भारतीय-संस्कृति और इतिहास की गुप्त जी को बहुत अधिक जानकारी थी और इसका प्रयोग वह अपने काव्य में करते थे। अतीत से वर्तमान का इतना घनिष्ठ संवाद उनकी कविता में निरंतर मिलता है। वे दोनों को मिलाने वाले सेतु हैं।

गुप्त जी का महत्त्व इस बात में है कि बहुत आधिक आलोचना के बावजूद वे आधुनिक काल के एक बड़े कवि हैं। उनकी लोकप्रियता के अनेक कारण हैं जैसे सीधी सरल भाषा, पौराणिक कथानकों का चुनाव, गृहस्त जीवन की महिमा का महत्त्व, राष्ट्रीय भाव की अभिव्यक्ति आदि।

मैथलीशरण गुप्त का 'साकेत' महाकाव्य ही नहीं आधुनिक हिंदी का युग प्रवर्तक महाकाव्य है। 'साकेत' में उर्मिला के पारंपरिक चरित्र को एकदम बदल दिया गया है। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीयता, समाजसुधार, नव जागरण, स्वतंत्र चेतना, मानवतावाद, समाजिक समता और गाँधीवाद आदि मूल्यों का समावेश किया है।

हमारी भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत सम्मान दिया जाता है। गुप्त जी ने भी अपने काव्य में इसका अनुसरण किया है। उन्होंने नारी के अनेक प्रकार के चरित्र अपने काव्य में उपस्थित किए हैं। हम कह सकते हैं कि हिंदी के किसी भी कवि ने नारी के इतने विभिन्नतापूर्ण चरित्र नहीं प्रस्तुत किए होंगे। नारी की पीड़ाओं में गुप्त जी को गहरी सहानुभूति थी।

अतः हम कह सकते हैं कि हिंदी साहित्य के इतिहास में कवि मैथिलीशरण गुप्त का स्थान अपने राष्ट्रीय चेतना एवं सामाजिक जागृति और नैतिक मूल्यों पर बल देने वाले काव्य के लिए हमेशा याद किया जाएगा।

बोध प्रश्न

- मैथिलीशरण गुप्त के किस काव्य में स्वदेश प्रेम की भावना की झलक मिलती है?
- मैथिलीशरण गुप्त ने अपने कावयाओं में किन मूल्यों का समावेश किया?

1.4 पाठ-सार

मैथिलीशरण गुप्त, द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। प्रारम्भ में इनकी रचनाएँ कलकत्ता से निकलने वाले पत्र 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित होती थी। द्विवेदी जी से मिलने के बाद इनकी रचनाएँ सरस्वती में प्रकाशित होने लगी। हरिऔध यही द्विवेदी युग के पहले कवि हैं, तो गुप्त जी इस युग के सम्पूर्ण प्रतिनिधि कवि हैं। द्विवेदी युग के काव्य को जितनी ही महत्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ है, वे सभी गुप्त जी की रचनाओं में देखी जाती है। उन्होंने ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ी बोली हिंदी में काव्य रचना किया। गुप्त जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता, समाज-सुधार, नवजागरण, स्वतंत्र चेतना, मानवतावाद, सामाजिक सभ्यता और गांधीवाद जैसे मुल्य देखने को मिलते हैं। इनकी प्रथम रचना 'रंग में भंग' का प्रकाशन सन् 1909 में हुआ, किंतु इनकी ख्याति 'भारत-भारती' (1912 ई.) से हुई। भारत-भारती को अंग्रेजों ने जब्त भी कर लिया था। इन कृति के प्रकाशन के बाद इन्हें राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्धि मिली। भारत-भारती में भारत के अतीत का

गौरवगान तथा तत्कालीन स्थिति का चित्रण किया गया है। इन्होंने दी महाकाव्यों तथा 19 खण्ड-काव्यों की रचना की। इनके दो महाकाव्य साकेत और यशोधरा है। इन्होंने लगभग 40 कृतियों की रचना की।

गुप्त जी के काव्य में पारिवारिक संबंधों का चित्रण नई चेतना के आलोक में किया गया है। साकेत में कवि ने उर्मिला को केन्द्र में रखकर काव्य की रचना की है। गुप्त जी ने नारी को अपने काव्य में मुख्य स्थान दिया है। अबला नारी में उन्हें गहरी सहानुभूति थी।

अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गुप्त जी अपने युग के महान कवि थे तथा अपने काव्य के माध्यम से समाज का सुधार करने वाले महान सुधारक थे।

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग की राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।
2. मैथिलीशरण गुप्त ने दो महाकाव्यों 'साकेत' और 'यशोधरा' तथा 19 खंड काव्यों की रचना की।
3. गुप्त जी की रचनाओं में 'भारत-भारती' का प्रमुख स्थान है।
4. गुप्त को 'राष्ट्रकवि' के रूप में सबसे पहले महात्मा गांधी ने संबोधित किया।
5. गुप्त जी रामभक्त कवि थे। उन्होंने 'साकेत' में रामकथा को उर्मिला के अवलोकन बिंदु से प्रस्तुत किया है।
6. 'यशोधरा' गौतम बुद्ध के गृह त्याग पर आधारित काव्य ग्रंथ है।

1.6 शब्द संपदा

1. उपाधि	=	सम्मान
2. कालानुसरण	=	समय के अनुसार
3. गृह-त्याग	=	घर छोड़कर जाना
4. गौरवपूर्ण	=	सम्मानित
5. प्रतिनिधि	=	स्थानापत्र व्यक्ति
6. माध्यम	=	साधन, उपाय
7. विरह	=	वियोग, अभाव
8. वेदना	=	कष्ट
9. सर्वश्रेष्ठ	=	सब में अच्छा

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

1.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. मैथिलीशरण गुप्त को अपनी किस विशिष्ट कृति के कारण 'राष्ट्रकवि' के रूप में प्रसिद्धि मिली?

A. साकेत **B. भारत-भारती** C. जयद्रथ-वध D. यशोधरा

2. मैथिलीशरण गुप्त के साहित्यिक गुरु कौन थे, जिनकी प्रेरणा से उनकी काव्यकला में निखार आया?

A. जयशंकर प्रसाद B. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

C. महावीर प्रसाद द्विवेदी D. भारतेंदु हरिश्चंद्र

3. महाकाव्य 'साकेत' में कवि ने मुख्य रूप से किस पात्र की उपेक्षित विरह वेदना को केंद्र में रखा है?

A. सीता B. मंदोदरी **C. उर्मिल** D. कैकेयी

4. गुप्त जी की कृति 'यशोधरा' को साहित्य की किस विधा के अंतर्गत रखा जाता है?

A. मुक्तक काव्य **B. चंपू काव्य** C. आलोचना D. गीति नाट्य

5. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म किस स्थान पर हुआ था?

A. कलकत्ता B. इलाहाबाद **C. चिरगाँव, झाँसी** D. वाराणसी

6. 'भारत-भारती' के संबंध में कौन सा कथन सत्य है?

A. यह तीन खंडों (अतीत, वर्तमान, भविष्य) में विभाजित है।

B. यह केवल काल्पनिक कथाओं पर आधारित है।

C. यह ब्रजभाषा में लिखी गई उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति है।

D. इसकी रचना का उद्देश्य केवल मनोरंजन था।

7. गुप्त जी ने संस्कृत के किस प्रसिद्ध नाटक का हिंदी में अनुवाद किया था?

A. मुद्राराक्षस B. उत्तररामचरितम **C. स्वप्नवासवदत्ता** D. अभिज्ञान शाकुंतलम

8. साकेत के किस सर्ग में कैकेयी के पश्चाताप का मार्मिक चित्रण किया गया है?

A. द्वादश सर्ग B. नवम सर्ग C. प्रथम सर्ग **D. अष्टम सर्ग**

9. गुप्त जी की कविताओं में नारी के प्रति दृष्टिकोण के बारे में कौन सी पंक्ति सबसे सटीक है?

A. वे नारी के केवल पारंपरिक रूप को ही स्वीकार करते हैं।

B. नारी पात्रों में स्वाभिमान और देशभक्ति का अभाव है।

C. नारी केवल विलासिता की वस्तु है।

D. नारी की करुण व्यथा और सामर्थ्य का सुंदर सामंजस्य है।

10. मैथिलीशरण गुप्त को 1954 में किस नागरिक सम्मान से विभोषित किया गया था?

A. ज्ञानपीठ पुरस्कार B. भारत रत्न **C. पद्म भूषण** D. पद्म श्री

खंड (ब)

1.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'भारत-भारती' के मूल चेतना पर प्रकाश डालिए।
2. 'साकेत' के संदर्भ अनुसार उर्मिला के विरह का वर्णन करें।
3. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य के मूल स्वरों पर प्रकाश डालिए।
4. 'यशोधरा' के मूल कथ्य पर प्रकाश डालिए।
5. हिंदी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त के स्थान एवं महत्व को रेखांकित कीजिए।

खंड (स)

1.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. मैथिलीशरण गुप्त की रचना यात्रा का वर्णन कीजिए।

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. भारत भारती : मैथिलीशरण गुप्त
2. साकेत : मैथिलीशरण गुप्त
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
4. मैथिलीशरण गुप्त रचनावली

इकाई 2 : भारत भारती - भविष्यत खंड - शिक्षा : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 मूल पाठ : भारत भारती - भविष्यत खंड - शिक्षा : व्याख्या
2.3.1 अध्येय कविता
2.3.2 विस्तृत व्याख्या
2.3.3 समीक्षात्मक अध्ययन
2.4 पाठ सार
2.5 पाठ की उपलब्धियाँ
2.6 शब्द संपदा
2.7 परीक्षार्थ प्रश्न
2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'भारत भारती' भारत की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना जागृत करने वाली कविता है। इसमें उन्होंने विदेशी शासन का खुलकर विरोध किया। 1912 में इस प्रकार की रचना लिखना साहस भरा कदम था। यह तीन खंडों में विभाजित है - अतीत खंड, वर्तमान खंड और भविष्यत खंड। अतीत खंड में भारत के गौरवशाली इतिहास और सभ्यता का वर्णन किया गया है। इस खंड में गुप्त जी ने भारत को ज्ञान, संस्कृति और सभ्यता का केंद्र बताया है। भारत की तत्कालीन दुर्दशा और विदेशी शासन के प्रभाव का वर्णन गुप्त जी ने वर्तमान खंड में किया है। भविष्यत खंड में उन्होंने भारत के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करते हुए उसे आत्मनिर्भर, शक्तिशाली और विकसित राष्ट्र बनाने का आह्वान किया है। उन्होंने शिक्षा, ज्ञान और राष्ट्रीय एकता पर बल दिया है। कवि भारत को विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने का सपना देखता है। प्रिय छात्रो! इस इकाई में आप मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'भारत भारती' के भविष्यत खंड में चित्रित शिक्षा के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे।

2.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त कृत 'भारत भारती' के भविष्यत खंड में चित्रित शिक्षा के महत्व को जान सकेंगे।
- 'भारत भारती' के भविष्यत खंड में चित्रित शिक्षा की विशेषता को रेखांकित कर सकेंगे।
- अध्येय कविता का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- अध्येय कविता का सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।

2.3 मूल पाठ : भारत भारती - भविष्यत खंड - शिक्षा : व्याख्या

प्रिय छात्रो! मैथिलीशरण गुप्त के साहित्य में भारतीय परंपरा को भलीभाँति देखा जा सकता है। कृष्णदत्त पालीवाल का कहना है कि 'आधुनिक भारतीय स्वाधीनता आंदोलन, नवजागरण, सत्याग्रह-युग और नेहरू-युग का विचार-मंथन गुप्त जी की रचना-दृष्टि के उत्तमांश को सामने लाता है। यह रचना-दृष्टि अपनी व्यापकता और गहराई में समाज के आर-पार देखने की क्षमता रखती थी। इतिहास-पुराण, मिथक, प्रतीक, रूपक उनकी लेखनी का पारस स्पर्श पाकर अपना जड़ता खो बैठता है और साहित्य कालजयी या क्लासिक शक्ति धारण कर लेता है।' कहना होगा कि मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएँ विशाल भारतीय समुदाय को प्रभावित करती हैं। उनकी इसी प्रतिभा के कारण महात्मा गांधी ने कवि की स्वर्ण-जयंती के अवसर पर उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि प्रदान की।

प्रिय छात्रो! इस इकाई में आप 'भारत भारती' के भविष्यत खंड में चित्रित शिक्षा के महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

2.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

'भारत भारती' के भविष्यत खंड में मैथिलीशरण गुप्त ने शिक्षा को राष्ट्र के उत्थान और सामाजिक सुधार का एक महत्वपूर्ण साधन बताया है। गुप्त जी का मानना था कि शिक्षा न केवल व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह समाज और देश के लिए भी अनिवार्य है। 'भारत भारती' में उन्होंने शिक्षा को एक ऐसा उपकरण माना है, जो भारतीय समाज को अंधकार से उबारकर उसे ज्ञान और प्रबुद्धता की ओर अग्रसर करता है। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि समाज में शिक्षा का प्रसार होगा तो एक नया जागरण आएगा और इस जागरण से देश में सशक्त परिवर्तन संभव होगा। गुप्त जी ने शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपराओं को भी सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

संक्षेप में, 'भारत भारती' में मैथिलीशरण गुप्त ने शिक्षा को एक शक्तिशाली और आवश्यक माध्यम माना है, जो देश को आत्मनिर्भर और प्रगति की दिशा में अग्रसर कर सकता है। उनका मानना है कि शिक्षा के माध्यम से ही देश का भविष्य सुधर सकता है और समाज में सकारात्मक बदलाव आ सकता है। एक सशक्त राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। जब लोगों में ज्ञान का संचार होगा, तभी वे आत्मनिर्भर और स्वतंत्र हो सकेंगे। शिक्षा के माध्यम से लोग सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं और यही उनके व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बनाता है। केवल विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के माध्यम से ही हम दुनिया के अन्य देशों से प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं और उन्नति की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

शिक्षा के बिना कोई व्यक्ति कभी सत्पात्र नहीं बन सकता। शिक्षा के बिना कल्याण की कोई आशा भी नहीं की जा सकती। यह संदेश भारत में शिक्षा के महत्व को प्रकट करता है और यह बताता है कि शिक्षा के अभाव में कोई भी व्यक्ति और राष्ट्र कभी उन्नति की दिशा में कदम नहीं बढ़ा सकते। शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं, बल्कि यह समाज के कल्याण और राष्ट्र

के उत्थान के लिए भी होना चाहिए। उन्होंने इसे एक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न

- शिक्षा के संबंध में गुप्त जी की क्या मान्यता है?
- 'भारत भारती' के माध्यम से मैथिलीशरण गुप्त क्या संदेश देना चाहते हैं?
- मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार देश का भविष्य कैसे सुधर सकता है?

2.3.2 अध्येय कविता

शिक्षा

सब से प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में,
शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में,
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है,
शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है॥

जब तक अविद्या का अँधेरा हम मिटावेंगे नहीं,
जब तक समुज्ज्वल ज्ञान का आलोक पाएँगे नहीं।
तब तक भटकना व्यर्थ है सुखसिद्धि के संधान में,
पाए बिना पथ पहुँच सकता कौन इष्ट स्थान में?

वे देश जो हैं आज उन्नत और सब संसार से
चौंका रहे हैं नित्य सबको नव नवाविष्कार से।
बस ज्ञान के संचार से ही बढ़ सके हैं वे वहाँ,
विज्ञान-बल से ही गगन में चढ़ सके हैं वे वहाँ॥

विद्या मधुर सहकार करती सर्वथा कटु निंब को,
विद्या ग्रहण करती कलों से शब्द को, प्रतिबिंब को!
विद्या जड़ों में भी सहज ही डालती चैतन्य है,
हीरा बनाती कोयले को, धन्य विद्या धन्य है॥

विद्या दिनों का पथ पलों में पार है करवा रही,
विद्या विविध वैचित्र्य के भांडार है भरवा रही।
गति सिद्धि उसकी हो चुकी आकाश में, पाताल में,
है वह मरों को भी जिलाना चाहती कुछ काल में!

पाया हमीं से था कभी जो बीज वर विज्ञान का,
उसको दिया है दूसरों ने रूप रम्योद्यान का।

हम किंतु खो बैठे उसे भी जो हमारे पास था,
हा! दूसरों की वृद्धि में ही क्या हमारा ह्रास था!

निर्देशइस : कविता का सस्वर वाचन कीजिए।

इस कविता का मौन वचन कीजिए।

2.3.3 विस्तृत व्याख्या

सब से प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में,
शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में,
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है,
शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है॥

शब्दार्थ : क्लेश = कष्ट, सत्पात्र = सुयोग्य पात्र, कल्याण = कुशलता

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित 'भारत भारती' के भविष्यत खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : इस काव्यांश में गुप्त जी ने शिक्षा के महत्व को समझाते हुए कहा है कि शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जो देश को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ा सकता है।

व्याख्या : सबसे पहले देश में शिक्षा को बढ़ाना चाहिए। यही सबसे पहला कर्तव्य है। शिक्षा के अभाव में हम समाज में अशांति और कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। शिक्षा के बिना कोई व्यक्ति अच्छे और योग्य नागरिक नहीं बन सकता। बिना शिक्षा के, किसी भी समाज या व्यक्ति के लिए कल्याण और विकास की कोई संभावना नहीं है, यह केवल निरर्थक आशा ही होगी।

विशेष :

1. गुप्त जी ने शिक्षा को समाज के विकास और समृद्धि के लिए आवश्यक तत्व के रूप में प्रस्तुत किया है, जो हर व्यक्ति और देश के भविष्य को दिशा और आधार प्रदान करता है।
2. 'शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है' - इस पंक्ति में रूपक का प्रयोग किया गया है। यहाँ दुराशा शिक्षा के अभाव में उत्पन्न कठिनाइयों की ओर इशारा करता है।
3. चरणबद्ध रूप से शिक्षा के बारे में समझाया गया है। पहले शिक्षा की आवश्यकता बताई गई है, फिर शिक्षा के अभाव में होने वाली समस्याओं का उल्लेख किया गया है और अंत में यह कहा गया है कि शिक्षा के बिना कल्याण असंभव है।

4. इन पंक्तियों में कवि का उद्देश्य समाज को जागरूक करना और शिक्षा के महत्व को प्रभावी ढंग से स्थापित करना है। कवि ने इसे रचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया है, ताकि समाज इसे समझे और शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरित हो।
5. उपर्युक्त पंक्तियाँ न केवल सामाजिक संदेश देने वाली हैं, बल्कि काव्यात्मक रूप में शिक्षा के महत्व को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करने में सफल हैं।

बोध प्रश्न

- गुप्त जी ने अनुसार जीवन का पहला कर्तव्य क्या है?
- शिक्षा के अभाव में समाज में क्या फैल जाएगा?

जब तक अविद्या का अँधेरा हम मिटावेंगे नहीं,
जब तक समुज्ज्वल ज्ञान का आलोक पाएँगे नहीं।
तब तक भटकना व्यर्थ है सुखसिद्धि के संधान में,
पाए बिना पथ पहुँच सकता कौन इष्ट स्थान में?

शब्दार्थ : अविद्या = शिक्षा का अभाव अथवा अज्ञानता, समुज्ज्वल = अधिक उज्ज्वल, आलोक = प्रकाश, संधान = खोज

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित 'भारत भारती' के भविष्यत खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में ज्ञान और शिक्षा के महत्व को प्रकट किया गया है।

व्याख्या : कवि यह कहते हैं कि जब तक हम अज्ञान के अंधकार को समाप्त नहीं करेंगे, तब तक हम सच्चे ज्ञान तक नहीं पहुँच सकते। जब तक हम ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त नहीं करेंगे, तब तक हम सही मार्ग पर नहीं चल सकते। ज्ञान से ही अज्ञान का अंधकार दूर हो सकता है और यह आलोक हमें जीवन में सही दिशा दिखाता है। जब तक व्यक्ति के पास सच्चा ज्ञान नहीं है, तब तक उसका सुख प्राप्त करने की दिशा में भटकना निरर्थक है। बिना ज्ञान के हम वास्तविक सुख या संतोष प्राप्त नहीं कर सकते। जब तक हमें सही मार्ग का ज्ञान नहीं होता, तब तक हम अपने लक्ष्य (इष्ट स्थान) तक नहीं पहुँच सकते। ज्ञान ही हमें सही दिशा और उद्देश्य प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन करता है।

विशेष :

1. इन पंक्तियों का मुख्य भाव यह है कि ज्ञान ही जीवन का वास्तविक मार्गदर्शक है। जब तक हम अज्ञान के अंधकार को दूर नहीं करते और ज्ञान के आलोक को प्राप्त नहीं करते, तब तक हम सही मार्ग पर नहीं चल सकते। ज्ञान ही हमें सुख, शांति और जीवन के सही लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है।
2. 'अविद्या' अर्थात अज्ञानता को अंधकार से जोड़ा गया है।

3. ये पंक्तियाँ ज्ञान और अविद्या के बीच अंतर को समझने के लिए प्रेरित करती हैं।
4. 'अविद्या का अंधेरा' और 'समुज्ज्वल ज्ञान का आलोक' - यहाँ कवि ने अज्ञान और ज्ञान को प्राकृतिक रूपकों में व्यक्त किया है।
5. ज्ञान को एक आलोक की तरह दिखाया गया है, जो व्यक्ति को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। ये पंक्तियाँ शिक्षा और ज्ञान के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता को उजागर करती हैं।
6. 'जब तक अविद्या का अंधेरा हम मिटावेंगे नहीं' - यह पंक्ति प्रेरणा देती है कि व्यक्ति को अज्ञान से मुक्ति पाकर ही सच्चे सुख की प्राप्ति हो सकती है।
7. समानांतर संरचना का प्रयोग किया गया है, जिससे विचारों को जोड़ने में एक प्रकार का तालमेल और संतुलन पैदा होता है। जैसे-

    जब तक अविद्या का अंधेरा हम मिटावेंगे नहीं,

    जब तक समुज्ज्वल ज्ञान का आलोक पाएँगे नहीं।

बोध प्रश्न

- कवि के अनुसार वास्तविक सुख और संतोष कैसे प्राप्त किया जा सकता है?
- कवि के अनुसार जीवन का वास्तविक मार्गदर्शक कौन है?

वे देश जो हैं आज उन्नत और सब संसार से
चौंका रहे हैं नित्य सबको नव नवाविष्कार से।
बस ज्ञान के संचार से ही बढ़ सके हैं वे वहाँ,
विज्ञान-बल से ही गगन में चढ़ सके हैं वे वहाँ॥

शब्दार्थ : उन्नत = ऊँचा, नवाविष्कार = नया आविष्कार, गगन = आकाश

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित 'भारत भारती' के भविष्यत खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में ज्ञान और विज्ञान के महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। ये पंक्तियाँ इस बात को व्यक्त करती हैं कि जो देश आज उन्नति की ऊँचाइयों तक पहुँच चुके हैं, वे ज्ञान और विज्ञान के माध्यम से ही अपनी प्रगति को संभव बना पाए हैं।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि कुछ देश जो आज विकास की उच्चतम स्थिति में हैं, वे अपनी लगातार नई खोजों और नवीन आविष्कारों के द्वारा दुनिया को चौंका रहे हैं। उनका यह उन्नति केवल ज्ञान और विज्ञान के आधार पर संभव हो पाया है। यह उन्नति केवल ज्ञान के फैलाव और प्रसार के कारण ही संभव हो पाई है। ज्ञान के संचार से समाज और राष्ट्र में प्रगति आई है। यहाँ पर कवि यह बता रहे हैं कि विज्ञान के बल पर ही वे देश आकाश में पहुँचने में सक्षम हुए हैं, जैसे अंतरिक्ष में यात्रा करना, उपग्रहों को भेजना, या अन्य विज्ञान की खोजों के माध्यम से।

इन पंक्तियों का मुख्य भाव यह है कि ज्ञान और विज्ञान किसी भी देश की प्रगति और उन्नति का मुख्य आधार हैं। जिन देशों ने इन दोनों क्षेत्रों में निवेश किया है, वे दुनिया में ऊँचा स्थान प्राप्त कर पाए हैं और उन्होंने अपने विज्ञान और नवाचारों के जरिए सब को चौंका दिया है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया है कि विज्ञान और शिक्षा के माध्यम से ही समाज और राष्ट्रों को वास्तविक उन्नति मिल सकती है।

विशेष :

1. इन पक्तियों में सकारात्मक दृष्टिकोण है।
2. गगन (आकाश) तक पहुँचने की कल्पना को विज्ञान की शक्तियों से जोड़ा गया है, जो विशेष रूप से उन देशों की उन्नति और प्रौद्योगिकी में प्रगति को उजागर करता है।

बोध प्रश्न

- किसी भी देश की प्रगति और उन्नति का मुख्य आधार क्या हो सकता है?

विद्या मधुर सहकार करती सर्वथा कटु निंब को,
विद्या ग्रहण करती कलों से शब्द को, प्रतिबिंब को!
विद्या जड़ों में भी सहज ही डालती चैतन्य है,
हीरा बनाती कोयले को, धन्य विद्या धन्य है॥

शब्दार्थ : कटु = कड़ुवा, निंब = नीम, चैतन्य = चेतना होने का भाव अथवा जीवंतता

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित 'भारत भारती' के भविष्यत खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : इन पंक्तियों का भावार्थ है कि विद्या (ज्ञान) का प्रभाव न केवल व्यक्ति के जीवन में, बल्कि समाज और प्रकृति में भी गहरा और परिवर्तनकारी होता है। कवि ने विद्या के महत्व को अत्यधिक सकारात्मक रूप में व्यक्त किया है, जिससे हर व्यक्ति और चीज़ को एक नया आकार और दिशा मिलती है।

व्याख्या : कवि ने विद्या को कटु निंब (कड़वा नीम) के साथ जोड़ा है। कवि ने कहा है कि जैसे नीम के कड़वे स्वाद को विद्या मधुरता में बदल देती है, वैसे ही ज्ञान कठिन और कड़े अनुभवों को भी सरल और मधुर बना सकता है। यह दर्शाता है कि विद्या जीवन में आने वाली कठिनाइयों को समझने और उनका समाधान करने की शक्ति देती है। विद्या शब्दों और कला को सशक्त और प्रभावी बनाती है। विद्या कला और अभिव्यक्ति के माध्यम से ज्ञान को आत्मसात करती है और उसे सुंदर और प्रभावी बनाती है। प्रतिबिंब का अर्थ है ज्ञान या कला का प्रत्यक्ष रूप, जिसे विद्या और अधिक सुंदर और सही दिशा में बदल देती है।

विद्या जीवन के हर क्षेत्र में, यहाँ तक कि जड़ों में भी चैतन्य (जीवंतता) का संचार करती है। यह पंक्ति यह बताती है कि ज्ञान का प्रभाव न केवल बाहरी चीज़ों पर, बल्कि गहरे और स्थायी तौर पर भी होता है। विद्या जीवन में न केवल प्रगति लाती है, बल्कि वह व्यक्ति और समाज को जागृत भी करती है।

कोयले की तुलना में हीरा मूल्यवान है और चमकदार भी। इसी तरह विद्या से जीवन में चमत्कारी परिवर्तन आ सकते हैं। विद्या किसी भी साधारण व्यक्ति को मूल्यवान और प्रभावशाली बना सकती है।

कवि ने विद्या के महत्व को सबसे सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है। विद्या को धन्य कहा गया है, क्योंकि वह जीवन को श्रेष्ठ, संपन्न और सार्थक बनाती है। विद्या से हर व्यक्ति और समाज का समृद्धि और शांति की दिशा में विकास होता है।

इन पंक्तियों का मुख्य भाव यह है कि विद्या जीवन में परिवर्तन लाने वाली एक शक्तिशाली उपकरण है। यह व्यक्ति को केवल सामाजिक और मानसिक रूप से जागरूक नहीं करती, बल्कि उसके जीवन में चमत्कारी बदलाव भी लाती है। विद्या कठिन और जटिल चीज़ों को भी सरल, सुंदर और मूल्यवान बना देती है। जैसे हीरा कोयले से बन सकता है, वैसे ही विद्या हर व्यक्ति को उच्चतर, उत्कृष्ट और जीवन में महान बना सकती है।

विशेष :

1. इन पंक्तियों में रूपक का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया गया है। जैसे 'कटु निंब' को मधुर सहकार में बदलना, कोयला को हीरे में बदलना और जड़ों में चैतन्य डालना - यह सभी रूपक हैं जो विद्या के शक्ति और प्रभाव को दर्शाते हैं।
2. कटु निंब (कड़वी नीम) से विद्या की मधुरता (मिठास) की ओर परिवर्तन दिखाया गया है। यह दर्शाता है कि विद्या जीवन की कठिनाईयों और कष्टों को भी हल्का और सरल बना सकती है।
3. कोयला को हीरा बनाना - यह रूपक दर्शाता है कि विद्या साधारण और निम्न स्तर के व्यक्ति को भी उच्च और मूल्यवान बना सकती है।
4. धन्य और मूल्यवान शब्द विद्या के महत्व को स्पष्ट करती हैं।
5. विद्या शब्द का बार-बार प्रयोग किया गया है - अनुप्रास अलंकार।
6. 'हीरा बनाती कोयले को' में उपमा का प्रयोग है।
7. नैतिक शिक्षा के तत्व इन पंक्तियों में विद्यमान है।
8. विद्या के शक्तिशाली और सकारात्मक प्रभाव को दर्शाया गया है।

बोध प्रश्न

- कवि विद्या को नीम से क्यों तुलना किया है?
- कवि ने विद्या को धन्य क्यों कहा है?
- कोयले और हीरे के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

विद्या दिनों का पथ पलों में पार है करवा रही,
विद्या विविध वैचित्र्य के भांडार है भरवा रही।
गति सिद्धि उसकी हो चुकी आकाश में, पाताल में,

है वह मरों को भी जिलाना चाहती कुछ काल में!

शब्दार्थ : दिनों का पथ = समय की सीमा, वैचित्र्य = विविधता, भांडार = भंडार, आकाश = उच्च स्तर, पाताल = निचले अथवा कठिन स्तर, जिलाना = जिंदा करना

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित 'भारत भारती' के भविष्यत खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : विद्या (ज्ञान) का प्रभाव न केवल समय के संदर्भ में अद्वितीय और अमूल्य है, बल्कि वह व्यक्ति की जीवन यात्रा को तेज, प्रभावी और सार्थक बनाती है। विद्या के माध्यम से व्यक्ति न केवल भौतिक दुनिया में प्रगति करता है, बल्कि उसका आत्मिक उत्थान भी संभव होता है।

व्याख्या : विद्या व्यक्ति को समय की सीमाओं को पार करने की शक्ति देती है। जहाँ सामान्य रूप से किसी कार्य को पूरा करने में कई दिनों का समय लगता है, विद्या के माध्यम से वही कार्य पलों में पूरा किया जा सकता है। यह एक रूपक है, जो यह दर्शाता है कि विद्या व्यक्ति को अपने लक्ष्य को तेजी से प्राप्त करने की क्षमता देती है।

कवि ने विद्या को वैचित्र्य (विविधता) और समृद्धि का भंडार कहा है। इसका अर्थ है कि विद्या व्यक्ति के जीवन को अनेक नए अवसरों, विचारों और संभावनाओं से भर देती है। यह एक प्रकार से ज्ञान के दायरे की विस्तृतता को दर्शाता है, जो विभिन्न दृष्टिकोणों और अवसरों से व्यक्ति को परिचित कराता है।

कवि यह कहते हैं कि विद्या की शक्ति और प्रभाव आकाश (आध्यात्मिक और भौतिक उच्चता) से लेकर पाताल (निचले या कठिन स्तर) तक फैल चुकी है। इसका अर्थ है कि विद्या की प्रभावशीलता केवल उच्च या ज्ञानी व्यक्तियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी स्तरों पर कार्य करती है और समाज के हर हिस्से में इसे लागू किया जा सकता है।

'है वह मरों को भी जिलाना चाहती कुछ काल में!' - यह पंक्ति विद्या की अद्वितीयता और शक्ति को और भी गहरे तरीके से प्रस्तुत करती है। कवि ने कहा है कि विद्या न केवल जीवितों के लिए है, बल्कि मृतकों (आध्यात्मिक या मानसिक मृत्यु) को भी कुछ काल में पुनर्जीवित करने की क्षमता रखती है। यह एक रूपक हो सकता है, जो यह बताता है कि ज्ञान व्यक्ति को मानसिक या आत्मिक मृत्यु से बाहर लाकर उसे पुनः जीवन के मार्ग पर ला सकता है।

इन पंक्तियों का मुख्य भाव यह है कि विद्या व्यक्ति को समय, स्थान और स्थिति की सीमाओं से परे जाकर सफलता और जीवन की उच्चतम अवस्थाओं तक पहुँचने की शक्ति प्रदान करती है। यह व्यक्ति को न केवल भौतिक दुनिया में, बल्कि मानसिक और आत्मिक स्तर पर भी समृद्धि, प्रेरणा और उत्थान देती है।

विशेष :

1. रूपक और प्रतीकात्मकता का प्रयोग।

2. 'विद्या दिनों का पथ पलों में पार' और 'विद्या विविध वैचित्र्य' - अनुप्रास अलंकार।
3. आकाश और पाताल जैसे विलोम शब्दों के माध्यम से विद्या को सार्वभौमिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। आकाश और पाताल से तात्पर्य है कि उसका प्रभाव केवल उच्च या दिव्य स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि वह निचले या कठिन स्तरों तक भी पहुँच सकता है।

बोध प्रश्न

- कवि ने विद्या को किस तरह का भंडार माना है?
- उक्त पंक्तियों में व्यक्त प्रतीकात्मकता के बारे में स्पष्ट कीजिए।
- 'है वह मरों को भी जिलाना चाहती कुछ काल में!' इस पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

पाया हमीं से था कभी जो बीज वर विज्ञान का,
दिया है दूसरों ने रूप रम्योद्यान का।
हम किंतु खो बैठे उसे भी जो हमारे पास था,
हा! दूसरों की वृद्धि में ही क्या हमारा ह्रास था!

शब्दार्थ : बीज = आधार, रम्योद्यान = सुंदर बग़ीचा, ह्रास = पतन

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश मैथिलीशरण गुप्त रचित 'भारत भारती' के भविष्यत खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में यह बताया गया है कि भारत या भारतीय संस्कृति ने विज्ञान (ज्ञान) के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया था, लेकिन वर्तमान में हम उस ज्ञान को खो चुके हैं।

व्याख्या : भारतीय समाज ने विज्ञान और ज्ञान का बीज (आधार) दिया था और इसे अन्य देशों में फैलाया था। भारत में प्राचीन काल में गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, धातुविज्ञान आदि क्षेत्रों में लोगों का महान योगदान था। अब वह विज्ञान और ज्ञान दूसरों के हाथ में है और उन्होंने उसे समृद्ध और विकसित किया है। अर्थात वह देश अब विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति कर रहे हैं। भारत का ज्ञान और विज्ञान अब अन्य देशों द्वारा सिंचित और विकसित किया जा रहा है।

भारत ने जो ज्ञान और विज्ञान का धरोहर अपने पास रखा था, उसे अब खो दिया है। यह आत्ममूल्यता की कमी और क्षति का प्रतीक है, जो आजादी के बाद भारत को महसूस हो रहा है।

'हा! दूसरों की वृद्धि में ही क्या हमारा ह्रास था!' पंक्ति में आत्मग्लानि की अभिव्यक्ति है। कवि ने यह प्रश्न उठाया है कि क्या हमें दूसरों के विकास में अपनी हार या नुकसान उठाना जरूरी था? क्या हम अपनी पहचान और सफलता खोकर दूसरों के विकास में योगदान देने वाले बन गए हैं?

कहने का तात्पर्य है कि भारतीय समाज ने पहले विज्ञान और ज्ञान के क्षेत्र में बहुत योगदान दिया था, लेकिन अब वह ज्ञान अन्य देशों के पास है और उनका योगदान और सफलता बढ़ रही है, जबकि भारत अपने ज्ञान और धरोहर को खो चुका है। कवि इस बात पर दुख और अफसोस व्यक्त कर रहे हैं। साथ ही यह सवाल उठा रहे हैं कि क्या दूसरे देशों की सफलता में भारत की वृद्धि और संपत्ति का नुकसान जरूरी था!

विशेष :

1. **रूपक** : 'बीज वर विज्ञान का' और 'रूप रम्योद्यान का' में रूपक का प्रयोग किया गया है। विज्ञान को बीज के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पहले भारत के पास था और इसे विकसित और समृद्ध किया गया। रम्योद्यान (सुंदर बगीचा) रूपक के माध्यम से यह दिखाया गया है कि विज्ञान का विकास और उसकी सुंदरता अब दूसरे देशों में देखी जा रही है।
2. **व्यंजनात्मकता** : 'बीज' और 'रम्योद्यान' प्रतीकात्मक शब्द हैं। बीज ज्ञान के आधार या शुरूआत को दर्शाता है, जबकि रम्योद्यान (सुंदर बगीचा) विज्ञान के विकसित रूप को दर्शाता है। यह प्रतीकवाद इस बात को व्यक्त करता है कि भारत ने ज्ञान का बीज बोया था, लेकिन अब वह बीज किसी और के द्वारा फलित हो रहा है।
3. **भावनात्मक और नॉस्टैल्जिक स्वर** : दुख और अफसोस का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कवि भारत के खोए हुए ज्ञान और विज्ञान पर नॉस्टैल्जिक रूप में अथवा आवेशपूर्ण रूप में विचार कर रहे हैं। 'हम किंतु खो बैठे उसे भी जो हमारे पास था' - यह पंक्ति इस क्षति की गहरी भावना को व्यक्त करती है।
4. **प्रश्नवाचक और आत्मचिंतन** : 'हा! दूसरों की वृद्धि में ही क्या हमारा ह्रास था!' - यह प्रश्न कवि की आत्मचिंतन की अवस्था को दिखाता है, जहाँ वह अपने देश के विकास में कमी और अन्य देशों की सफलता में अपनी हानि को लेकर प्रश्न कर रहे हैं। यह आत्मविश्लेषण की स्थिति है, जहाँ कवि भारत की वर्तमान स्थिति पर विचार कर रहे हैं।
5. 'वृद्धि' और 'ह्रास' जैसे शब्दों का सामंजस्यपूर्ण प्रयोग।
6. उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में नैतिक संदेश निहित है। कवि यह इंगित करते हैं कि भारत ने विज्ञान का आधार दिया था, लेकिन समय के साथ उसे खो दिया। यह भारत की आत्म गौरव को जागृत करने वाला एक संदेश है कि हमें अपनी धरोहर और विज्ञान की महत्ता को समझने और उसकी पुनः प्राप्ति के लिए कार्य करने की आवश्यकता है।

बोध प्रश्न

- भारतीय समाज ने कैसा बीज दिया था?
- कवि क्या प्रश्न करते हैं?
- दिया है दूसरों ने रूप रम्योद्यान का - इस पंक्ति का क्या अर्थ है?

- कवि इन पंक्तियों के माध्यम से क्या संदेश देना चाहते हैं?

2.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि हैं। उस काल की कविता में नए विषयों की खोज थी। साथ ही काव्य प्रयोजन तथा मनोरंजन से ज्यादा लोक मंगल, लोक जागरण की प्रेरणा को घोषित किया गया था। गुप्त जी ने भी कहा था 'अर्पित हो मेरा मनुज काय बहुजन हिताय बहुजन हिताय।' बहुजन हिताय की इसी मूल चेतना से राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की सृजनात्मकता ओत-प्रोत है। गुप्त जी के साहित्य में देशभक्ति का रस निहित है। कृष्णदत्त पालीवाल का मानना है कि 'मैथिलीशरण गुप्त जी की रचना-कर्म जिस युग में अंकुरित हुआ था, वह एक प्रकार से रचना के क्षेत्र में समस्या-पूर्ति का युग था। गुप्त जी ने रस और अलंकार की पुरानी रूढ़ियों को भी ललकारा और नए काव्य-विषयों की बात उठाते हैं।'

गुप्त जी का काव्य फलक अत्यंत व्यापक है। भारतीय साहित्य के अतीत एवं वर्तमान पर गुप्त जी की दृष्टि केंद्रित है। जीवन के सभी सांस्कृतिक एवं राजनैतिक पहलुओं को उनके काव्य में देखा जा सकता है। लोक जीवन, लोक संवेदना और लोक चेतना से गुप्त जी का काव्य अनुप्राणित है।

मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'भारत भारती' एक ऐतिहासिक और राष्ट्रीय काव्य है, जो भारतीय संस्कृति, गौरव और स्वतंत्रता के महत्व को दर्शाता है। यह रचना उनका एक उत्कृष्ट काव्य है, जो भारत के प्राचीन गौरव को याद दिलाती है और स्वतंत्रता संग्राम की भावना को उजागर करती है। इस काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. **राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय चेतना** : 'भारत भारती' काव्य में गुप्त जी ने भारत के राष्ट्रीय जागरण को प्रमुख स्थान दिया है। वे भारत को अपनी जननी के रूप में चित्रित करते हैं और भारतीय संस्कृति की महानता को प्रदर्शित करते हैं। उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को गौरवमयी बताया और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ लोगों को जागरूक किया। गुप्त जी ने अपने काव्य में भारतीय इतिहास और आध्यात्मिकता को जोड़ते हुए राष्ट्रीयता की भावना को व्यक्त किया।
2. **सांस्कृतिक गौरव** : 'भारत भारती' में भारतीय संस्कृति, धर्म और इतिहास का महिमामंडन किया गया है। गुप्त जी ने भारतीय संस्कृति की अमरता और शाश्वतता पर जोर दिया है और इसे विश्व की सबसे श्रेष्ठ संस्कृति बताया है।
3. **भारत माता का चित्रण** : गुप्त जी ने भारत माता को सम्मानित रूप में प्रस्तुत किया है। उन्हें एक देवी के रूप में दिखाया गया है, जो राष्ट्र के गौरव और सम्मान का प्रतीक है। यह काव्य देशभक्ति की भावना को जागृत करने वाला है।
4. **स्वतंत्रता संग्राम और जागरूकता** : 'भारत भारती' में गुप्त जी ने भारतीय समाज को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया। वे अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय एकता और संघर्ष की आवश्यकता को महसूस करते थे। उनका काव्य इस समय के राष्ट्रीय आंदोलन से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है।

5. **सामाजिक जागरूकता** : गुप्त जी ने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों और असमानताओं पर भी अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने समाज में सुधार की आवश्यकता को महसूस किया और इसके लिए राष्ट्रीय चेतना और जागरूकता की बात की।

बोध प्रश्न

- मैथिलीशरण गुप्त ने समाज में सुधार की आवश्यकता को क्यों महसूस किया?
- मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' में प्रमुख रूप से किस भावना को व्यक्त किया है?

2.4 पाठ सार

प्रिय छात्रो! आप जान ही चुके होंगे कि शिक्षा के अभाव में स्वस्थ समाज का निर्माण संभव नहीं है। शिक्षा ही वह साधन है जो व्यक्ति को सर्वांगीण रूप से विकसित करता है। शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। भारतीय समाज को शिक्षा के माध्यम से जागरूक किया जा सकता है। प्रगति की दिशा में व्यक्ति को प्रेरित किया जा सकता है। शिक्षा समाज की वास्तविक शक्ति और राष्ट्र के निर्माण का आधार है।

2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. शिक्षा एक ऐसा उपकरण है, जो भारतीय समाज को अंधकार से उबारकर उसे ज्ञान और प्रबुद्धता की ओर अग्रसर करता है।
2. 'भारत भारती' में कवि ने स्पष्ट किया है कि तत्कालीन समाज में शिक्षा का स्तर गिर चुका था। अतः वे उसे पुनर्जीवित करने की अपील करते हैं।
3. शिक्षा राष्ट्र की प्रगति और विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि एक शिक्षित समाज ही राष्ट्र की आत्मनिर्भरता और सामाजिक बदलाव की दिशा में कदम बढ़ा सकता है।
4. कवि भारतीय संस्कृति और प्राचीन शिक्षा व्यवस्था को अत्यंत गौरवपूर्ण मानते हैं। चूँकि प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि आत्मिक और नैतिक सुधार भी था।
5. शिक्षा केवल कार्यकुशलता और धन कमाने का साधन नहीं है, अपितु जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक साधन है।
6. शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनने में सहायक सिद्ध होता है। इससे समाज में समृद्धि और उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है।

2.6 शब्द संपदा

1. आत्मनिर्भर = स्व निर्भरता

2. आह्वान = निमंत्रण देना
3. उत्थान = उन्नत
4. उन्नति = प्रगति
5. नवजागरण = नवीन चेतना अथवा जागृति
6. प्रतिस्पर्धा = प्रतियोगिता, होड़
7. प्रबुद्धता = ज्ञान
8. सकारात्मक = जो सार्थक और निश्चित हो

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

2.7.1 सही विकल्प चुनिए

1. मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'भारत भारती' के भविष्यत खंड का मुख्य स्वर क्या है?

A. भारत के प्राचीन वैभव का केवल गुणगान करना

B. केवल विदेशी शासन की आलोचना करना

C. भारत को आत्मनिर्भर और विकसित बनाने का आह्वान

D. प्राचीन युद्धों का विस्तृत वर्णन

2. कवि के अनुसार, देश में सबसे पहला और अनिवार्य कर्तव्य क्या होना चाहिए?

A. व्यापार में वृद्धि करना B. सैन्य शक्ति बढ़ाना

C. राजनीतिक पद प्राप्त करना **D. शिक्षा का प्रसार करना**

3. शिक्षा के अभाव में 'कल्याण की आशा' को कवि ने क्या संज्ञा दी है?

A. सुनहरी आशा **B. दुराशा** C. दृढ़ प्रतिज्ञा D. सार्थक प्रयास

4. कविता में 'सुखसिद्धि के संधान' में भटकना कब तक व्यर्थ बताया गया है?

A. जब तक हम बहुत धन अर्जित नहीं कर लेते

B. जब तक हम शारीरिक रूप से बलवान नहीं बनते

C. जब तक अविद्या का अंधेरा नहीं मिटता

D. जब तक हम विदेशों की यात्रा नहीं करते

5. कवि के अनुसार, विकसित देशों ने 'गगन' (आकाश) तक पहुँचने की सफलता किसके बल पर प्राप्त की है?

A. अत्यधिक जनसंख्या के बल पर B. केवल भाग्य के बल पर

C. विज्ञान के बल से D. प्राचीन परंपराओं को छोड़ने से

6. विद्या के प्रभाव के बारे में कौन सा कथन कविता के आधार पर सही है?

A. विद्या केवल किताबी ज्ञान तक सीमित है B. विद्या से व्यक्ति अभिमानी हो जाता है

C. विद्या केवल अमीर लोगों के लिए उपयोगी है **D. विद्या कड़वे नीम को भी मधुर बना देती है**

7. कवि ने शिक्षा के लिए 'हीरा' और 'कोयला' का उदाहरण क्यों दिया है?

A. यह बताने के लिए कि शिक्षा बहुत महंगी है

B. खनन उद्योग के महत्व को समझाने के लिए

C. व्यक्ति के आंतरिक गुणों के परिवर्तन को दर्शाने के लिए

D. यह दिखाने के लिए कि कोयला बेकार है

8. शिक्षा के संबंध में 'मरों को भी जिलाना' किस प्रकार की प्रतीकात्मकता है?

A. मानसिक या आत्मिक रूप से सुप्त समाज को जागृत करना

B. प्राचीन काल के औषधीय ज्ञान का वर्णन करना

C. यह किसी जादू या चमत्कार की ओर संकेत है

D. चिकित्सा विज्ञान में केवल पुनर्जन्म की बात करना

9. 'बीज वर विज्ञान का' पंक्ति के माध्यम से कवि भारत की किस स्थिति का वर्णन कर रहे हैं?

A. विदेशी वैज्ञानिकों का भारत में स्वागत

B. भारत विज्ञान के क्षेत्र में हमेशा से पिछड़ा था

C. कृषि क्षेत्र में नए बीजों का अविष्कार

D. भारत की प्राचीन वैज्ञानिक विरासत और वर्तमान क्षति

10. 'रम्योद्यान' (सुंदर बगीचा) का रूपक किसके लिए उपयोग किया गया है?

A. भारत के सुंदर जंगलों के लिए

B. केवल कविता की सुंदरता बढ़ाने के लिए

C. दूसरे देशों द्वारा विकसित किए गए विज्ञान के स्वरूप के लिए

D. विश्व शांति के एक समझौते के लिए

खंड (ब)

2.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'सब से प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में,/ शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में,/ शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है,/ शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है' - इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
2. 'जब तक अविद्या का अँधेरा हम मिटावेंगे नहीं,/ जब तक समुज्ज्वल ज्ञान का आलोक पाएँगे नहीं।/ तब तक भटकना व्यर्थ है सुखसिद्धि के संधान में,/ पाए बिना पथ पहुँच सकता कौन इष्ट स्थान में?' - इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
3. 'वे देश जो हैं आज उन्नत और सब संसार से/ चौंका रहे हैं नित्य सबको नव नवाविष्कार से।/ बस ज्ञान के संचार से ही बढ़ सके हैं वे वहाँ,/ विज्ञान-बल से ही गगन में चढ़ सके हैं वे वहाँ॥' - इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
4. 'विद्या मधुर सहकार करती सर्वथा कटु निंब को,/ विद्या ग्रहण करती कलों से शब्द को, प्रतिबिंब को!/ विद्या जड़ों में भी सहज ही डालती चैतन्य है,/ हीरा बनाती कोयले को, धन्य विद्या धन्य है॥' - इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
5. 'विद्या दिनों का पथ पलों में पार है करवा रही,/ विद्या विविध वैचित्र्य के भांडार है भरवा रही।/ गति सिद्धि उसकी हो चुकी आकाश में, पाताल में,/ है वह मरों को भी जिलाना चाहती कुछ काल में!' - इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
6. 'पाया हमीं से था कभी जो बीज वर विज्ञान का,/ दिया है दूसरों ने रूप रम्योद्यान का।/ हम किंतु खो बैठे उसे भी जो हमारे पास था,/ हा! दूसरों की वृद्धि में ही क्या हमारा ह्रास था!' - इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

2.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. पठित काव्यांश के आधार पर शिक्षा के महत्व का निरूपण कीजिए।
2. 'भारत भारती' में शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्य किस प्रकार व्यक्त किए गए हैं?

3. मैथिलीशरण गुप्त ने शिक्षा के उद्देश्य और महत्व को कैसे दिखाया है? पठित काव्यांश के आधार पर निरूपित कीजिए।
4. 'शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास है या समाज और राष्ट्र की भलाई भी है?' - आपके विचारों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
5. मैथिलीशरण गुप्त ने शिक्षा के माध्यम से समाज की व्यथा और आंतरिक शक्ति का चित्रण किस प्रकार किया है?
6. शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान का विस्तार करने का साधन है, या इसमें नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा का भी महत्व है? पठित काव्यांश के आधार पर चर्चा कीजिए।

2.8 पठनीय पुस्तकें

1. भारत भारती - मैथिलीशरण गुप्त
2. मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली - सं. कृष्णदत्त पालीवाल
3. मैथिलीशरण गुप्त : प्रासंगिकता के अंतःसूत्र - कृष्णदत्त पालीवाल
4. मैथिलीशरण गुप्त संचयिता - सं. नंदकिशोर नवल

इकाई 3 : माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मूल पाठ: माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व

3.3.1 जीवन परिचय

3.3.2 रचना यात्रा

3.3.3 माखनलाल चतुर्वेदी की साहित्यिक विशेषता

3.4 पाठ-सार

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

3.6 शब्द सम्पदा

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

3.8 पठनीय पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य की समृद्ध परंपरा में अनेक कवियों ने राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय चेतना को नया आयाम दिया है, लेकिन इनमें माखनलाल चतुर्वेदी का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। वे केवल एक कवि ही नहीं, बल्कि एक स्वतंत्रता सेनानी, सच्चे राष्ट्रभक्त और निष्ठावान पत्रकार भी थे। उनके काव्य में छायावादी सौंदर्य और प्रेम का अद्‌भुत समन्वय मिलता है, लेकिन इन सबके मूल में राष्ट्रप्रेम ही विशेष रहा है।

माखनलाल चतुर्वेदी की कविताएँ न केवल राष्ट्रीय आंदोलन को गति प्रदान करती हैं, अपितु समाज में त्याग और समर्पण की भावना को भी मुखरित करती हैं। उनका साहित्य हमें यह सिखाता है कि किसी भी महापुरुष का जीवन सीमाओं में बंधा नहीं होता, बल्कि वह युगों-युगों तक प्रेरणा-स्रोत बना रहता है। माखनलाल चतुर्वेदी इसी श्रेणी के साहित्यकार थे, जिनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को राष्ट्रप्रेम और मानवता की भावना से ओत-प्रोत कर देती हैं।

इस अध्याय के अंतर्गत हम उनके जीवन, साहित्यिक योगदान और राष्ट्रप्रेम की गहरी अभिव्यक्ति को विस्तार से समझने का प्रयास करेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से आप-

- माखनलाल चतुर्वेदी के जीवन, साहित्यिक योगदान और राष्ट्रप्रेम को गहराई से जानेंगे।
- माखनलाल चतुर्वेदी केकाव्य में निहित सौंदर्य, विचारधारा और भाषा शिल्प की विशेषताओं को पहचानेंगे।
- माखनलाल चतुर्वेदी कीरचना दृष्टि में निहित सौंदर्यबोध एवं रहस्यवाद की प्रवृत्तियों को समझेंगे।
- माखनलाल चतुर्वेदीके साहित्य में प्रतिफलित राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान को परखेंगे।
- माखनलाल चतुर्वेदी की भाषा की प्रवाहमयता, सृजनात्मकता और ओजस्विता को विश्लेषित करेंगे।

3.3 मूल पाठ: माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.3.1 जीवन परिचय

माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, लेखक, निबंधकार और पत्रकार थे। उनका जन्म 4 अप्रैल 1889 कोमध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई नामक गाँव में हुआ था। भारत को स्वतंत्र कराने के संघर्ष में उन्होंने न केवल सक्रिय भूमिका निभाई, बल्कि अपने साहित्यिक योगदान से राष्ट्रीय चेतना को भी जाग्रत किया। उनका बचपन गाँव की प्राकृतिक सादगी और भारतीय संस्कृति के बीच बीता, जिससे उनके साहित्य में ग्रामीण जीवन की झलक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

माखनलाल चतुर्वेदी के पिता का नाम नंदलाल चतुर्वेदी था, जो एक धार्मिक और विद्वान व्यक्ति थे। उनकी माता सुंदरबाई ने उन्हें नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं से परिचित कराया। बचपन से ही उन्हें शिक्षा और साहित्य के प्रति गहरी रुचि थी। वे अध्ययनशील थे और उन्हें हिन्दी साहित्य, गणित और दर्शनशास्त्र में विशेष रुचि थी। उनकी इसी रुचि ने उन्हें आगे चलकर शिक्षक और साहित्यकार बनने के लिए प्रेरित किया।

माखनलाल चतुर्वेदी का विवाह 1903 में मात्र 14 वर्ष की उम्र में 9 साल की ग्यारसी बाई से हुआ। यह उस समय की प्रचलित परंपरा के अनुसार बाल विवाह था। विवाह के कुछ वर्षों बाद इस दंपति को एक बेटी हुई, लेकिन दुर्भाग्यवश उसका अल्पायु में ही निधन हो गया। कुछ समय बाद उनकी पत्नी भी अस्वस्थता के कारण स्वर्ग सिधार गईं। उस समय माखनलाल जी केवल 26 वर्ष के थे। पत्नी और बेटी के निधन ने उनके जीवन को गहरा आघात दिया और उन्होंने कई वर्षों तक इस दुःख को महसूस किया।

इस वेदना को उन्होंने अपनी कविता 'माई छोड़ो नहीं मुझे 'में व्यक्त किया—
"माई छोड़ो नहीं, मुझे खुलकर रोने दो, "यह पत्थर का हृदय आँसुओं से धोने दो!"

पत्नी की मृत्यु के बाद उन्होंने अपने जीवन को समाज सेवा, साहित्य और राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दिया। वे आत्मिक रूप से इस क्षति को कभी न भूल सके, लेकिन उन्होंने इसे अपनी रचनात्मकता और राष्ट्रीय विचारधारा की प्रेरणा बना लिया।

माखनलाल जी ने जबलपुर से शिक्षा प्राप्त करने के बाद खंडवा के मुंबई बाजार के प्राइमरी स्कूल में शिक्षक के रूप में कार्य किया। वे गणित में कुशल थे और विद्यार्थियों के प्रति अत्यंत स्नेहशील और समर्पित थे। उनके पढ़ाने की शैली इतनी प्रभावी थी कि छात्र उनकी कक्षा को बहुत पसंद करते थे।

शिक्षण कार्य के साथ उन्होंने पत्रकारिता और साहित्य की ओर भी कदम बढ़ाया। उन्होंने 'कर्मवीर' नामक पत्रिका का संपादन किया, जिसमें वे समाज, राष्ट्र और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े विषयों पर लेख लिखते थे। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, स्वामी रामतीर्थ, गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों का प्रभाव उनके विचारों पर पड़ा, जिससे उनके लेखन में राष्ट्र प्रेम और जन जागरण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। माखनलाल चतुर्वेदी नेअंग्रेजी शासन के अन्याय और अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई। उनके लेखों और कविताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया, जिससे ब्रिटिश सरकार को उनके विचार असहनीय और विद्रोहात्मक लगे। उन्होंने कई बार जेल यात्राभी की, लेकिन वे अपने विचारों से कभी पीछे नहीं हटे।

उनकी कविताएँ राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने वाली थीं। उनकी प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' में उन्होंने राष्ट्र के लिए बलिदान देने की भावना व्यक्त की—

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,

"उस पथ पर देना तुम फेंक,

"मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,

"जिस पथ जाएँ वीर अनेक!"

बोध प्रश्न

- माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय लिखिए।

सम्मान और पुरस्कार

उनकी साहित्यिक सेवा के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया—

- 1943 में देव पुरस्कार (हिमकिरीटीनी के लिए)
- 1954 में साहित्य अकादमी पुरस्कार (हिमतरंगिणी के लिए)
- 1956 में डी.लिट उपाधि (सागर विश्वविद्यालय द्वारा)

- 1963 में पद्मभूषण सम्मान (भारत सरकार द्वारा)

माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन संघर्ष, साहित्य साधना और राष्ट्र सेवा का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से जन जागरण किया, राष्ट्रभक्ति की भावना को सशक्त किया और हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी। उनका साहित्य सौंदर्य, रहस्यवाद, राष्ट्रप्रेम और मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण था। वे न केवल हिन्दी साहित्य के अमर रचनाकार हैं, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण सिपाही भी रहे हैं।

उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रेरित करती हैं और राष्ट्रप्रेम की भावना को जाग्रत करती हैं। उनका जीवनत्याग, संघर्ष और सृजन की गाथा है, जिसे आने वाली पीढ़ियाँ हमेशा याद रखेंगी।

बोध प्रश्न

- माखनलाल चतुर्वेदी को उनकी किस रचना पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला?

3.3.2. रचना संसार

माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य के उन महान रचनाकारों में से एक हैं, जिन्होंने कविता, निबंध, नाटक, कहानी और पत्रकारिताके माध्यम से साहित्य को समृद्ध किया। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना, सौंदर्यबोध, रहस्यवाद और मानवीय संवेदनाओं से भरी हुई हैं। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति, प्रकृति, स्वतंत्रता संग्राम और मानवता की गहरी छाप देखने को मिलती है।

माखनलाल चतुर्वेदी कीकविताएँ राष्ट्रभक्ति और बलिदान की भावना से ओत-प्रोत थीं। उनकी कविताओं में प्रकृति, प्रेम, सौंदर्य और सामाजिक चेतनाका समन्वय मिलता है। उनकी कुछ प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं-

- हिमतरंगिणी (1949) इस संग्रह में उनकी कविताएँ सौंदर्य और रहस्यवाद के गहरे रंग प्रस्तुत करती हैं।
- हिमकिरीटीनी (1943) इसमें राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता संग्राम की भावना प्रकट होती है।
- युगचारण (1956) यह संग्रह तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों को व्यक्त करता है।
- समर्पण (1956) इसमें त्याग, बलिदान और राष्ट्र प्रेम की भावना को प्रधानता मिली है।
- पुष्प की अभिलाषा-उनकी सबसे प्रसिद्ध कविता, जिसमें मातृभूमि के लिए बलिदान देने की प्रेरणा है।

माखनलाल चतुर्वेदी का गद्य साहित्य भी अत्यंत प्रभावशाली रहा है। उन्होंने सामाजिक जागरूकता, राष्ट्रीय चेतना और मानवीय संवेदनाओं से संबंधित निबंध लिखे। प्रमुख गद्य रचनाएँ-

- अमीर इरादे गरीब इरादे-इसमें समाज के असमान वर्गों के विचारों और मानसिकता का विश्लेषण किया गया है।
- साहित्य देवता- यह निबंध संग्रह साहित्य के महत्व और उसकी सामाजिक भूमिका को दर्शाता है।

माखनलाल जी ने नाटकों के माध्यम से इतिहास और सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया। उनके प्रमुख नाटक-

- कृष्णार्जुन युद्ध- यह नाटक महाभारत के एक ऐतिहासिक प्रसंग पर आधारित है। इसमें संवादों की ओजस्विता और पात्रों की गहराई स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

माखनलाल चतुर्वेदी कहानियाँ भी लिखीं, जिनमें गाँव, सामाजिक जीवन, संघर्ष और संवेदनाएँ केंद्र में रही हैं। उनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'कल का अनुवाद'ग्रामीण जीवन और संघर्ष को दर्शाने वाला महत्वपूर्ण है।

माखनलाल चतुर्वेदी ने पत्रकारिता के माध्यम से भी राष्ट्र सेवा की। उन्होंने 'कर्मवीर' पत्रिका का संपादन किया और उसमें स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक मुद्दे और जन जागरूकता को बढ़ावा देने वाले लेख लिखे।

माखनलाल चतुर्वेदी का रचना संसार बहु आयामी और राष्ट्र प्रेरक है। उन्होंने कविता, निबंध, नाटक, कहानी और पत्रकारिता के माध्यम से भारतीय समाज, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम को सशक्त किया। उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रेरित करती हैं और राष्ट्रप्रेम की भावना को जाग्रत करती हैं।

बोध प्रश्न

- माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं का परिचय दीजिए।

3.3.3 माखनलाल चतुर्वेदी की साहित्यिक विशेषता

माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, निबंधकार, नाटककार और पत्रकार थे। उनका साहित्य स्वतंत्रता संग्राम की चेतना, सामाजिक जागरूकता, रहस्यवाद, सौंदर्यबोध और राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से देश भक्ति, मानवीय संवेदना और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को उजागर किया। उनकी रचनाएँ न केवल कविताओं तक सीमित थीं, बल्कि उन्होंने गद्य, नाटक और पत्रकारिता के माध्यम से भी साहित्य की विविध विधाओं में योगदान दिया।

माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्य स्वतंत्रता संग्राम की गूँज है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनता को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उनकी कविताएँ राष्ट्रप्रेम और बलिदान की भावना से ओत-प्रोत थीं।

उनकी प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' में यह भावना स्पष्ट रूप से प्रकट होती है—
"मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक!"

इस कविता में कविदेश के लिए बलिदान देने की भावना को पुष्प के माध्यम से व्यक्त करता है। यह स्वतंत्रता संग्राम के वीरों को समर्पित एकभावनात्मक और प्रेरणादायक रचना है।

बोध प्रश्न

- 'पुष्प की अभिलाषा कविता में राष्ट्रप्रेम को दर्शाइए।

उनकी अन्य रचनाएँ "कैदी और कोकिला", "सिपाही सिपाहिनी", "जलियांवाला बाग"भी इसी राष्ट्रवादी चेतना को व्यक्त करती हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी ने पत्रकारिता को सामाजिक परिवर्तन और जन जागरण का माध्यम बनाया। उन्होंने 'कर्मवीर' पत्रिका का संपादन किया, जिसमें उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक समस्याओं और जनहित से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता दी।

महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक और गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे नेताओं का प्रभाव उनकी लेखनी में देखा जा सकता है। उन्होंने अंग्रेजी शासन के अन्याय और अत्याचारों को उजागर किया और जनता को सत्य, न्याय और स्वतंत्रता की दिशा में प्रेरित किया।

उनकी कविताओं में रहस्यवाद का भी प्रभाव देखा जाता है। वे भक्ति और आध्यात्मिकता से गहरे रूप से प्रभावित थे।

उनकी कविता'बिन हरियाली के माली पर'रहस्यवाद की सुंदर अभिव्यक्ति है—

"बिन हरियाली के माली पर,

बिना राम फैली लाली पर,

बिना वृक्ष उगी डाली पर,

होली नहीं समाती तन में,

उड़ने दो घनश्याम गगन में!"

इस कविता में प्रकृति, जीवन और आध्यात्मिकता का गहन संबंध देखने को मिलता है।

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता सौंदर्य और मानवीय भावनाओं को बहुत ही कोमलता से व्यक्त करती है। उनकी कविताएँ प्रकृति, प्रेम और जीवन के सौंदर्य को दर्शाती हैं।

उन्होंने प्रेम को मूल्य और त्याग की भावना से जोड़ा। उदाहरण के लिए, पत्नी के स्वर्गवास के बाद उन्होंने लिखा- "पूजा के यह पुष्प गिर जाते हैं नीचे, यह आंसू का स्रोत आज किसके पद सींचे?"

उनकी कविताएँ अंतःकरण की गहराइयों से निकलती थीं और पाठकों को भावनाओं की ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सक्षम थीं।

उन्होंने नाटकों के माध्यम से भी साहित्य की सेवा की। उनका प्रसिद्ध नाटक 'कृष्णार्जुन युद्ध' ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित था। इसमें संवादों की ओजस्विता, कथानक की गहराई और पात्रों के मनोवैज्ञानिक चित्रण को प्रमुखता दी गई थी।यह नाटक संस्कृति, वीरता और आत्मज्ञान को जोड़ने वाली उत्कृष्ट रचना थी।

माखनलाल चतुर्वेदी ने निबंधों के माध्यम से समाज में व्यक्तिगत और सामाजिक सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया। उनकी प्रसिद्ध निबंध पुस्तक 'अमीर इरादे गरीब इरादे' में समाज की वास्तविकता को अत्यंत गहराई से व्यक्त किया गया है। उनकी शैली प्रभावशाली, विचारोत्तेजक और प्रेरणादायक थी।

माखनलाल चतुर्वेदी का प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'कल का अनुवाद' गाँव के जीवन और समाज की असमानताओं को चित्रित करने वाली उत्कृष्ट रचना है। इस संग्रह की कहानियाँ संघर्ष, संवेदनाएँ और सामाजिक चेतना से भरी हुई थीं।

माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्य देश प्रेम, सामाजिक जागरूकता, सौंदर्यबोध, रहस्यवाद और संघर्षको दर्शाने वाला है। उन्होंने हिन्दी साहित्य को स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक सुधार और मानवीय संवेदनाओं से भर दिया।

चतुर्वेदी जी की रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रेरित करती हैं और राष्ट्रप्रेम की भावना को जाग्रत करती हैं। वे न केवल एक महान साहित्यकार थे, बल्कि हिन्दी साहित्य को नई दिशा देने वाले विचारक भी थे।

बोध प्रश्न

- माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्य में सामाजिक जागरूकता को रेखांकित कीजिए।

3.4 पाठ-सार

माखनलाल चतुर्वेदी भारतीय साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों में से एक थे, जिन्हें 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म 4 अप्रैल 1889 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई गाँव में हुआ और 30 जनवरी 1968 को उनका निधन हुआ। वे न केवल एक उत्कृष्ट कवि थे, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में भी उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से योगदान दिया।

उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ 'हिमतरंगिणी', 'युगचारण', 'समर्पण', 'मरण ज्वार' आदि हैं। विशेष रूप से उनकी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' अत्यंत प्रसिद्ध है, जिसमें उन्होंने देशभक्ति और बलिदान की भावना को मार्मिक रूप से व्यक्त किया है—

'मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ में देना तुम फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,

जिस पथ जाएँ वीर अनेक।'इसके अतिरिक्त, उनकी अन्य प्रसिद्ध कविताएँ हैं:

दीप से दीप जले-जिसमें प्रकाश और श्रम की महत्ता को दर्शाया गया है।

कैदी और कोकिला-स्वतंत्रता संग्राम की भावना को व्यक्त करने वाली कविता।

झूला झूलैरी-प्रकृति और जीवन के सौंदर्य को दर्शाने वाली रचना।

गंगा की विदाई-जिसमें गंगा के प्रवाह और उसके सांस्कृतिक महत्व को दर्शाया गया है।

उनकी भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और खड़ीबोलीहिन्दी थी। उनकी शैली ओजस्वी, भावनात्मक और प्रेरणादायक थी, जिसमें देशभक्ति और मानवीय संवेदनाओं का गहन प्रभाव था।

माखनलाल चतुर्वेदी को 1955 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1963 में पद्मभूषण, और 1943 में देव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके साहित्य ने हिन्दी भाषा को समृद्ध किया और भारतीय राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत किया। आज भी उनकी कविताएँ और लेखन पाठकों को प्रेरित करते हैं और उनकी अमूल्य साहित्यिक विरासत को जीवंत बनाए रखते हैं।

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस पाठ के अध्ययन से कुछ महत्वपूर्ण बिंदु निष्कर्ष के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

1. माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाएँ स्वतंत्रता संग्राम की भावना से ओत-प्रोतहैं।
2. माखनलाल चतुर्वेदी ने हिन्दी साहित्य को राष्ट्रीय चेतना, सौंदर्यबोध, रहस्यवाद और समाज सुधार की दिशा में अग्रसर किया।
3. माखनलाल चतुर्वेदी ने हिन्दी साहित्य को केवल मनोरंजन तक सीमित न रखकर समाज परिवर्तन का साधन बनाया।
4. 'कर्मवीर 'पत्रिका का संपादन किया, जिससे समाज में न्याय, स्वतंत्रता और राष्ट्रीय चेतना का प्रचार-प्रसार हुआ।
5. साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले।
6. भाषा ओजस्वी, भावनात्मक और प्रवाहमयी थी।

3.6 शब्द सम्पदा

1. समर्पण - अर्पित करना, सौंपना
2. प्रवाह – बहाव, धारा
3. वेदना – कष्ट, पीड़ा
4. मानवीयता – इंसानियत
5. समन्वय – तालमेल

6. निष्ठवान – किसी के लिये ईमानदार होना
7. प्रेरणा – नसीहत
8. सक्रिय – काम करने वाला
9. अग्रणी - आगे चलने वाला, अगुआ
10. चेतना – जागरूक होने की स्थिति
11. क्षति – नुकसान
12. सौंदर्यबोध– आँख को भाने वाला
बहुआयामी – बहुत सारे पहलुओं या आयामों वाला

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

3.7.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

1. माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्यिक जीवन की प्रारंभिक दिशा किस पेशे से शुरू हुई थी?

A. पूर्णकालिक राजनेता B. सरकारी लिपिक

C. पूर्णकालिक पत्रकार **D. प्राइमरी स्कूल शिक्षक**

2. माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'माई छोड़ो नहीं मुझे' उनके जीवन के किस अनुभव को प्रतिबिंबित करती है?

A. स्वतंत्रता का उल्लास **B. पत्नी और बेटी के निधन का शोक**

C. बचपन की स्मृतियाँ D. जेल यात्रा का कष्ट

3. माखनलाल चतुर्वेदी ने किस प्रसिद्ध पत्रिका का संपादन करके राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया?

A. सरस्वती B. हंस C. मतवाला **D. कर्मवीर**

4. उनकी काव्य रचना 'हिमतरंगिणी' को किस विशेष सम्मान से नवाजा गया था?

A. देव पुरस्कार B. पद्म भूषण C. ज्ञानपीठ पुरस्कार **D. साहित्य अकादमी पुरस्कार**

5. कविता 'पुष्प की अभिलाषा' में पुष्प वनमाली से क्या प्रार्थना करता है?

A. उसे उस पथ पर फेंक दिया जाए जहाँ से वीर शहीद गुजरते हैं

B. उसे सम्राटों के शव पर डाला जाए

C. उसे प्रेमी की माला में गूँथा जाए

D. उसे देवों के सिर पर चढ़ाया जाए

6. माखनलाल चतुर्वेदी की गद्य रचना 'अमीर इरादे गरीब इरादे' का मुख्य विषय क्या है?

A. पत्रकारिता के सिद्धांत

B. समाज के विभिन्न वर्गों की मानसिकता का विश्लेषण

C. ऐतिहासिक युद्धों का वर्णन

D. प्रकृति का चित्रण

7. नाटक 'कृष्णार्जुन युद्ध' माखनलाल चतुर्वेदी की किस लेखन विशेषता को उजागर करता है?

A. ओजस्वी संवाद और पात्रों की मनोवैज्ञानिक गहराई

B. रहस्यवादी प्रेम की कविताएँ

C. ग्रामीण जीवन का हास्य

D. केवल अंग्रेजी शासन का विरोध

8. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में 'रहस्यवाद' की झलक किस कविता में विशेष रूप से देखी जा सकती है?

A. पुष्प की अभिलाषा **B. बिन हरियाली के माली पर**

C. कैदी और कोकिला D. झूला झूलैरी

9. माखनलाल चतुर्वेदी को 'एक भारतीय आत्मा' क्यों कहा जाता है?

A. क्योंकि वे विदेश कभी नहीं गए

B. क्योंकि उन्होंने संस्कृत में कविताएँ लिखीं

C. उनके साहित्य में समाहित गहरी राष्ट्रभक्ति और भारतीय सांस्कृतिक चेतना के कारण

D. क्योंकि उन्होंने केवल धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद किया था

10. माखनलाल चतुर्वेदी की भाषा शैली के बारे में क्या सत्य है?

A. उनकी भाषा में विदेशी शब्दों की भरमार थी

B. उनकी भाषा अत्यंत जटिल और दुर्बोध थी

C. उनकी भाषा सरल, ओजस्वी और खड़ीबोली हिन्दी थी

D. उन्होंने केवल ब्रजभाषा का ही प्रयोग किया

खण्ड (ब)

3.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय बताइए।
2. माखनलाल चतुर्वेदी के कृतित्व का परिचय दीजिए।
3. माखनलाल चतुर्वेदी की प्रमुख काव्य रचनाओं के नाम लिखिए ।
4.'पुष्प की अभिलाषा'कविता का सारांश प्रस्तुत कीजिए।
5. माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्य में राष्ट्रीयता का क्या महत्व है ?

खण्ड (स)

3.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. माखनलाल चतुर्वेदी के शिक्षण कार्य और पत्रकारिता पर प्रकाश डालिए।
2. माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्यिक योगदान और राष्ट्रभक्ति की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. माखनलाल चतुर्वेदीकी कविताओं में रहस्यवाद और सौंदर्यबोध को कैसे देखा जा सकता है?
4. स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालिए
5.माखनलाल चतुर्वेदी की नाट्य और गद्य रचनाओं का परिचय दीजिए।

3.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : विश्वनाथ त्रिपाठी
2. हिन्दवी : रेखता (ई-बुक)
3. माखनलाल चतुर्वेदी का रचना संसार: डॉ. बद्रीप्रसाद विरमाल

इकाई: 4 पुष्प की अभिलाषा, गगन पर दो सितारे: एक तुम हो: व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 मूल पाठ: पुष्प की अभिलाषा, गगन पर दो सितारे: एक तुम हो : व्याख्या

4.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

4.3.2 अध्येय कविता

4.3.3 विस्तृत व्याख्या

4.4 पाठसार

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

4. 6 शब्द सम्पदा

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

माखनलाल चतुर्वेदी भारतीय साहित्य के महान कवि थे, जिनकी रचनाएँ देशभक्ति, प्रेम और त्याग की भावना से ओत-प्रोत हैं। उनकी कविताएँ न केवल भावनात्मक रूप से गहरी हैं, बल्कि उनमें भारतीय संस्कृति और राष्ट्रप्रेम की अद्भुत झलक मिलती है।

"पुष्प की अभिलाषा" एक ऐसी कविता है, जिसमें कवि ने पुष्प के माध्यम से त्याग और बलिदान की भावना को व्यक्त किया है। वह सांसारिक ऐश्वर्य को अस्वीकार कर मातृभूमि की सेवा को सर्वोच्च स्थान देते हैं। यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के समय लिखी गई थी और इसमें राष्ट्रभक्ति की भावना अत्यंत मार्मिक रूप से प्रस्तुत की गई है।"गगन पर दो सितारे: एक तुम हो"कविता में कवि ने प्रेम और आदर्शवाद को दर्शाया है। इस कविता में वह अपने प्रिय को प्रकृति के विभिन्न तत्वों से जोड़ते हुए उसकी महत्ता को उजागर करते हैं। यह कविता भावनात्मक गहराई और सौंदर्य से भरपूर है, जिसमें कवि ने प्रेम को एक दिव्य अनुभूति के रूप में प्रस्तुत किया है।

दोनों कविताएँ अपने-अपने संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं—एक राष्ट्रभक्ति और त्याग की भावना को दर्शाती है, तो दूसरी प्रेम और आदर्शवाद की गहराई को व्यक्त करती है। इन कविताओं

में शब्दों का चयन, अलंकारों का प्रयोग और भावनात्मकता का स्तर अत्यंत उच्च कोटि का है, जो पाठकों को गहराई से प्रभावित करता है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत हम **"पुष्प की अभिलाषा"** और **"गगन पर दो सितारे: एक तुम हो"** कविताएँ अपने भावार्थ में भिन्न हैं, लेकिन दोनों में गहरी संवेदनशीलता और प्रेरणा निहित है। इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हो सकेगी-

- माखनलाल चतुर्वेदी की दोनों कविताएँ त्याग और प्रेम के आदर्श समझेंगे।
- माखनलाल चतुर्वेदी की "पुष्प की अभिलाषा" कविताके माध्यम से मातृभूमि के लिए त्याग और बलिदान की भावना से परिचित होंगे।
- इस कविता में सांसारिक ऐश्वर्य और सौंदर्य को अस्वीकार एवं राष्ट्र के लिए बलिदान से अवगत होंगे।
- पुष्प और सितारे जैसे प्राकृतिक प्रतीकों के संदेशों को समझ सकेंगे।
- दोनों कविताओं के भावनात्मक स्तर की संवेदनशीलता को समझ सकेंगे
- दोनों कविताओं में भावनात्मकता के साथ-साथ भाषा और शिल्प उत्कृष्ट सौंदर्य सेपरिचित हो सकेंगे।

4.3.मूल पाठ: पुष्प की अभिलाषा, गगन पर दो सितारे : एक तुम हो : व्याख्या

4.3.1 निर्धारित कविताओं का सामान्य परिचय

माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में राष्ट्र प्रेम के लिए समर्पित और प्रेम की कोमल भावना को दर्शाया गया है, जहाँ कवि प्रियतम को स्वर्गीय प्रकाश और अनंत सुंदरता से जोड़ते हैं।पुष्प की अभिलाषा कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लिखी गई थी, जब भारत विदेशी शासन से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रहा था। दोनों कविताओं की भाषा सरल लेकिन प्रभावशाली है, इनकी शैली प्रवाहमयी है और इनका भावनात्मक स्तर अत्यंत गहन। दोनों ही कविताएँ पाठकों के मन को छूती हैं और विचारों में नवीन ऊर्जा का संचार करती हैं।

इन रचनाओं में न केवल काव्य सौंदर्य की झलक है, बल्कि मानव जीवन के आदर्श, प्रेम, और त्याग की भी अभिव्यक्ति है। यही कारण है कि ये कविताएँ कालजयी हैं और हिंदी साहित्य में अमिट छाप छोड़ चुकी हैं।

4.3.2 अध्येय कविता

माखनलाल चतुर्वेदी की कविताएँ

1. पुष्पकी अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध, प्यारी को ललचाऊँ।।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर परचढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।।
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश- चढ़ाने, जिस पथ पर जावें वीर अनेक!

2. गगन में दो सितारे: एक तुम हो

गगन पर दो सितारे: एक तुम हो,
धरा पर दो चरण हैं: एक तुम हो,
'त्रिवेणी' दो नदी हैं! एक तुम हो,
हिमालय दो शिखर है: एक तुम हो,
रहे साक्षी लहरता सिंधु मेरा,
कि भारत हो धरा का बिंदु मेरा।

कला के जोड़-सी जग-गुत्थियाँ ये,
हृदय के होड़-सी दृढ वृत्तियाँ ये,
तिरंगे की तरंगों पर चढ़ाते,
कि शत-शत ज्वार तेरे पास आते।

तुझे सौगंध है घनश्याम की आ,
तुझे सौगंध भारत-धाम की आ,
तुझे सौगंध सेवा-ग्राम की आ,
कि आ, आकर उजड़तों को बचा, आ।

तुम्हारी यातनाएँ और अणिमा,
तुम्हारी कल्पनाएँ और लघिमा,
तुम्हारी गगन-भेदी गूँज, गरिमा,
तुम्हारे बोल ! भू की दिव्य महिमा

तुम्हारी जीभ के पैंरो महावर,
तुम्हारी अस्ति पर दो युग निछावर।

रहे मन-भेद तेरा और मेरा, अमर हो देश का कल का सबेरा,
कि वह कश्मीर, वह नेपाल; गोवा; कि साक्षी वह जवाहर, यह विनोबा,
प्रलय की आह युग है, वाह तुम हो,
जरा-से किंतु लापरवाह तुम हो।

निर्देश : प्रस्तुत कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
प्रस्तुत कविता का मौन वाचन कीजिए।

4.3.3 विस्तृत व्याख्या

[1]

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंधप्यारी को ललचाऊँ।।

संदर्भ- प्रस्तुत कविता माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता से उद्धरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के 'युगचरण' नामक काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग-इस छंद में एक पुष्प के माध्यम से सांसारिक सुख और ऐश्वर्य को अस्वीकार कर मातृभूमि की सेवा को सर्वोच्च स्थान का वर्णन किया गया है।
व्याख्या-यहाँ कवि कहते हैं कि उन्हें संसारिक प्रेम और सौंदर्य की वस्तुओं में शामिल होने की कोई इच्छा नहीं है। वे नहीं चाहते कि उन्हें किसी सुंदरी के आभूषणों में सजाया जाए या प्रेमी की माला का अंग बनाया जाए।

1. काव्यगत सौंदर्य- सांसारिक सुख और ऐश्वर्य को नकार कर मातृभूमि की सेवा में सर्वोच्च स्थान दिया गया है।
2. भाषा- सरल भाषा
3. अलंकार- अनुप्रास तथा रूपक अलंकार
4. रस- वीर रस

बोध प्रश्न

- फूल की क्या अभिलाषा है?
- सुरबाला कौन होती है और उसके गहने कैसे होते हैं?

[2]

चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।।

सन्दर्भ- उपर्युक्त पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता से उद्धरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के 'युगचारण' नामक काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग- यह अंश त्याग, देशभक्ति और सेवा की भावना को उजागर करता है।

व्याख्या- कवि पुष्प के माध्यम से यह कहते हैं कि उन्हें राजाओं या सम्राटों के मृत शरीर पर अर्पित होने की कोई इच्छा नहीं है। वे ऐसी प्रतिष्ठा नहीं चाहते, जो मृत्यु के बाद की शोभा मात्र हो।कवि देवताओं के मुकुट का हिस्सा बनने की भी कामना नहीं रखते। वे यह नहीं चाहते कि भाग्य का अहंकार उन्हें प्रभावित करे या वे किसी विशेष स्थान पर पहुँचकर गर्वित हों।

इस अंश में कवि का मूल संदेश यही है कि सच्ची महानता और सार्थकता मातृभूमि की सेवा में है। ऐश्वर्य, वैभव और देवत्व से अधिक महत्वपूर्ण वह त्याग है, जो देश के प्रति समर्पित हो।

1. काव्य सौन्दौर्य-देशके प्रति समर्पण को प्रतिपादित किया गया है।
2. भाषा- सरल और प्रभावशाली
3. अलंकार- अनुप्रास, रूपक और प्रतीकात्मकता का सुंदर प्रयोग
4. रस- वीर रस

बोध प्रश्न

- पुष्प सम्राटों पर क्यों न्योछावर नही होना चाहता है?
- पुष्प अपने भाग्य को किस प्रकार से देखना चाहता है?

[3]

मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।

मातृ-भूमि पर शीश- चढ़ाने, जिस पथ पर जावें वीर अनेक!

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के 'युगचरण' नामक काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग-इस पंक्तियों में राष्ट्र के प्रति बलिदान का वर्णन किया है।

व्याख्या-प्रस्तुत पंक्तियों में कवि वनमाली से आग्रह करते हैं कि यदि उन्हें तोड़ना ही है, तो उस मार्ग पर बिखेर दें जहाँ वीर देश के लिए बलिदान देते हैं। उन वीरों के चरणों में बिखर जाए, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। यही सच्चा सम्मान है, और यही वास्तविक सेवा।

1. काव्य सौन्दर्य- राष्ट्रभूमि के लिए बलिदान वीरों का वर्णन।
2. भाषा – सरल और प्रभावशाली

3. अलंकार – अनुप्रास, रूपक और प्रतीकात्मकता

4. रस – वीर रस

बोध प्रश्न

- कवि वनमाली से क्या आग्रह करता है?
- पुष्पकिसका प्रतिक है स्पष्ट कीजिये?

[4]

गगन पर दो सितारे: एक तुम हो,
धरा पर दो चरण हैं: एक तुम हो,
'त्रिवेणी' दो नदी हैं! एक तुम हो,
हिमालय दो शिखर है: एक तुम हो,
रहे साक्षी लहरता सिंधु मेरा,
कि भारत हो धरा का बिंदु मेरा।

संदर्भ- उपर्युक्त पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'एकतुम हो' शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के 'समर्पण' काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग-माखन लाल चतुर्वेदी इन पंक्तियों में भारतभूमि के गौरव का वर्णन करते हैं।

व्याख्या-प्रस्तुत पंक्तियं एक अत्यंत भावनात्मक और श्रद्धाभाव से परिपूर्ण है, जिसमें कवि 'तुम' को समस्त सृष्टि की श्रेष्ठता और पवित्रता का प्रतीक मानता है। वह कहता है कि यदि आकाश में केवल दो सितारे रह जाएँ, तो उनमें से एक 'तुम' हो; यदि धरती पर दो ही चरण हों, तो एक 'तुम्हारा' हो। यह तुलना यह दर्शाती है कि 'तुम' का अस्तित्व प्रकृति के हर ऊँचे, उज्ज्वल और पवित्र रूप में समाहित है।

कवि 'तुम' को त्रिवेणी जैसी पवित्र नदी मानता है, जो जीवन की गहराइयों को शुद्ध करती है। वह कहता है कि हिमालय के दो महान शिखरों में भी एक तुम हो, जिससे यह स्पष्ट होता है कि तुम न केवल ऊँचे हो, बल्कि स्थायी और गौरवशाली भी हो। यह श्रद्धा का चरम रूप है, जिसमें प्रिय का रूप प्रकृति की हर महानता में समाया हुआ प्रतीत होता है। इसके बाद कवि समुद्र को साक्षी बनाकर यह घोषणा करता है कि उसकी भावना में कोई कृत्रिमता नहीं है। वह सच्चे मन से

स्वीकार करता है कि उसकी धरती का केन्द्र बिंदु उसकी आस्था और उसका गौरव 'भारत'वही है जहाँ 'तुम' हो। इस पंक्ति में 'तुम' को भारत भूमि के गौरव से जोड़कर दिखाया गया है, जिससे यह भाव प्रकट होता है कि 'तुम' केवल एक व्यक्ति नहीं हो, बल्कि एक विचार, एक संस्कृति, एक राष्ट्र चेतना का रूप हो।

1. काव्य सौन्दर्य-राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत ही नहीं है बल्कि उसमें भारतीय संस्कृति की गहराई और दिव्यता भी परिलक्षित होती है।
2. भाषा- भावपूर्ण, संवादी और सरल
3. रस- शृंगार, करुण और शांत
4. अलंकार-उपमा,रूपकतथा अनुप्रास

बोध प्रश्न

- 'एकतुम हो' कविता के शीर्षक को समझाइये?
- कविताके माध्यम से भारतीय संस्कृति का वर्णन कीजिये?

[5]

कला के जोड़-सी जग-गुत्थियाँ ये,
हृदय के होड़-सी दृढ वृत्तियाँ ये,
तिरंगे की तरंगों पर चढ़ाते,
कि शत-शत ज्वार तेरे पास आते।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'एकतुम हो' शीर्षक कविता से उद्धरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के 'समर्पण' काव्य-संग्रह में संगृहीत है।

प्रसंग- मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक गहराई की ओर संकेत का वर्णन।

व्याख्या -कवि कहता है कि यह संसार अनेक गुत्थियों से भरा हुआ है- जैसे कोई कलात्मक जोड़ हो, जिनमें जीवन की जटिलताएँ छिपी होती हैं। यह गुत्थियाँ केवल बाह्य नहीं, बल्कि मन की गहराइयों से जुड़ी होती हैं, और व्यक्ति के भीतर दृढ़ भावनाओं की होड़ भी उतनी ही उलझी हुई होती है।

'हृदय के होड़-सी दृढ़ वृत्तियाँ ये'

यह पंक्ति दर्शाती है कि मनुष्य के भीतर जो संकल्प, इच्छाएँ और भावनाएँ हैं, वे बहुत ही मजबूत होती हैं, जैसे जीवन की किसी दौड़ में जीतने की तीव्र लालसा। यह मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक गहराई की ओर संकेत करती है। इन जटिल भावनाओं और संकल्पों को वह तिरंगे की तरंगों पर चढ़ा देता है। यानी अपनी सारी भावनाएँ राष्ट्र को समर्पित करता है। तिरंगा यहाँ केवल ध्वज नहीं, बल्कि राष्ट्र, आदर्श और आत्मिक ऊँचाईका प्रतीक है।

'कि शत-शत ज्वार तेरे पास आते'

यहाँ इस पंक्ति में 'तेरे पास' कहकर संभवतः राष्ट्र, मातृभूमि या किसी आदर्श प्रिय को संबोधित किया गया है। यह स्पष्ट है कि कवि की संपूर्ण भावना बार-बार लहरों की तरह उसी पूज्य सत्ता के पास लौटती है। ये 'ज्वार' उसकी तीव्र भावनाएँ हैं।

1. काव्य सौन्दर्य- जीवन की किसी दौड़ में जीतने की तीव्र लालसा।
.2भाषा -भावपूर्ण, संवादी और सरल
3. रस- शृंगार, करुण और शांत
4. अलंकार-उपमा, रूपक तथा अनुप्रास

बोध प्रश्न

- एक तुम हो कविता किस आदर्श को संबोधित करती है?
- चतुर्वेदीजी राष्ट्रभूमिको क्यों बचाना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

[6]

तुझे सौगंध है घनश्याम की आ,
तुझे सौगंध भारत-धाम की आ,
तुझे सौगंध सेवा-ग्राम की आ,
कि आ, आकर उजड़तों को बचा, आ।

सन्दर्भ- उपर्युक्त पंक्तियां माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'एकतुम हो' शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के 'समर्पण' काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग- राष्ट्र की आत्मा और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीक का वर्णन।

व्याख्या- प्रस्तुत कविता की पंक्ति से कवि एक मार्मिक और गहन भावुक स्वर में किसी महान आत्मा या प्रेरक शक्ति से बारंबार लौट आने की प्रार्थना करता है। वह कहता है-**"तुझे सौगंध है घनश्याम की आ"**, अर्थात श्रीकृष्ण की शपथ देकर वह विनती करता है कि तू लौट आ। 'घनश्याम' यहाँ धर्म, न्याय, और प्रेम के आदर्श रूप में प्रयोग किया गया है। मातृभूमि की पवित्रता की कसम खाकर, भारत की संस्कृति और गौरव की याद दिलाकर, वह उस शक्ति से कहता है कि वह लौट आए। 'भारत-धाम' केवल देश नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीकहै।

कवि शायद गांधीजी के "सेवा-ग्राम" की ओर संकेत करता है, जो सेवा, त्याग और ग्राम्य जीवन के आदर्शों का प्रतीक था। यह पंक्ति आत्म-समर्पण और विनम्रता का भाव लिए हुए है। वह विनती करता है कि तू आ और जो टूट रहे हैं, उजड़ रहे हैं, उन्हें बचा ले। यहसामाजिक, नैतिक या राष्ट्रीय संकटकी ओर संकेत करता है, जहाँ पुनः एक मार्गदर्शक शक्ति की आवश्यकता है।

1. काव्य सौंदर्य- प्रस्तुत पद्य में सेवा, त्याग और ग्राम्य जीवन के आदर्शों का प्रतीक बताया गया है।
2. भाषा- भावपूर्ण, संवादी और सरल
3. रस- शृंगार, करुण और शांत
4. अलंकार-उपमा, रूपक तथा अनुप्रास

बोध प्रश्न

- 'तुझे सौगंध है घनश्याम की आ' पंक्ति की विस्तृत व्याख्या कीजिये।
- 'सेवा ग्राम'किसकी ओर संकेत करता है समझिए?

[7]

तुम्हारी यातनाएँ और अणिमा,
तुम्हारी कल्पनाएँ और लघिमा,
तुम्हारी गगन-भेदी गूँज, गरिमा,
तुम्हारे बोल ! भू की दिव्य महिमा
तुम्हारी जीभ के पैंरो महावर,
तुम्हारी अस्ति पर दो युग निछावर।

सन्दर्भ- उपर्युक्त पद्यांश माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'एक तुम हो' शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के 'समर्पण' काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग- तुम्हारी आत्मा की गंभीरता और ऊँचाई को दर्शाया गया है।

व्याख्या- प्रस्तुत छंद में कवि कहना चाहता है कि तुम्हारी यातनाएँ (कष्टों)में भी एक दिव्यता है, वह यातनाएँ जो तुमने अपने जीवन में भोगा है, वे साधारण नहीं, बल्कि वे पवित्रता और आत्मबल की परिचायक हैं। तुम्हारी विनम्रता, अत्यंत सूक्ष्म अस्तित्व भी उतनी ही महान है। महानता केवल बड़े कार्यों में नहीं, बल्कि विनम्रता और सहिष्णुता में भी निहित होती है।तुम्हारी कल्पनाएँ, जो नये विचारों की जननी है तथा सरलता और सादगी दोनों ही तुम्हारी आत्मा की गहराई को प्रकट करते हैं। तुम आकाश को भेद देने वाली जो गूँज छोड़ते हो ,उसमें कोई कठोरता नहीं बल्कि गरिमा होती है, जो तुम्हारी आत्मा की गंभीरता और ऊँचाई को दर्शाती है।

कवि कहता है कि तुम्हारी बोल ही इस भू (धरती) की दिव्य महिमा है। तुम्हारी वाणी में वह शक्ति है जो धरती को गौरव देती है। तुम जब बोलते हो तो वह मात्र ध्वनि नहीं होती, बल्कि संस्कृति, सत्य और आत्मा की गूँज होती है। तुम्हारी जीभ के पैरों में जो महावर है। (यहाँ 'महावर' स्त्रियों के पैरों में लगाया जाने वाला सजावटी लाल रंग होता है) और फिर कवि भाव विह्वल होकर कहता है कि तुम्हारे अस्तित्व (अस्ति)पर दो-दो युग न्योछावर हैं, अर्थात तुम्हारा होना ही इतना महान है कि पूरा इतिहास तुम्हें न्योछावर हो जाए।

1. काव्य सौंदर्य- भू(धरती)की दिव्य महिमा का वर्णन किया गया है।
2. भाषा- भावपूर्ण, संवादी और सरल
3. रस- शृंगार, करुण और शांत
4. अलंकार-उपमा, रूपकतथा अनुप्रास

बोध प्रश्न

- 'तुम्हारी गगन-भेदी गूँज, गरिमा' पंक्ति से क्या तात्पर्य है?
- कविता में प्रस्तुत अलंकार और रस कोउदहारण सहित लिखिए?

[8]

रहे मन-भेद तेरा और मेरा, अमर हो देश का कल का सबेरा,
कि वह कश्मीर, वह नेपाल; गोवा; कि साक्षी वह जवाहर, यह विनोबा,
प्रलय की आह युग है, वाह तुम हो,
जरा-से किंतु लापरवाह तुम हो।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'एकतुम हो' शीर्षक कविता से अवतरित है। यह कविता चतुर्वेदी जी के 'समर्पण' काव्य-संग्रह से संगृहीत है।

प्रसंग-भारत की विविधता और एकता प्रतिबिंबित किया गया है।

व्याख्या-कवि इन पंक्तियों के माध्यम से राष्ट्र की सामूहिक चेतना को संबोधित करते हुए कहता है कि चाहे हमारे बीच व्यक्तिगत मतभेद बने रहें परन्तु "तेरा और मेरा" जैसे छोटे अहं और विचारों के अंतर, देश का आने वाला कल और उसके भविष्य का सबेरा, अमर रहना चाहिए। मतलब कि व्यक्तिगत स्तर पर भले मतभेद हों, लेकिन राष्ट्रीय एकता और उज्ज्वल भविष्य सर्वोपरि हो।

यह देश केवल एक भूभाग नहीं, बल्कि इसमें कश्मीर, नेपाल, गोवा जैसे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हिस्से समाहित हैं, जिनमें भारत की विविधता और एकता प्रतिबिंबित होती है। साथ ही वह जवाहर (नेहरू)और विनोबा (विनोबा भावे) जैसे महान नेताओं का उल्लेख करता है, जो राष्ट्र निर्माण और सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक हैं। वे इस बात के साक्षी हैं कि भारत कितनी महानता और संभावनाओं से भरा है। वर्तमान समय संकटों, विघटन और विनाश की छाया में है। यह वाक्य सामाजिक, नैतिक और पर्यावरणीय संकटों की ओर संकेत करता है। इसके साथ ही कवि बड़ी मार्मिकता से कहता है कि-

"वाह तुम हो, जरा-से किंतु लापरवाह तुम हो"

यह पंक्ति व्यंग्य और पीड़ा का मिलाजुला रूप है। तुम में वह सामर्थ्य है जो वाह वाही पाने लायक है, तुम में वह शक्ति है जो देश को संभाल सकती है, लेकिन तुम्हारी थोड़ी-सी लापरवाही सब कुछ बिगाड़ सकती है। जागो, क्योंकि तुम्हारी छोटी-सी असावधानी बड़े संकट का कारण बन सकती है।

1. काव्य सौंदर्य- राष्ट्र निर्माण और सामाजिक परिवर्तन सम्बंधित विचारों को प्रकट किया गया हैं।
2. भाषा- भावपूर्ण, संवादी और सरल
3. रस- शृंगार, करुण और शांत
4. अलंकार-उपमा, रूपकतथा अनुप्रास

बोध प्रश्न

- प्रस्तुत कविता किस मतभेद का वर्णन करता है?
- उपर्यक्त पंक्ति में कौन सा अलंकार है बताइए?

4.4 पाठ-सार

आधुनिक हिन्दी कविता ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में महती भूमिका निभाई है। श्री माखनलाल चतुर्वेदी की कविताएँ का स्वर भी यही था। इनकी कविताएँ तत्कालीन समाज में आज़ादी को लेकर चेतना जागृत करती हैं। यही चेतना, **भव्यता, संवेदनशीलता और आदर्शवाद** का अनूठा मेल है, जिससे वे हिंदी साहित्य में अपनी **अमर पहचान** छोड़ गई हैं। **'पुष्प की अभिलाषा'** माखनलाल चतुर्वेदी की प्रसिद्ध कविता है, जो **त्याग और राष्ट्रभक्ति** की भावना को व्यक्त करती है। इस कविता में कवि पुष्प के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि सच्चा सौंदर्य और महानता सांसारिक ऐश्वर्य में नहीं, बल्कि **मातृभूमि की सेवा और बलिदान** में है। वह नहीं चाहते कि उन्हें सम्राटों, देवों या प्रेमियों के गहनों में सजाया जाए, बल्कि उनकी इच्छा है कि वे उस पथ पर बिखेर दिए जाएँ, जहाँ **देश के वीर मातृभूमि की रक्षा के लिए बलिदान देते हैं**। यह कविता **स्वतंत्रता संग्राम के बलिदान और राष्ट्र प्रेम** की भावना को उजागर करती है।

'गगन पर दो सितारे: एक तुम हो' प्रेम और आदर्शवाद से परिपूर्ण कविता है। इसमें कवि अपने प्रिय को **प्रकृति और राष्ट्र के महान प्रतीकों** से जोड़कर उनके सौंदर्य और दिव्यता को दर्शाते हैं। वे प्रिय को **गगन के सितारों, त्रिवेणी संगम, हिमालय, और सिंधु** के समान मानते हैं, जो उनकी **विशालता, स्थिरता, पवित्रता और गौरव** को दर्शाता है। इस कविता में प्रेम **केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि व्यापक और आध्यात्मिक रूप से भारत की पहचान**से जुड़ा हुआ है।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

1. राष्ट्र सेवा और बलिदान की प्रेरणा।
2. प्रेम की दिव्यता और व्यापकता।
3. आदर्शवाद का संदेश।
4. प्रकृति से गहरा संबंध।
5. साहित्यिक सौंदर्य और कलात्मकता।
6. मानवता और सेवा का संदेश।
7. आत्म-विकास और चरित्र निर्माण।
8. संवेदनशीलता और भावनात्मकता।
9. प्रेरणा स्रोत: वीरों तथा प्रेम और गरीमा।
10. हिंदी साहित्य में अमरता।

4.6 शब्द संपदा

1. सुरबाला – देवताओं की स्त्रियाँ, देवांगनाएँ
2. सम्राट – बादशाह, बड़ा राजा
3. शव – लाश
4. इठलाऊँ – घमंड करूँ
5. पथ – रास्ता, राह
6. शीश – सिर
7. वनमाली – वन (बगीचे) का माली
8. गगन- नभ, अम्बर, आकाश
9. यातनाएँ- कष्टदायी, दुःख देना
10. अस्ति- अस्तित्व, पहचान

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

4.7.1 सही विकल्प चुनिए-

1. माखनलाल चतुर्वेदी की प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' उनके किस काव्य-संग्रह से ली गई है?

A. साहित्य देवता **B. युगचरण** C. समर्पण D. हिमकिरीटिनी

2. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में पुष्प 'सुरबाला' के गहनों में गूँथा जाना क्यों नहीं चाहता?

A. वह सांसारिक सुखों और ऐश्वर्य के बजाय मातृभूमि की सेवा को महत्व देता है

B. सुरबाला के गहने उसे पसंद नहीं हैं

C. उसे सुंदरता से नफरत है

D. वह देवताओं के पास जाना चाहता है

3. कविता 'गगन पर दो सितारे: एक तुम हो' में कवि 'तुम' शब्द के माध्यम से किसे संबोधित कर रहा है?

A. सिर्फ एक काल्पनिक प्रेमिका को

B. आकाश के एक वास्तविक तारे को

C. सिर्फ हिमालय के शिखर को

D. एक ऐसी शक्ति जो राष्ट्र चेतना, संस्कृति और आदर्श का प्रतीक है

4. 'पुष्प की अभिलाषा' में 'वनमाली' से क्या प्रार्थना की गई है?

A. उसे उस पथ पर फेंकने की जहाँ से वीर सैनिक गुजरते हैं

B. उसे एक सुंदर माला में पिरोने की

C. उसे देवताओं के चरणों में चढ़ाने की

D. उसे सम्राटों के शवों पर डालने की

5. 'गगन पर दो सितारे' कविता में 'सेवा-ग्राम' शब्द किसकी ओर संकेत करता है?

A. विनोबा भावे B. भगत सिंह C. जवाहरलाल नेहरू **D. महात्मा गांधी**

6. चतुर्वेदी जी की कविताओं में 'वीर रस' का प्रयोग मुख्य रूप से किस भावना को जगाने के लिए हुआ है?

A. मातृभूमि के लिए त्याग और बलिदान की भावना B. शांति और वैराग्य

C. व्यक्तिगत दुश्मनी D. युद्ध की इच्छा

7. कविता 'गगन पर दो सितारे' के अंत में कवि ने किस बात पर चिंता या व्यंग्य व्यक्त किया है?

A. नेताओं की संख्या पर **B. आदर्शों के प्रति थोड़ी सी लापरवाही पर**

C. विदेशी हमलों पर D. देश की गरीबी पर

8. 'अस्ति' शब्द का क्या अर्थ है जो कविता में प्रयुक्त हुआ है?

A. अस्त होना **B. अस्तित्व या पहचान** C. सत्य D. हड्डी

9. कवि ने 'तिरंगे की तरंगों' पर अपनी भावनाओं को चढ़ाने की बात क्यों कही है?

A. झंडे को सजाने के लिए

B. हवा के बहाव को दिखाने के लिए

C. राजनीति में शामिल होने के लिए

D. अपनी भावनाओं को राष्ट्र के प्रति समर्पित करने के लिए

10. माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं की भाषा की मुख्य विशेषता क्या है?

A. केवल विदेशी शब्दों का प्रयोग **B. सरल, प्रवाहमयी और प्रभावशाली**

C. अत्यंत कठिन और दुरूह संस्कृत शब्दावलीD. बिना किसी अलंकार के साधारण गद्य जैसी

खंड (ब)

4.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1. माखनलालचतुर्वेदी की कविताओं वर्णित राष्ट्रप्रेम स्पष्ट कीजिये।
2. चतुर्वेदीजी कविताओं में संवेदनशीलता का वर्णन कीजिये।
3. आधुनिक हिंदी कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी के स्थान को बताइए।
4. 'पुष्पकी अभिलाषा'कविता का संक्षिप्त परिचय दीजिये।
5. माखनलालचतुर्वेदी की भाषा पर विचार कीजिये।

खंड (स)

4.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में सामाजिक तत्व को बताइए ।
2. चतुर्वेदीजी की रचनाओं में किस प्रकार की भाषा एवं रसों का प्रयोग हुआ है ?
3. माखनलाल चतुर्वेदी अपनी रचनाओं में किस प्रकार की चेतना जागृत करना चाहते थे ?
4. चतुर्वेदी जी की कविताओं में अलंकारों की विशेषता बताइए।
5. माखनलालचतुर्वेदी की कविताओं की विशेषता बताइए।

4.8 पठनीय पुस्तकें

1. गगनमें दो सितारे एक तुम हो, समर्पण संग्रह- माखनलाल चतुर्वेदी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्रशुक्ल
3. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास – डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
4. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
5. पुष्प की अभिलाषा, युग चारण संग्रह- माखनलाल चतुर्वेदी

इकाई 5 : रामधारी सिंह 'दिनकर' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 मूल पाठ : रामधारी सिंह 'दिनकर' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

5.3.1 दिनकर का व्यक्तित्व
5.3.2 दिनकर की काव्य यात्रा
5.3.3 दिनकर का काव्य दर्शन
5.3.4 दिनकर की काव्य-भाषा

5.4 पाठ सार

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

5.6 शब्द संपदा

5.7 परीक्षार्थ

5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप इस पाठ में रामधारी सिंह 'दिनकर' के बारे में अध्ययन करेंगे। हिंदी साहित्य में लौह पुरुष के नाम से विख्यात रामधारी सिंह 'दिनकर' युगद्रष्टा कवि हैं। उन्होंने अपने युगधर्म को समझकर राष्ट्र के अतीत, वर्तमान और भविष्य को समन्वित करने का प्रयास किया है। तो आइए, ऐसे महान साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करेंगे।

5.2 उद्देश्य

छात्रो - इस इकाई के अध्ययन के बाद आप !

- दिनकर के व्यक्तित्व के विविध आयामों को समझ सकेंगे।
- दिनकर की काव्य यात्रा के पड़ावों से परिचित हो सकेंगे।
- दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना को समझ सकेंगे।
- दिनकर की काव्य-भाषा की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- दिनकर की वैचारिकता से अवगत हो सकेंगे।

5.3 मूल पाठ : रामधारी सिंह 'दिनकर' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रिय छात्रो! आप इस इकाई में दिनकर के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित पहलुओं का अध्ययन करेंगे।

5.3.1 दिनकर का व्यक्तित्व

छात्रो! अब हम दिनकर के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को देखेंगे जो इस प्रकार हैं -

जन्म एवं परिवार

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार प्रांत के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में बाबू रवि सिंह और मनरूप देवी के घर मझले पुत्र के रूप में हुआ था। दिनकर का जन्म उस समय हुआ था जब देश अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त था। उनके पिता एक ठेठ किसान थे जिनके पास अपना कहने को केवल फूस की झोपड़ी थी। दिनकर केवल दो वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई। परिवार के मुखिया की मृत्यु हो जाने से पूरा परिवार बिखर गया था। ऐसे में उनकी माता मनरूप देवी ने अपनी कर्मशक्ति और इच्छाशक्ति के द्वारा न केवल अपने परिवार को आगे बढ़ाया बल्कि अपनी संतानों को शिक्षित बनाने का बीड़ा भी उठाया।

बोध प्रश्न

- रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म कब हुआ?
- दिनकर के परिवार के बारे में आप क्या जानते हैं?

शिक्षा और व्यक्तित्व

दिनकर को शिक्षित करने में उनकी माँ मनरूप देवी का बहुत बड़ा योगदान रहा। वे जानती थी कि परिस्थितियों से हार मानकर अपने आपको समय के आगे समर्पित कर देने से समस्याएँ समाप्त नहीं होतीं। शिक्षा एक ऐसा अस्त्र है जिसके द्वारा बहुत सारी समस्याओं का समाधान मिल जाता है। अगर समाधान न भी मिले, पर आत्मबल तो मिलता ही है। इसी विचार के साथ उन्होंने पाँच वर्ष की अवस्था से ही दिनकर को विद्यालय भेजना शुरू कर दिया। दिनकर ने भी माँ को निराश नहीं किया। वे प्रारंभ से ही एक कुशल छात्र थे। उनकी बुद्धि बड़ी तेज थी लेकिन घर की परिस्थितियाँ इतनी खराब थीं कि दीया जलाकर उन्हें अपनी पढ़ाई करनी पड़ती थी। इसके संबंध में उन्होंने स्वयं लिखा है, 'टिमटिम दीपक के प्रकाश में पढ़ते निज पोथी शिशुगण।' दिनकर ने माँ की सहायता के लिए गाय-भैंस चराना भी शुरू कर दिया था।

पाँचवीं कक्षा पास करने के बाद दिनकर का नाम बारो गाँव के नेशनल मिडिल स्कूल में लिखवा दिया गया, परंतु अभी वे सातवीं कक्षा में ही थे कि तो वह स्कूल बंद हो गया। तब उनका नाम बारो में ही सरकारी मिडिल स्कूल में लिखवा दिया गया। लेकिन इन सारी बातों के बावजूद उनकी मेधा-शक्ति का विकास बड़ी तेजी से हो रहा था। सातवीं क्लास में हिंदी में सर्वाधिक अंक लाने पर उन्हें एक बार 'रामचरितमानस' और एक बार 'सूरसागर' जैसे ग्रंथ पुरस्कार स्वरूप प्राप्त हुए। सातवीं कक्षा पास करने के बाद आठवीं कक्षा के लिए मोकामा घाट के जेम्स वाकर स्कूल में भर्ती हुए।

दिनकर जी के गाँव सिमरिया और मोकामा के बीच गंगा नदी बहती है। स्टीमर और नाव की व्यवस्था तो उस समय भी थी, लेकिन इन सबका खर्चा उठाने की शक्ति दिनकर के पास नहीं थी। घर से मात्र एक धोती-कुर्ता पहनकर वे नंगे पाँव पैदल मोकामा घाट पहुँचते और वहाँ से तैर कर गंगा नदी पार करके अपने स्कूल पहुँचते थे। "जिस प्रकार कंचन आग में तपकर कुंदन बनता है, उसी प्रकार दिनकर समय की कठोर अग्नि में तपकर श्रेष्ठतम मानव तथा महानतम रचनाकार बनें।" सन् 1928 में अर्थात 20 वर्ष की आयु में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। मैट्रिक की परीक्षा में उनको पूरे जनपद में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए। उनकी इस उपलब्धि के

कारण उन्हें बिहार सरकार के द्वारा 'भूदेव' पदक दिया गया।

मैट्रिक पास करने के बाद दिनकर को उच्च शिक्षा के लिए पटना जाना पड़ा। उन्होंने पटना कॉलेज में अपना नाम लिखवाया। वे हिंदी को अपना प्रमुख विषय बनाकर आगे की पढ़ाई करना चाहते थे, लेकिन पटना कॉलेज के प्रधान अध्यापक मि. हार्न ने उन्हें हिंदी विषय लेने की अनुमति नहीं दी। दिनकर ने इतिहास को प्रमुख विषय के रूप में लेकर बी.ए. आनर्स की परीक्षा पास की। इसी समय पारिवारिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए वे नौकरी की तलाश कर रहे थे और उन्होंने बिहार सरकार के मंत्री गणेश दत्त सिंह से सहायता भी माँगी लेकिन गणेश दत्त सिंह ने सहायता नहीं की, अपितु यह कह दिया - 'जाओ कहीं जाकर मास्टरी करो।' काफी परिश्रम के बाद उन्हें बरबिघा के एक नए उच्च विद्यालय में प्रधानाध्यापक का पद मिल। उन्होंने यह नौकरी एक साल ही किया क्योंकि सितंबर 1934 में उनकी नियुक्ति बिहार सरकार के राजस्व विभाग में सब-रजिस्ट्रार के पद पर हुई थी। इस नौकरी के मिलने पर उन्हें पारिवारिक रूप से तो निश्चिंतता हुई, परंतु यहीं से शुरू हुई उनकी औपनिवेशिक सरकार के नौकरी की अन्यतम समस्याएँ। उनका व्यक्तिगत जीवन संघर्षशील रहा।

दिनकर का व्यक्तित्व प्रभावशाली था। गोरा चिट्टा रंग, पाँच फुट ग्यारह इंच लंबाई, भारी भरकम शरीर, बड़ी-बड़ी आँखें जो किसी रचना के संबंध में चिंतन करते समय थोड़ी-सी सिकुड़कर क्लिष्ट-सी हो जाती थीं, परंतु बात करते समय अथवा कविता पाठ करते समय तेजोदीप्त हो उठतीं। दिनकर के व्यक्तित्व की एक और विशेषता यह भी थी कि वे हाजिरजवाबी थे। वे न तो किसी की अनुचित बात को सहन करते थे और न ही किसी की चाटुकारिता करना उन्हें पसंद था। इन्हीं विशेषताओं के कारण उन्हें कुछ लोग अहंकारी भी कहते थे। इस क्रांतिकारी कवि को दूसरों के कथन की अपेक्षा अपने स्वभाव पर ज्यादा विश्वास था। वे बहुत अच्छा काव्यपाठ भी करते थे। उनकी वाणी प्रभावोत्पादक थी।

भगवतीचरण वर्मा ने दिनकर के व्यक्तित्व के संबंध में लिखा है, "जैसे पंत को देखते ही कोमलता और संयमता का प्रभाव उत्पन्न हो जाता है, वैसे ही निराला और दिनकर के दर्शन मात्र से ही पौरुष और प्रभुत्व की याद आ जाती है। कलाकार की हैसियत से मैं दिनकर को अधिक स्पष्ट और ईमानदार मानता हूँ। दिनकर अपनी भावनाओं की सीमा छोड़ने को कहीं भी तैयार नहीं है। कहीं भी आरोपित विश्वासों का सहारा दिनकर ने नहीं लिया है।"

बोध प्रश्न

- दिनकर की शिक्षा किन परिस्थितियों में आगे बढ़ी?
- दिनकर के व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएँ लिखिए।
- 'भूदेव' पदक दिनकर को क्यों मिला?
- दिनकर के व्यक्तित्व के संबंध में भगवतीचरण वर्मा ने क्या लिखा है?

गृहस्थ जीवन

दिनकर के समय में विवाह बहुत जल्दी हो जाया करते थे। दिनकर जब 12-13 साल के थे तभी से उनके विवाह के लिए प्रस्ताव आने लगे थे। परिवारवालों ने रक्षा ठाकुर की कन्या श्यामवती के साथ उनका विवाह करवा दिया। प्रथानुसार गौना बाद में करवाया गया था। उनके

गृहस्थ जीवन की शुरूआत अच्छी थी। श्यामवती देवी पतिभक्त महिला थीं। उनकी चार संतानें हुईं। दो पुत्र रामसेवक सिंह तथा केदारनाथ सिंह तथा दो पुत्रियाँ विनीता देवी और विभा देवी। दिनकर का गृहस्थ जीवन सफल और सुखी था लेकिन पैसे के लिए होनेवाले संघर्ष ने उनके परिवार के प्रेम को नष्ट कर दिया था।

दिनकर ने 'उदयाचल' नामक प्रकाशन संस्था की स्थापना की थी। बड़े बेटे रामसेवक सिंह को उन्होंने इस संस्था को परिवार के साथ जोड़कर आगे ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी थी। लेकिन रामसेवक न तो प्रकाशन के कार्य को ठीक प्रकार से संभाल सके और न ही परिवार को जोड़कर रख सके। बाद में उन्हें कोई असाध्य रोग भी हो गया जिसके कारण उनकी मृत्यु हुई। जिस आयु में दिनकर को आराम करना चाहिए था उस आयु में विधवा पुत्रवधू और पाँच अनाथ पोते-पोतियों का बोझ उन पर आ गया। इस तरह फिर से उनका जीवन संघर्षशील बन गया।

दिनकर को सन् 1973 में हल्का पक्षाघात हुआ लेकिन उनकी कार्य करने की शैली में कोई परिवर्तन नहीं आया। एक दिन उन्हें चेन्नै जाना था। वहाँ से वे तिरुपति जाना चाहते थे। उनकी नातिन उषा ने उनसे तुतलाती जुबान में पूछा, 'आप तिरुपति क्यों जा रहे हैं नाना!' दिनकर ने हँसकर कहा, 'मौत माँगने जा रहा हूँ।' उन्होंने तिरुपति में बालाजी का दर्शन किया लेकिन वहाँ से वापस नहीं लौट सके। सन् 24 अप्रैल, 1974 में तिरुपति में दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हुई।

बोध प्रश्न

- दिनकर का जीवन किस प्रकार था?
- दिनकर ने किस प्रकाशन संस्था को स्थापित किया था?

पुरस्कार एवं सम्मान

1948 : 'कुरुक्षेत्र' के लिए काशी नागरी प्रचारिणी सभा, उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत।

1956 : 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार के द्वारा पुरस्कृत।

1959 : 'पद्मभूषण' से सम्मानित।

1962 : भागलपुर की विश्वविद्यालय द्वारा साहित्य के क्षेत्र में मानद डॉक्टर की उपाधि से सम्मानित।

: 'सरस्वती' पत्रिका की हीरक-जयंती के उपलक्ष्य में मानपत्र से राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त द्वारा सम्मानित।

1965 : गुरुकुल महाविद्यालय द्वारा 'विद्यावाचस्पति' उपाधि से सम्मानित।

1968 : राजस्थान विद्यापीठ द्वारा 'साहित्य चूड़ामणि' उपाधि से सम्मानित।

1973 : 'उर्वशी' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित।

5.3.2 दिनकर की काव्य यात्रा

छात्रो! दिनकर का बचपन संघर्षशील रहा। जीवन संघर्षों के साथ-साथ वे अपनी रचनात्मक यात्रा को आगे बढ़ा रहे थे। दिनकर ने मात्र 12 वर्ष की आयु में सन् 1920 में महात्मा गांधी का प्रथम दर्शन किया। गांधी जी की बातों ने दिनकर के बाल मन को बहुत प्रभावित किया

था। तभी से वे मन से राष्ट्रवादी बन गए थे। लगभग इसी वर्ष उन्होंने अपने गाँव सिमरिया में मनोरंजन पुस्तकालय की स्थापना भी की थी। वे एक हस्तलिखित समाचार पत्र का संपादन भी करते थे।

बोध प्रश्न

- गांधी जी से दिनकर किस प्रकार प्रभावित हुए?

दिनकर की पारिवारिक परिस्थितियाँ ऐसी नहीं थी कि वे राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से सत्याग्रही बनकर कूद पड़ते, लेकिन उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय क्रांति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। दिनकर की शिक्षा और काव्य लेखन दोनों साथ-साथ चल रहें थे। एक तरफ जहाँ वे अपने घर-परिवार के लिए शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन की राह तलाश कर रहे थे, वहीं दूसरी तरफ अपने काव्य के माध्यम से युवा मन के आक्रोश को भी अभिव्यक्ति दे रहे थे।

छात्रो! क्या आप जानते हैं कि रामधारी सिंह का नाम 'दिनकर' कैसे पड़ा? इसकी भी एक रोचक कहानी है। उन दिनों बेगूसराय से 'प्रकाश' नामक मासिक पत्रिका निकलती थी। रामधारी सिंह इस पत्रिका में नियमित लिखा करते थे। एक दिन उनके कुछ मित्रों ने उन से कहा कि रामधारी सिंह नाम कुछ बड़ा लगता है। अतः क्यों न कोई उपनाम रख लें। दिनकर को मित्रों की यह बात अच्छी लगी, परंतु क्या नाम रखें इस संबंध में वे कई दिनों तक विचार करते रहे। आखिरकार उनके मन में एक विचार कौंध गया। उनके पिता का नाम रवि सिंह था। रवि के पुत्र दिनकर, दिनकर प्रकाश का स्रोत भी है और उनका उद्देश्य अपने काव्य के माध्यम से प्रकाश फैलाना ही तो है, अतः क्यों न 'दिनकर' उपनाम का ही प्रयोग किया जाए। यह विचार जब उन्होंने अपने मित्रों के सामने रखा तो सभी को बहुत पसंद आया। इस तरह रामधारी सिंह, 'दिनकर' बन गए।

बोध प्रश्न

- 'दिनकर' उपनाम कैसे पड़ा?

छायावाद का कल्पना-लोक इस क्रांतिकारी कवि को बहुत समय तक अपने मोहपाश में बाँध नहीं पाया। वह ऐसा समय था जब ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध आक्रोश अत्यंत तीव्र होता जा रहा था। दिनकर इतिहास के विद्यार्थी होने के कारण देश-विदेश के इतिहास को पढ़ रहे थे। वे फ्रांस की राज्यक्रांति, अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम, मार्क्स और लेनिन के विचार आदि का अवलोकन कर रहे थे। परिणामस्वरूप उनके मन में अंतर्द्वंद्व पैदा होने लगा। उनके सामने एक ओर विश्व में हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध जनता का आक्रोश था तो दूसरी ओर गाँव का घोर अंधकार। यह सब देखकर दिनकर का कवि-मन आक्रोश से भरने लगा। इन परिस्थितियों के कारण ही उनका मन छायावादी कल्पना लोक से निकलकर वर्तमान के कठोर धरातल पर आ खड़ा हुआ।

बोध प्रश्न

- किन परिस्थितियों के कारण दिनकर का कवि-मन आक्रोश से भरने लगा?

1933 तक आते-आते दिनकर की काव्य प्रतिभा ने अपने लिए दिशा तलाश कर ली थी। छायावाद की कल्पना को त्यागकर उन्होंने अपने भैरव-हुंकार के लिए शंख उठा लिया था। दिनकर के युवा मन को भी गांधी जी का अहिंसा आंदोलन बहुत अच्छा नहीं लग रहा था। उन्होंने चंद्रशेखर

आजाद, भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों के विचारों का समर्थन किया। 'हिमालय' में उनके मन का यही आक्रोश दिखाई देता है- 'रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,/ जाने दो उनको स्वर्ग धीर,/ पर, फिर हमें गांडीव-गदा,/ लौटा दे अर्जुन-भीष्म वीर।' यहीं से उनके काव्य में उग्र राष्ट्रीय काव्यधारा बह चली जिसे क्रमशः 'हुंकार', 'कुरुक्षेत्र' और अंततः 'परशुराम की प्रतीक्षा' में देख सकते हैं।

दिनकर की इस उग्र विचारधारा की प्रतिक्रिया निश्चित रूप से सरकारी क्षेत्र में होने लगी थी। अंग्रेजी सरकार से दिनकर का पहला टकराव सन् 1934 में बिहार हिंदी सम्मेलन के छपरा अधिवेशन के समय हुआ। इस सम्मेलन में उन्होंने अध्यक्षता की थी। सरकार ने मुख्य रूप से उनसे दो सवालों के जवाब माँगे। पहला यह कि, 'कवि सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए आपने सरकार से अनुमति क्यों नहीं माँगी?' दूसरा यह कि, 'सभापति की हैसियत से कवियों को सरकार के विरुद्ध कविताएँ पढ़ने से क्यों नहीं रोका?' दिनकर ने सरकार के द्वारा पूछे गए सवालों का जवाब बड़े ही संयम के साथ दिया था। सरकार के पहले सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि, 'सांस्कृतिक सभाओं में जाने के लिए मैंने अनुमति माँगने की आवश्यकता नहीं समझी' और दूसरे सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा था, 'कवियों को यदि कविता पढ़ने से रोका जाता तो जनता उनकी ओर और भी आकृष्ट होती।' सौभाग्यवश बात वहीं समाप्त हो गई थी लेकिन सरकार और दिनकर के बीच वैचारिक संघर्ष समाप्त नहीं हुआ। वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। यह भी सच है कि नौकरी को लेकर शुरू से ही उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ा था। जीवन के उतार-चढ़ावों ने उनको संघर्षशील, निर्भीक, स्पष्टवादी, ओजस्वी स्वर के स्वामी और स्वाभिमानी बना दिया था।

बोध प्रश्न

- क्या दिनकर गांधी जी के अहिंसक विचार से सहमत थे?
- दिनकर के स्वभाव में किन-किन गुणों को पाया जाता है?

1935 से लेकर 1940 तक उनकी चार किताबें क्रमशः 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती' और 'द्वंद्वगीत' आ चुकी थीं। 'रेणुका' में तो दिनकर की निर्भीकता स्पष्ट रूप में सामने आई थी। सन् 1940 में ही 'जनता' के सहायक संपादक ने उनसे तार द्वारा एक कविता माँगी। उस समय गांधी जी इस उधेड़-बुन में फँसे थे कि आंदोलन शुरू किया जाए या नहीं। गांधी जी के द्वंद्व को लेकर दिनकर ने 'ओ दुविधाग्रस्त शार्दूल बोल' नामक कविता रच डाली। यह कविता पूर्णतया सरकार विरोधी थी। कॉलेज के दिनों में भी दिनकर अपना नाम बदलकर 'अमिताभ' नाम से कविताएँ लिखा करते थे सो उन्होंने इस कविता में भी 'अमिताभ' नाम का प्रयोग किया। उन्होंने लिखा-

'यह तो दिनकर की सृष्टि नहीं,
अमिताभ देव की दुष्ट कर्म।'

सरकार ने सेंसर करके यह कविता तो छप जाने दी, लेकिन कलेक्टर ने उन्हें बुलाकर चेतावनी दी। उन्हें नौकरी से न निकाला कर तबादला कर दिया। तबादला तो उनके लिए साधारण सी बात हो गई। बार-बार उन्हें सरकारी अधिकारियों को जवाब भी देना पड़ता था। उन्हीं दिनों को याद करके दिनकर ने स्वयं लिखा था कि, घबराहट में आकर उन्होंने नौकरी छोड़ने के लिए अवश्य सोचा था, लेकिन नहीं तीन कारणों से नहीं छोड़ पाए। पहली तो यह कि नौकरी छूट गई

तो परिवार खाएगा क्या? दूसरी यह कि हर तबादले के साथ उन्हें चार-छह दिन की छुट्टियाँ मिल जाती थीं, तो वे जयप्रकाश जी के सान्निध्य में बिताने पटना चले जाते थे और तीसरी बात यह कि जयप्रकाश जी बराबर शह देते रहते थे कि 'इस्तीफा देने के बजाय बरतरफ़ हो जाना ही श्रेष्ठ है।'

दिनकर जी को अंग्रेज सरकार ने तो आत्मसंघर्ष की तरफ धकेल दिया। उनका तबादला युद्ध-प्रचार विभाग में कर दिया। दिनकर का कवि-मन अपने इस दुर्भाग्य पर आँसू बहा रहा था। देश में उन्हीं की कविताएँ पढ़ते हुए नौजवान जिस अंग्रेजी राज्य के खिलाफ बगावत कर रहे थे वे स्वयं उसी अंग्रेजी राज की विशाल व्यवस्था के एक अवयव का पुर्जा बने हुए थे। उन्हें अपने चारों तरफ अव्यवस्था की एक धुंध-सी बिखरी नजर आ रही थी। 'आग की भीख' शीर्षक कविता में वे अपनी इसी अवस्था को दर्शाया है-

'धुंधली हुई दिशाएँ, छाने लगा कुहासा।
कुचली हुई शिखा से, आने लगा धुआँ सा।
प्यारे स्वदेश के हित अंगार माँगता हूँ।
चढ़ती जवानियों का शृंगार माँगता हूँ।'

बोध प्रश्न

- दिनकर अपनी नौकरी किन कारणों से नहीं छोड़ पा रहे थे?

दिनकर को ऐसा महसूस हो रहा था कि अंग्रेज सरकार की चाकरी करते-करते उनके अंदर की आग ठंडी हो रही है। वे छटपटाहट से भर उठे। उनके भीतर भीषण द्वंद्व चल रहा था। अपने इस अंतर्द्वंद्व को अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है-

'आगे पहाड़ को पा घटा रुकी हुई है,
बलपुंज केसरी की ग्रीवा झुकी हुई है।
निर्वाक है हिमालय गंगा डरी हुई है।
निस्तब्धता निशा की दिन में भरी हुई है।'

दिनकर की यह विवशता और पीड़ा मात्र उनकी नहीं है। उनकी इस पीड़ा के साथ देश की पीड़ा जुड़ी है। सन् 1942 के आंदोलन को भी अंग्रेजों ने बुरी तरह से कुचल दिया था। कवि मन को लग रहा था कि इस महायज्ञ की अग्नि बुझती जा रही है और वे स्वयं अंग्रेजों की गुलामी करते हुए देश के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं। 'निमंत्रण' शीर्षक कविता में वे देश के संपूर्ण साहित्यकारों को इस प्रकार आमंत्रित करते हैं -

'सुलगती नहीं यज्ञ की आग।
दिशा धूमिल, यजमान अधीर।
पुरोधा कवि कोई है यहाँ।
देश को दे ज्वाला के तीर।'

स्वतंत्रता सेनानियों को उत्साहित करते हुए भी उन्होंने लिखा है-

'वह प्रदीप जो दिख रहा है झिलमिल, दूर नहीं है,
थक कर बैठ गए क्यों भाई! मंजिल दूर नहीं है।'

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारतीय राजनीति वास्तव में ऊहापोह की शिकार थी। हालाँकि

कांग्रेस इस युद्ध में अंग्रेजों का असहयोग कर रही थी, फिर भी गांधी जी का मानवतावादी सिद्धांत इस पक्ष में नहीं था कि इस समय युद्धरत अंग्रेजों को किसी कठिनाई में डाला जाए। परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय आंदोलन में एकाएक ठंडापन-सा आ गया। इस ठंडेपन से खिन्न कवि पुकार उठता है-

'शुरू हुई आराध्य भूमि यह, क्लांति नहीं रे राही।
और नहीं तो पाँव लगे हैं क्यों पड़ने डगमग से?'

दिनकर द्वितीय विश्वयुद्ध के भीषण समय में अपनी आग के साथ-साथ देश की आग को भी प्रज्वलित करने के लिए प्रयत्नशील थे। लेकिन इन सारी बातों के बावजूद उनका मन शांत नहीं था। मानसिक स्तर पर वे एक तीव्र द्वंद्व के शिकार थे। वे उस समय अंग्रेज सरकार के प्रचार विभाग में थे। चारों तरफ से वे निंदा तथा व्यंग्य बाणों को सह रहे थे। अंग्रेजी राज के विरोध में सबसे उग्र राष्ट्रीय कविताएँ लिखने वाला जनता का लाड़ला कवि इस युद्ध काल में अंग्रेज़ों की चाकरी कर रहा था। यह बात किसी को भी पच नहीं रही थी। इसी समय सन् 1945 के अंत में मुज्जफ़रपुर में 'सुहृद संघ' का वार्षिकोत्सव मनाया गया। सभापति के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा, 'हमारे राष्ट्रीय कवि जब चाँदी के चंद टुकड़ों पर बिकते हैं, तब हम साहित्य में राष्ट्रीयता की बात कैसे करें!' दिनकर माखनलाल चतुर्वेदी की बात से अंदर तक आहत हो गए और उन्होंने सरकार के प्रचार विभाग से त्यागपत्र दे दिया। दिनकर सरकारी सेवा से मुक्त होकर लगभग डेढ़ साल तक पत्रकारिता से जुड़े रहें। इस दौरान उन्होंने अपने लिए कुछ समय बिताया। किसी की चाकरी नहीं, किसी के प्रति जवाबदेही नहीं, केवल वे अपने विचारों और अपने साहित्य के साथ जी रहे थे। उसी समय 1946 में नोआखाली के दंगे ने मानवता को संपूर्ण रूप से तार-तार कर दिया। इस भीषण सांप्रदायिक विद्वेष से व्यथित होकर दिनकर ने 'तकदीर का बँटवारा' नाम की एक कविता लिखी जिसमें उनकी मानवीय संवेदनाएँ मूर्त रूप से प्रस्फुटित हुईं -

'नारी-नर जलते साथ हाय,
जलते हैं मांस रुधिर अपने।
जलती है वर्षों की उमंग,
जलते हैं सदियों के सपने।'

परंतु न तो कवि संवेदना काम आई और न ही करोड़ों लोगों की दुआ। 15 अगस्त, 1947 में स्वतंत्रता के साथ ही भारत और पाकिस्तान के रूप में देश विभाजन की त्रासदी को झेलना पड़ा।

बोध प्रश्न

- दिनकर को नौकरी क्यों छोड़नी पड़ी?
- नोआखाली दंगे से व्यतीत दिनकर ने क्या किया?

दिनकर के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध के समय तक का काल संघर्षपूर्ण था। वे तन-मन दोनों से ही टूट चुके थे, लेकिन स्वतंत्रता के बाद उनके जीवन में काफी बदलाव आया। बिहार सरकार ने उन्हें पटना विश्वविद्यालय द्वारा संचालित लंगट सिंह महाविद्यालय (मुजफ्फरपुर) में हिंदी विभाग का अध्यक्ष बनाकर भेजा। यहाँ वे केवल दो साल ही रहें। अप्रैल 1952 में वे राज्यसभा के सदस्य

चुन लिए गए और इस महाविद्यालय से अपना त्यागपत्र देकर दिल्ली चले गए। दिल्ली जाने के बाद दिनकर को स्वाधीन भारत की वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त हुआ। यहाँ इस क्रांतिकारी कवि ने देखा कि जिस आशा, विश्वास और सपने के साथ भारतवासियों ने अंग्रेजों के साथ युद्ध किया था, उन भावनाओं के लिए देश की राजधानी दिल्ली में बैठे नेताओं के मन में कोई श्रद्धा नहीं थी। दिनकर ने यह पाया कि लोकतंत्र तो एक छलावा बन गया था। लोकतंत्र के सिंहासन पर वे लोग बैठे थे जिन्हें आम जनता की पीड़ा, दुख-दर्द से कोई मतलब नहीं था। वे तो अपने जीवन के हास-विलास में ही व्यस्त थे। जनता भूख और बेबसी की पीड़ा से त्रस्त थी और नेता भोग-विलास में। कवि का अंतर्मन स्वतंत्रता के इस भयानक रूप को देखकर रो पड़ा। उन्होंने सन् 1954 में 'भारत का यह रेशमी नगर' शीर्षक कविता लिखी। अपनी इस कविता में उन्होंने दिल्ली का विलासपूर्ण जीवन और गाँवों की बदहाली का अत्यंत हृदयविदारक चित्र प्रस्तुत किया है-

'भारत धूलों से, भरा आँसुओं से गीला,
भारत अब भी व्याकुल विपत्ति के बारे में।
दिल्ली में तो है खूब ज्योति की चहल-पहल,
पर भटक रहा है सारा देश अंधेरे में।'

दिनकर जनप्रतिनिधियों को धिक्कारते हुए कहते हैं-

'चिंता हो भी क्यों तुम्हें? गाँव के जलने से
दिल्ली में तो रोटियाँ नहीं कम होती हैं।
घुलाता न अश्रु बूंदों से आँखों का काजल,
गालों पर की धूलियाँ नहीं नम होती हैं।'

दिनकर आजीवन सामाजिक विषमता से लड़ते रहें। जब उन्होंने स्वाधीन भारत की इस राजनीतिक विडंबना को देखा तो दुख और पीड़ा से भर उठे।

बोध प्रश्न

- दिनकर आजीवन किससे लड़ते रहें?
- स्वाधीन भारत के किस दृश्य को देखकर दिनकर दुखी हुए?

5.3.3 दिनकर का काव्य दर्शन

दिनकर की काव्य साधना एक ऐसी यात्रा है जिसे अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अनगिनत मार्गों को तय करना पड़ा। दिल्ली प्रवास का समय दिनकर के रचनात्मक उत्कर्ष का समय रहा। उस समय तक देश स्वतंत्र हो चुका था। दिनकर राजनेताओं के रवैये से प्रसन्न नहीं थे, लेकिन संवैधानिक व्यवस्था पर उन्हें पूर्ण विश्वास था। कवि की भावनाएँ जो स्वतंत्रता से पहले अत्यंत तीखी और आक्रोशपूर्ण हुआ करती थीं, अब शांत होकर समाज के रचनात्मक स्वरूप की तलाश करने लगी थीं।

दिनकर छायावाद से बहुत अधिक प्रभावित नहीं हो सके। वस्तुतः दिनकर का काव्य स्वच्छंद काव्य है। यह काव्यधारा स्वयं को कल्पना की सीमा से मुक्त कर जीवन के सभी पक्षों का यथावत सृजन करती है। दिनकर के स्वच्छंदतावादी काव्य को 'रेणुका' के निम्न पंक्तियों के माध्यम

से समझ जा सकता है-

ऐसा दो वरदान, कला को
कुछ भी रहे अजेय नहीं,
रजकण से ले पारिजात तक
कोई रूप अगेय नहीं।

काव्य की विशेषताएँ

छात्रो! अब दिनकर के काव्य की कुछ प्रमुख विशेषताओं को देखेंगे जो इस प्रकार हैं -

सौंदर्यबोध

कवि दिनकर ने सौंदर्य के मापदंड को बहुत विस्तृत आकाश दे दिया था। उन्होंने सौंदर्य को केवल प्रेयसी के शारीरिक सुंदरता में नहीं खोजा बल्कि बबूल और कैक्टस में भी देखा। दिनकर ने जिस सौंदर्य को विश्लेषित किया वह सौंदर्य माटी के सुगंध से सराबोर, प्रकृति को अपने अंगों में सजाए और अपनी परिस्थितियों के यथावत अलंकारों से शोभित है। दिनकर के काव्य में अलौकिक सौंदर्य का महत्व नहीं है। इसके बजाय एक ऐसे संसार के सौंदर्य को देखा जा सकता है, जहाँ केवल मनुष्य का मनुष्य से नहीं बल्कि संपूर्ण जगत से अगाध प्रेम हो-

'फूलों की क्या बात? बांस की हरियाली पर मरता हूँ।
अरी दूब, तेरे चलते जगती का आदर करता हूँ।
किसी लोभ से इसे छोड़ दूँ, यह जग ऐसा स्थान नहीं,
और बात क्या? बहुधा मैं चाहता मुक्ति का वरदान नहीं'

दिनकर के काव्य में कई जगह यह भाव प्राप्त होता है कि जिस प्रकार जीवन आकर्षक और मधुर है उसी प्रकार क्षणभंगुर है तथा शारीरिक सौंदर्य क्षणिक है। दिनकर द्वारा रचित निम्न पंक्तियाँ इसी भाव को दर्शाती हैं -

'मरते कोमल वत्स यहाँ बचती न जवानी परदेशी।
माया के मोहक वन की क्या कहूँ कहानी परदेशी।'

दिनकर के काव्य में प्रकृति के साथ मनुष्य की आत्मा की एकात्मकता है। प्रकृति को देखकर कवि उसके साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है। वह कह उठता है-

'कला के पारखी हो चांदनी के चाहने वालों?
हवा की साँस में जो दर्द है उसको समझते हो?
बिताई है कभी क्या पूर्णिमा की रात खेतों में?
खड़ी हरियाली को देखते, बोले बिना कुछ भी?
पहाड़ों को कभी क्या देखकर यह भाव जागा है,
तुम्हारी और उनकी रूह आपस में सहेली हैं।'

भावुकता

अन्य स्वच्छंदतावादी कवियों की भाँति दिनकर के कवि-मन में भी भावुकता का दर्शन होता

है। दिनकर का मानना था कि 'भावुकता की तरंग पर चढ़कर ही क्रांति संभव होती है।' दिनकर के काव्य ने सामाजिक सरोकारों को भावुकता के साथ इस प्रकार से जोड़ लिया था कि समाज की सारी व्यवस्था, विडंबना उनकी अपनी हो गई थी। दिनकर शंकर के तांडव नृत्य को प्रतीकात्मक रूप में रखकर समाज के जड़ तथा निष्प्राण नियमों को ध्वस्त करने की बात करते हैं- 'गिरे दुर्ग जड़ता का ऐसा प्रलय बुला दो प्रलयंकर'। दिनकर काव्य का मूल उद्देश्य ही क्रांति का संगठन है। उन्होंने कविता को 'क्रांति धात्री' की संज्ञा देते हुए कहा था -

'क्रांतिधात्री कविते! जागो उठ
आडंबर में आग लगा दे
पतन, पाप, पाखंड जले
जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।'

दिनकर मनुष्य के पुरुषार्थ पर विश्वास करते हैं। उनकी दृष्टि में समाज की सबसे घातक रूढ़ि भाग्यवाद है। यह मानवता विरोधी है। भाग्यवाद पर विश्वास रखने के कारण ही भारत की दुर्दशा हो रही है। दिनकर का मानना है कि भाग्यवाद की यह अवधारणा कुछ लोगों द्वारा फैलाया गया वह प्रपंच है जिससे वे लोगों का शोषण करते हैं-

'भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का।
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।'

बोध प्रश्न

- दिनकर के काव्य का मूल उद्देश्य क्या है?
- दिनकर के काव्य की कुछ विशेषताओं के बारे में बताइए।
- दिनकर की दृष्टि में सौंदर्य क्या है?

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

दिनकर का काव्य-संसार मूल रूप से राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। वस्तुतः दिनकर का रचनाकाल भारतीय इतिहास का नवजागरण काल कहा जाता है। भारत में यूरोपियन समुदाय के आने तथा उनके नए ज्ञान-विज्ञान के सम्मिश्रण से कई प्राचीन रूढ़ियाँ ध्वस्त हो गईं। भारत की सभ्यता और संस्कृति ने जड़ता का आवरण उतारकर एक नए रचनात्मक स्वरूप को अपनाना करना शुरू किया। इस बदलाव का प्रभाव कवियों, कलाकारों एवं रचनाकारों पर भी पड़ा। दिनकर का राष्ट्रवाद विवेकानंद के राष्ट्रवाद के बहुत समीप था। विवेकानंद को लगा था कि भारत के लोग कमजोर और बीमार हैं, इन्हें आध्यात्मिक ज्ञान की अपेक्षा रोटी और शारीरिक स्वास्थ्य की आवश्यकता ज्यादा है। 'कुरुक्षेत्र' में दिनकर ने विवेकानंद की यही भाषा बोलते नज़र आए हैं-

'सुकृत-भूमि वन ही न; महि यह
देखो बहुत बड़ी है
पग-पगपर साहाय्य-हेतु
दीनता विपिन्न खड़ी है।

इसे चाहिए अन्न, वसन, जल,

इसे चाहिए आशा,

इसे चाहिए सुदृढ़ चरण, भुज

इसे चाहिए भाषा।

दिनकर की राष्ट्रवादी दृष्टि उपनिवेशवाद से मुक्ति को ही अपना लक्ष्य समझती है। वस्तुतः दिनकर ने उपेनिवेशवाद और सामंतवाद के भयानक घृणित रूप को देखा था। उन्होंने देखा था कि दिन रात शारीरिक श्रम करने वाले मजदूर और किसान इतने मजबूर हैं कि वे न तो ठीक से अपना पेट भर पाते हैं और न ही तन ढक पाते हैं। 'रेणुका' में संकलित 'कविता की पुकार' में दिनकर ने इस गरीबी का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है -

'अर्धनग्न दंपति के घर में मैं झौंके बन जाऊँगी।

लज्जित हो न अतिथि सम्मुख वे, दीपक तुरत बुझाऊँगी।'

कविता की इन पंक्तियों में भावुकता की चरम सीमा है। यदि कहें कि दिनकर की राष्ट्रीय चेतना मानव-मुक्ति की मूल्यों से जुड़ी हुई है, तो गलत नहीं होगा।

बोध प्रश्न

- दिनकर राष्ट्रीय चेतना किन कविताओं में देखा जा सकता है?

दिनकर काव्य में काम और प्रेम

दिनकर की प्रतिभा बहुमुखी है। एक ओर वे उग्र राष्ट्रीय भावनाओं से भरी हुई कविताएँ लिखा करते थे, तो दूसरी ओर काम और प्रेम की कविताएँ। दिनकर की रचनाएँ मात्र सामाजिक क्रांति का सूत्र नहीं हैं, बल्कि वे मानसिक क्रांति का सूत्रपात भी करती हैं। रोमांटिक कविताएँ दो धरातल पर रची जाती हैं। पहली है - सामाजिक चेतना के आधार बिंदु पर लिखी जाने वाली दिव्य प्रेम को दर्शाने वाली कविताएँ और दूसरी वे कविताएँ, जो मानवीय सौंदर्य में प्रेम और जिज्ञासा की तलाश करती हैं। दिनकर पहली प्रकार की कविताओं के रचनाकार हैं। दिनकर के काव्य की स्त्री वासना और सौंदर्य की अनुगामिनी नहीं है, बल्कि वे मातृत्व को ही स्त्रीत्व का चरमोत्कर्ष मानती है। बीसवीं सदी के मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्राइड के अनुसंधानों से सभ्यता के इतिहास ने 'काम' को जिस नए रूप में देखा 'उर्वशी' उसीकी भावात्मक व्याख्या करती प्रतीत होती है। 'उर्वशी' की भूमिका में नर और नारी के संयुक्त व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए दिनकर लिखते हैं, 'नारी नर को छूकर तृप्त नहीं होती, न नर नारी के आलिंगन में संतोष मानता है। कोई शक्ति है जो नारी को नर और नर को नारी से अलग नहीं रहने देती, और जब वे मिल जाते हैं, तब भी उनके भीतर किसी ऐसी तृषा का संचार करती है, जिसकी तृप्ति शरीर के धरातल पर अनुपलब्ध है।' उन्होंने लिखा है -

'पहले प्रेम स्पर्श होता है, तदनंतर चिंतन भी।

प्रणय प्रथम मिट्टी कठोर है, तब वायव्य गगन भी।

वास्तव में दिनकर की सोच काम का विरोध है ही नहीं, बल्कि उनका मुख्य लक्ष्य सात्विक

काम के मर्यादा की स्थापना करना रहा है। काम का विरोध वैसे संभव है भी नहीं, क्योंकि काम वास्तव में प्रकृति की मूल शक्ति है। प्रकृति स्वयं भी जन्मदात्री है। अतः वह काम के मूल तत्व से संयुक्त होकर परमपुरुष को एकात्म करती है तथा सृष्टि को उत्पन्न करती है। 'उर्वशी' में दिनकर ने लिखा है कि, 'जिस प्रकार भोजन का असली स्वाद उपवास के बाद मिलता है, उसी प्रकार शारीरिक सुख का असली स्वाद भी उन्हीं को प्राप्त होता है, जो ब्रह्मचर्य से होकर काम तक जाते हैं।' काम पाप नहीं है, वह पूजा की तरह पवित्र है। संभोग का क्षण उतना ही पावन होता है उतना ही नूतन होता है, जितना एक कविता की रचना का क्षण एक जीवन के लिया होता है। मूलतः दिनकर काव्य का प्रेम-दर्शन काम को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करता है।

बोध प्रश्न

- प्रेम के संबंध में दिनकर की क्या मान्यता है?

5.3.4 दिनकर की काव्य-भाषा

छायावादोत्तर काल के रचनाकारों में संभवतः सबसे स्वच्छ तथा स्पष्ट भाषा दिनकर की रही। हालांकि कहीं-कहीं उनकी क्रांतिकारी भाषा शैली पर इकबाल और नजरुल का प्रभाव भी साफ तौर पर नजर आता है। प्रख्यात साहित्यकार कालरिज ने कहा था कि कविता सबसे ज्यादा आनंद तब देती है, जब हम उसे पूरी तरह न समझ कर मोटे तौर पर ही समझते हैं। कविता में अर्थ की कई परतें होती हैं। हर परत को पूरी तरह से समझने से ही आनंद बढ़ता है। कभी-कभी अर्थ को समझने में हम असमर्थ होते हैं। इससे कविता का आकर्षण और बढ़ जाता है। कविता साहित्य की निचोड़ है और उसे थोड़ा अस्पष्ट रहने में अधिक महिमा प्राप्त होती है। कालरिज द्वारा निर्धारित कविता के सभी गुण 'उर्वशी' में प्राप्त होते हैं -

'बालकों-सा मैं तुम्हारे वक्ष में मुँह को छिपाकर,
नींद की निस्तब्धता में डूब जाता हूँ।'

कवि यहाँ अपने भावों में यह व्यक्त करता है कि जब स्त्री-पुरुष आत्मा के ताल पर मिलते हैं, तो वे एक पल अथवा एक क्षण के लिए नहीं बल्कि अनंत जन्मों के लिए एक हो जाते हैं।

बोध प्रश्न

- दिनकर की काव्य-भाषा की विशेषता क्या है?

5.4 पाठ सार

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार के एक साधारण किसान परिवार में हुआ। शैशव अवस्था में ही पिता की मृत्यु होने के बाद माँ ने अपनी कर्म शक्ति और इच्छा शक्ति द्वारा उनका पालन-पोषण किया तथा उन्हें उच्च शिक्षा दिलवाई। शिक्षा प्राप्त कर दिनकर जी ने बिहार सरकार में विभिन्न पदों पर नौकरी की, जहाँ उन्हें अपने विद्रोही व्यक्तित्व के कारण समस्याएँ भी झेलनी पड़ी। वे न तो किसी की अनुचित बात को सहन करते थे और न किसी की चमचागीरी करना पसंद था। सच तो यह है कि उनका पूरा व्यक्तित्व निराला की भाँति पौरुष और ओजस्विता से भरा हुआ था। उनके साहित्य में भी उनका यह तेजोदीप्त ओजस्वी व्यक्तित्व दिखाई देता है। 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' जैसे ओजपूर्ण तथा 'उर्वशी' जैसे शृंगारिक काव्यों की रचना करने वाले महाकवि दिनकर के जीवन का सूर्यास्त 24 अप्रैल, 1974 को उस

समय हुआ जब वे तिरुपति की यात्रा पर थे।

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. दिनकर का बचपन और यौवन अत्यंत संघर्षपूर्ण था।
2. केवल 12 वर्ष की आयु में महात्मा गांधी के प्रथम दर्शन और उनकी बातों ने दिनकर के मन में राष्ट्रीय चेतन के बीज बो दिया था।
3. दिनकर एक ओर तो राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवियों में शामिल हैं तथा दूसरी ओर उन्हें प्रगतिवाद के भी प्रमुख रचनाकारों में गिना जाता है।
4. दिनकर की काव्य प्रतिभा बहुआयामी थी।
5. उन्होंने जहाँ एक ओर देश की स्वातंत्र्य चेतन को प्रेरित और मुखरित किया वहीं दूसरी ओर कामाध्यात्म का दर्शन प्रस्तुत करके स्त्री-पुरुष संबंध के शाश्वत प्रश्नों पर चिंतन भी किया।

5.6 शब्द संपदा

1. इच्छाशक्ति	= सोच-समझकर निर्णय लेने की क्षमता
2. उपनिवेश	= जीविका के लिए एक स्थान से हटकर कहीं दूर जाना
3. उपनिवेशवाद	= उपनिवेश बनाने और उन्हें अपने अधीन रखने की नीति
4. एकात्म	= अभिन्न, एक प्राण, एक हो जाना
5. कुशाग्र	= अति तीक्ष्ण, जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो
6. तृषा	= प्यास, तृष्णा
7. सामंतवाद	= वह शासन जिसके अंतर्गत जमींदारों को कृषि भूमि एवं किसानों से संबंधित अधिकार प्राप्त होते थे।

5.7 परीक्षार्थ

खंड (अ)

5.7.1 सही विकल्प चुनिए –

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म किस वर्ष और किस स्थान पर हुआ था?

A. 1908, सिमरिया (बिहार) B. 1910, पटना (बिहार)

C. 1912, मुजफ्फरपुर (बिहार) D. 1905, बेगूसराय (बिहार)

2. रामधारी सिंह ने अपने उपनाम के रूप में 'दिनकर' को क्यों चुना?

A. उनके पिता का नाम 'रवि सिंह' था B. यह उनके गुरु द्वारा दिया गया नाम था

C. उन्हें सूर्योदय का दृश्य बहुत प्रिय थाD. उनकी पहली कविता 'दिनकर' पत्रिका में छपी थी

3. दिनकर जी ने पटना कॉलेज से बी.ए. ऑनर्स की परीक्षा किस विषय में उत्तीर्ण की थी?

A. इतिहास B. संस्कृत C. हिंदी D.राजनीति विज्ञान

4. मैट्रिक की परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर दिनकर को कौन सा पदक प्रदान किया गया था?

A. ज्ञानपीठ पदक **B. भूदेव पदक** C. विद्यावाचस्पति D. साहित्य रत्न

5. दिनकर ने किस घटना से आहत होकर सरकारी प्रचार विभाग की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था?

A. गांधी जी की गिरफ्तारी **B. माखनलाल चतुर्वेदी की आलोचनात्मक टिप्पणी**

C. वेतन कम होने के कारण D. स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के लिए

6. दिनकर की किस कृति को 'काम' और 'प्रेम' की दार्शनिक व्याख्या माना जाता है, जिसके लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

A. रेणुका B. रश्मिरथी **C. उर्वशी** D. कुरुक्षेत्र

7. दिनकर के अनुसार समाज की सबसे घातक और मानवता विरोधी रूढ़ि क्या है?

A. सामंतवाद B. अंधविश्वास C. जातिवाद **D. भाग्यवाद**

8. स्वतंत्रता के पश्चात, दिल्ली के वैभव और गाँवों की बदहाली को देखकर दिनकर ने कौन सी कविता लिखी थी?

A. परशुराम की प्रतीक्षा B. हिमालय C. आग की भीख **D. भारत का यह रेशमी नगर**

9. दिनकर की शिक्षा के दौरान उनके स्कूल जाने के संघर्ष के बारे में क्या प्रसिद्ध है?

A. वे प्रतिदिन 20 किलोमीटर पैदल चलते थे B. वे जंगल के रास्ते से अकेले जाते थे

C. वे गंगा नदी तैरकर पार करते थे D. वे नाव चलाकर स्कूल का खर्चा निकालते थे

10. भगवतीचरण वर्मा ने दिनकर के व्यक्तित्व की तुलना किस अन्य महान छायावादी कवि से करते हुए 'पौरुष' का प्रतीक बताया है?

A. प्रसाद B. महादेवी वर्मा C. पंत **D.निराला**

खंड (ब)

5.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. दिनकर के जन्म एवं पारिवारिक दशा पर प्रकाश डालिए।
2. दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।
3. प्रेम के संबंध में दिनकर की मान्यताओं पर विचार कीजिए।
4. दिनकर की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

5.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. दिनकर के काव्य दर्शन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. दिनकर व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

दिनकर की काव्य यात्रा को उनके समय के देशकाल ने कैसे प्रभावित किया? स्पष्ट कीजिए।

5.8 पठनीय पुस्तकें

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' : पंडित शशिमोहन बहल, विनय श्रीवास्तव

इकाई 6 : 'कलम, आज उनकी जय बोल' (रामधारी सिंह दिनकर) : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 मूल पाठ : कलम, आज उनकी जय बोल (रामधारी सिंह 'दिनकर) : व्याख्या
6.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय
6.3.2 अध्येय कविता
6.3.3 विस्तृत व्याख्या
6.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन
6.4 पाठ सार
6.5 पाठ की उपलब्धियाँ
6.6 शब्द संपदा
6.7 परीक्षार्थ प्रश्न
6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! 'कलम, आज उनकी जय बोल' कविता का सृजन प्रसिद्ध हिंदी कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा किया गया है। यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के उन वीर शहीदों और नायकों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए लिखी गई है, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी और देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। कवि इस कविता के माध्यम से न केवल स्वतंत्रता संग्राम के वीरों का सम्मान करते हैं बल्कि देशभक्ति, बलिदान और समर्पण की भावना को भी जागरूक करने का प्रयास करते हैं। कविता में कलम को प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो इतिहास और साहित्य के माध्यम से शहीदों की वीरता का गुणगान करता है। कवि कलम से कह रहे हैं कि वह उन महापुरुषों का यश गाए जिनकी शहादत ने देश को स्वतंत्रता की सौगात दी। यह कविता स्मृति, श्रद्धा और प्रेरणा का मिश्रण है जो हमें अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है और हमसे उन वीरों के पद चिह्नों पर चलने की प्रेरणा देती है। भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अनेक महान व्यक्तित्वों ने अपनी जान की बाजी लगाकर देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। इनमें से कई वीरों को अपने जीवन का सर्वोत्तम बलिदान देना पड़ा और उनके कार्यों का परिणाम आज हम स्वतंत्र भारत के रूप में देख रहे हैं। दिनकर जी ने इस कविता में इन महान सेनानियों के संघर्ष को एक प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया है ताकि हम उनका सम्मान करें और उनके मार्ग पर

चलकर देश की सेवा करें। यह कविता हमें यह याद दिलाती है कि स्वतंत्रता के लिए जो महान संघर्ष हुआ, उसे कभी नहीं भूलना चाहिए और यह हमें अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए प्रेरित करती है। आप इस इकाई में दिनकर की इस कविता 'कलम, आज उनकी जय बोल' का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- अध्येय कविता की सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।
- इस कविता में निहित साहित्यिक सौंदर्य पर प्रकाश डाल सकेंगे।
- दिनकर की काव्यगत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- कलम (लेखन) के माध्यम से इतिहास के महत्व को समझकर उसे हमारे कर्तव्यों और संघर्षों से जोड़ सकेंगे।

6.3 मूल पाठ : 'कलम, आज उनकी जय बोल' (रामधारी सिंह दिनकर) : व्याख्या

6.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

यह कविता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखी गई एक अत्यंत प्रेरणादायक रचना है जिसमें कवि अपनी कलम से निवेदन करता है कि वह उन महान स्वतंत्रता सेनानियों की जयघोष करे जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुति दे दी। यह कविता उन वीरों की स्मृति को अक्षुण्ण रखने का आह्वान करती है और उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करती है। यह कविता हमें यह सिखाती है कि हमें अपने इतिहास के उन वीरों को कभी नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने हमें आज़ादी दिलाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उनकी गाथा को शब्दों और कर्मों के माध्यम से जीवित रखना ही सच्ची श्रद्धांजलि है। 1938 में लिखी यह वीर रस की कविता 'हुंकार' शीर्षक कविता संग्रह में संग्रहीत है।

6.3.2 अध्येय कविता

कलम, आज उनकी जय बोल

जल अस्थियाँ बारी-बारी
छिटकाई जिनने चिंगारी
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफ़ानों में एक किनारे
जल-जलाकर बुझ गए, किसी दिन माँगा नहीं
स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रहीं लू लपट दिशाएँ
जिनके सिंहनाद से सहमी धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा?
साखी हैं उनकी महिमा के सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

निर्देश : प्रस्तुत कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
प्रस्तुत कविता का मौन वाचन कीजिए।

6.3.3 विस्तृत व्याख्या

[1]

कलम, आज उनकी जय बोल
जल अस्थियाँ बारी-बारी
छिटकाई जिनने चिंगारी
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल

शब्दार्थ : कलम = लेखनी, कागज पर लिखने का साधन; उनकी = उन शहीदों की, जल = आग में जलना, अस्थियाँ = हड्डियाँ, शरीर; छिटकाई = फैलाई, चिंगारी = आग की छोटी लपट, क्रांति की आरंभिक ऊर्जा, पुण्यवेदी = यज्ञ की वेदी, यहाँ पर बलिदान का प्रतीक, गर्दन का मोल = जीवन का मूल्य, किसी भौतिक पुरस्कार या लाभ का प्रत्याभूति (यहाँ, गर्दन का मोल देश की स्वतंत्रता के बदले में लिया गया बलिदान है)

संदर्भ : प्रस्तुत कविता का अंश रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत 'कलम, आज उनकी जय बोल' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : इस कविता में उन स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों के संदर्भ में कहा गया है जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपनी जान की आहुति दी। इन वीरों ने न केवल अपने प्राणों की आहुति दी, बल्कि समाज सुधार, स्वतंत्रता और धर्म के लिए संघर्ष करते हुए अपने देश को

एक नया मार्ग दिखाया। शहीदों ने अपना सब कुछ दे दिया, लेकिन न तो किसी पुरस्कार की आशा की और न ही किसी भौतिक सुख-साधनों की कामना की। वे अपने देश, धर्म और समाज के लिए केवल समर्पण और सत्य के मार्ग पर चलते रहे। कवि चाहते हैं कि हम अपने शहीदों को याद करें और उनके योगदान को कभी न भूलें। दिनकर ने यह कविता उनके बलिदान को सम्मानित करने के लिए लिखी है, ताकि हम उनके संघर्षों को समझ सकें और उनका आदर्श को हमारे जीवन का हिस्सा बना सके।

व्याख्या : इन पंक्तियों के द्वारा शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई है। कवि कह रहे हैं कि अब वक्त है कि हम अपनी कलम से उनके बलिदान और संघर्ष का जयकारा लगाएँ। यहाँ पर कलम का प्रतीकात्मक अर्थ है लेखक या कवि की वाणी, जो शहीदों के बारे में सुनाएगी। शहीदों ने अपने अस्थियों (हड्डियों) को एक के बाद एक समर्पित है देश के लिए किया। इसका अर्थ है कि उन्होंने अपनी जान की आहुति देकर देश के लिए दी है। यह उनके निःस्वार्थ बलिदान को दिखाता है। इस पंक्ति में कवि उन वीरों का उल्लेख कर रहे हैं जिन्होंने अपने संघर्ष के द्वारा चिंगारी अर्थात क्रांति की ऊर्जा को फैलाया। उनका बलिदान दूसरों को जागरूक करने के लिए था और उनके संघर्ष की आग ने पूरे समाज और राष्ट्र को जागृत किया। यहाँ पर कवि शहीदों के निःस्वार्थ बलिदान की बात कर रहे हैं। पुण्यवेदी का अर्थ है वह वेदी जिस पर बलिदान देने से पुण्य मिलता है और गर्दन का मोल का मतलब है भौतिक पुरस्कार या संपत्ति। कवि यह कह रहे हैं कि शहीदों ने बिना किसी स्वार्थ के अपने प्राणों की आहुति दी। उनका उद्देश्य केवल देश की सेवा था।

विशेषताएँ

कविता उन वीरों के संघर्ष और बलिदान के माध्यम से समाज को प्रेरणा देती है। यह कविता दर्शाती है कि हमें अपने कर्तव्यों को बिना किसी स्वार्थ के निभाना चाहिए।

कविता में कई प्रतीकात्मक शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे कि 'पुण्यवेदी', 'गर्दन का मोल' और 'चिंगारी', जो शहीदों के बलिदान की महानता को उजागर करते हैं।

बोध प्रश्न:

- कविता में 'जला अस्थियाँ बारी-बारी' पंक्ति का क्या अर्थ है?
- 'छिटकाई जिनने चिंगारी' का क्या आशय है?
- 'जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल' का प्रयोग करके कवि क्या कहना चाहते हैं?
- कविता में शहीदों को किस प्रकार से चित्रित किया गया है?

[2]

जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफ़ानों में एक किनारे

जल जलाकर बुझ गए, किसी दिन माँगा नहीं
स्नेह मुँह खोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

शब्दार्थ : अगणित = अनगिनत, असीमित, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती; लघु दीप = छोटे दीपक, जो प्रतीक हैं उन शहीदों या बलिदानियों की जो छोटी-छोटी आहुति देकर देश की स्वतंत्रता या समाज के लिए समर्पित हो गए; तूफ़ानों में = जीवन के उतार-चढ़ाव में

संदर्भ : प्रस्तुत कविता का अंश रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत 'कलम, आज उनकी जय बोल' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : तूफ़ानों अर्थात संघर्षों और विपत्तियों का सामना करते हुए उन लघु दीपों (शहीद) जो अपने जीवन के उद्देश्यों के लिए जलते रहे, और अंततः बुझ गए। कवि उन्हें संबोधित करते हुए कह रह हैं कि इन दीपों ने कभी भी किसी प्रकार के स्वार्थ या पुरस्कार की माँग नहीं की। यह अंश उन निःस्वार्थ बलिदानियों को सम्मानित करता है। कवि शहीदों को याद करते हुए उन्हें जय बोलने का आह्वान करते हैं ताकि हम उनके योगदान को कभी न भूलें। यह अंश शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि और सम्मान व्यक्त करता है।

व्याख्या : कवि अपनी कलम से यह कहते हैं कि वह उन लाखों अनगिनत निःस्वार्थ लोगों की जय बोले जिन्होंने अपने आपको देश की रक्षा के लिए न्योछावर कर दिए। आजादी उन लाखों साधारण लोगों के बलिदानों से मिली है जो इस देश के किसी कोने में तूफ़ान में जलते हुए छोटे-से दीपक की तरह प्रकाशित हुए। यहाँ 'दीप' प्रतीक है उन लाखों शहीदों का, जिन्होंने अपने जीवन के हर पल देश की रक्षा के लिए समर्पित किया है।

शहीदों ने जीवन में आने वाली हर तूफान का अर्थात हर चुनौती का सामना किया। जैसे दीप जलकर बुझ जाता है, वैसे ही इन शहीदों ने अपने जीवन को देश के लिए समर्पित किया और देश की रक्षा करते-करते शहीद हो गए। इन शहीदों ने कभी अपने स्वार्थ के लिए कुछ नहीं माँगा। उनका उद्देश्य सिर्फ देश की सेवा थी। यह अंश शहीदों की ममता और प्रेम की ओर इशारा करता है। शहीदों ने सच्चे प्रेम से देश और समाज के लिए अपना बलिदान दिया। कवि अपनी लेखनी का उपयोग करते हुए उन शहीदों का सम्मान करने का आह्वान कर रहे हैं। यह शहीदों के बलिदान और संघर्ष का जयकारा है, जिससे हम उनके योगदान को याद करते हैं।

विशेषता

यहाँ 'एक किनारे' का अर्थ है एक ऐसा सुरक्षित स्थान जो संघर्षों से बाहर है। प्रतीक रूप में यह उन लोगों के लिए प्रयुक्त है जो संघर्षों के बावजूद अपने लक्ष्य तक पहुँचे।

'स्नेह मुँह खोल' का अर्थ है कि वे शहीद किसी से भी स्नेह या प्रेम की अपेक्षा नहीं करते हैं, बल्कि अपने कर्तव्य और देश के लिए बलिदान देने को तैयार रहते हैं।

बोध प्रश्न

- कवि ने शहीदों को 'अगिनत दीप हमारे' क्यों कहा है?
- 'तूफ़ानों में एक किनारे' का क्या अर्थ है?
- 'जल जलकर बुझ गए, किसी दिन माँगा नहीं' का क्या अर्थ है?
- 'स्नेह मुँह खोल' से क्या आशय है?
- कविता में दीप का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

[3]

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रहीं लू लपट दिशाएँ
जिनके सिंहनाद से सहमी धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

शब्दार्थ : पीकर = सेवन करके, चखकर, लाल शिखाएँ = लाल रंग की शिखाएँ (आग की शिखाएँ), उगल रहीं = उगलना, बाहर फेंकना, लू लपट - गरमी की तेज हवा और लपटें, सिंहनाद = सिंह की गर्जना, सहमी = डरी हुई, भयभीत।

संदर्भ : प्रस्तुत कविता का अंश रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत 'कलम, आज उनकी जय बोल' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : कविता का यह प्रसंग स्वतंत्रता संग्राम के वीर शहीदों और उनके द्वारा किए गए बलिदान को सम्मानित करता है। कवि ने उन शहीदों की वीरता को चित्रित किया है जिन्होंने अपने जीवन को समर्पित किया, लेकिन कभी किसी भौतिक पुरस्कार की इच्छा नहीं की।

व्याख्या : यहाँ शहीदों के संघर्ष और बलिदान को लाल शिखाएँ अर्थात आग की लपटों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जैसे दीपक जलता है और उसकी लौ लाल होती है, वैसे ही शहीदों ने अपनी आहुति दी और उनकी आग अर्थात संघर्ष समाज में फैल गई। कहने का आशय है कि शहीदों के संघर्ष से चारों दिशा में आग फैल गई। उनका संघर्ष केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि उन्होंने पूरे समाज और राष्ट्र को जागृत किया। यह सकारात्मक परिवर्तन और क्रांति का प्रतीक है। सिंह की गर्जना, यह किसी भी महाकवि या शहीद के प्रभावशाली शब्दों और कार्यों को दर्शाता है। यहाँ पर यह उन शहीदों के कार्यों और संघर्ष का प्रतीक है जिन्होंने अपनी शक्ति और संघर्ष से धरती को हिलाकर रख दिया। जब किसी सशक्त शहीद का सिंहनाद होता है, तो धरती (समाज या देश) डर या सम्मान से काँपने लगती है। उपर्युक्त पंक्तियों में प्रयुक्त शब्द 'डोल' यह दर्शाता है कि शहीदों के संघर्ष का प्रभाव आज भी धरती (समाज) पर महसूस किया जा सकता है। उनकी क्रांति और शक्ति के कारण धरती आज भी हिली हुई है। कवि की लेखनी शहीदों के संघर्ष और बलिदान का सम्मान करती है। यह पंक्ति कवि का आह्वान है कि हमें आज उन शहीदों की जयकारा

लगाना चाहिए। हम उनके योगदान और संघर्ष को याद करते हुए उनका सम्मान करना चाहिए। यह जय बोल उनके वीरता और संघर्ष को सम्मानित करने का तरीका है।

विशेषता

उक्त पंक्तियों में प्रयुक्त 'पीकर' शब्द का अर्थ है उन शहीदों या वीरों द्वारा दी गई आहुति या बलिदान की ओर इशारा करता है।

कविता में प्रयुक्त 'लाल शिखाएँ', 'सिंहनाद' और 'लू लपट' जैसे शब्द प्रतीकात्मक हैं, जो शहीदों के बलिदान और उनके संघर्ष की तीव्रता को दर्शाते हैं। 'लाल शिखाएँ' शहीदों के बलिदान और उनके संघर्ष को अत्यंत तीव्र और प्रभावशाली दिखाता है। 'लू लपट' अर्थात क्रांति या संघर्ष की आग। सिंहनाद अर्थात सिंह की गर्जना, यहाँ यह शहीदों के संघर्ष की गहरी गूंज और शक्ति को व्यक्त करता है, जैसे एक सिंह की दहाड़ से धरती हिल जाती है वैसे ही शहीदों के बलिदान से देश प्रभावित है। कवि ने शहीदों के संघर्ष और बलिदान के प्रभाव को सिंहनाद के रूप में प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न

- 'पीकर जिनकी लाल शिखाएँ' का क्या अर्थ है?
- 'उगल रहीं लू लपट दिशाएँ' का क्या अर्थ है?
- किनके सिंहनाद से धरती सहमी रही है?
- 'लाल शिखाएँ' किसका प्रतीक है?
- 'सिंहनाद' का क्या महत्व है?

[4]

अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा?
साखी हैं उनकी महिमा के सूर्य, चंद्र, भूगोल खगोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

शब्दार्थ : अंधा = दृष्टिहीन, यहाँ पर यह शब्द ज्ञानहीन या अवबोधन (जो सच्चाई या वास्तविकता को न समझ सके) के अर्थ में प्रयोग हुआ है। चकाचौंध = तेज रोशनी या चमक, मारा = पिटा हुआ, पीड़ित, इतिहास = अतीत, साखी = प्रमाण, गवाह, प्रमाण देने वाला; महिमा = सम्मान, महानता

संदर्भ : प्रस्तुत कविता का अंश रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत 'कलम आज उनकी जय बोल' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

प्रसंग : इस प्रसंग के माध्यम से कवि यह कहना चाहते हैं कि प्रसिद्ध विभूतियों के यश की चकाचौंध के कारण अंधा हो चुका इतिहास अनेक सामान्य लोगों के महान कार्यों से अनजान रहता है। वह उन वीरों की महिमा को नहीं समझ पाता जिनके बलिदान की महिमा को सूरज, चाँद, पृथ्वी और आकाश (अर्थात सारी प्रकृति) ने किसी गवाह की भाँति प्रत्यक्ष देखा है। यहाँ कवि हमें अपनी ऐतिहासिक धरोहर, वीरों के बलिदान और संघर्ष को याद रखने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं और कह रह हैं कि उन्हें कभी भी भूलना नहीं चाहिए। कवि का आह्वान है कि उन वीरों की जय-जयकार की जाए, जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के, देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियाँ उन लोगों की ओर इशारा करती हैं जो इतिहास में वर्णित नायकों के कारनामों की चमक-दमक से प्रभावित होते हैं, लेकिन भुला दिए गए साधारण लोगों के बलिदान के महत्व को नहीं समझ पाते। ये लोग अपनी नासमझी के कारण अंधे होते हैं। इन पंक्तियों में इतिहास में किए गए अन्याय का संकेत है। कवि कहते हैं कि जो इतिहास सामान्य जन के बलिदान का अंकन नहीं करता, वह अंधा है। इतिहास उन अनेक शहीदों के बलिदान की उपेक्षा करता है, जिनकी महिमा और संघर्ष को सारी प्रकृति जानती है। कवि कहते हैं कि उन अज्ञात शहीदों की महिमा सूर्य (प्रकाश), चंद्र (शीतलता), भूगोल (पृथ्वी) और खगोल (आकाश) में समाई हुई है। इन प्राकृतिक तत्वों की तरह उनकी महिमा और बलिदान भी सर्वव्यापी और अनंत है। इन पंक्तियों से यह स्पष्ट है कि अज्ञात शहीदों का योगदान समय और स्थान से परे है और उनकी महिमा अमर है। कवि अपनी लेखनी का आह्वान करते हैं है कि आज हम उन शहीदों की जय बोलें और उनके संघर्ष और बलिदान को सम्मानित करें, जिनकी चर्चा करने में इतिहास चूक गया है। ये पंक्तियाँ शहीदों के सम्मान और उनकी महिमा को सही रूप में स्वीकार करने का संदेश देती हैं।

विशेषता

प्रतीकात्मकता का प्रयोग करते हुए कवि ने उन वीरों की महिमा और सर्वव्यापी प्रभाव को दर्शाया है।

चकाचौंध तेज रोशनी या चमक का द्योतक है। यह विशेष रूप से किसी प्रकार के ऐसे आकर्षण को दर्शाता है जो मनुष्य को वास्तविकता से दूर करता है। सूर्य प्राकृतिक वस्तु है जो शहीदों के प्रकाश और महिमा के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त है। चंद्रमा शहीदों की शीतलता और समाज पर उनके प्रभाव को दिखाने का प्रतीक है। भूगोल उस धरती का प्रतीक है जिस पर शहीदों के संघर्ष और बलिदान का असर पड़ा। खगोल आकाश की विशालता और शहीदों की महानता का प्रतीक है।

कविता में शहीदों के बलिदान का सही मूल्यांकन किया गया है। कवि यह संदेश देते हैं कि हमें अपने शहीदों को हमेशा सम्मानित करना चाहिए और उन्हें कभी भी भूलना नहीं चाहिए।

यह कविता हमें उन वीरों से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित करती है, जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के अपनी जान की आहुति दी। यह कविता न केवल साहित्यिक है, बल्कि यह एक सामाजिक संदेश भी देती है कि हमें अपने कर्तव्यों को बिना किसी भौतिक स्वार्थ के निभाना चाहिए।

बोध प्रश्न

- 'अंधा चकाचौंध का मारा' का क्या अर्थ है?
- 'क्या जाने इतिहास बेचारा?' का क्या आशय है?

6.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

कविता 'कलम, आज उनकी जय बोल' में कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने उन महान व्यक्तित्वों, शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों की महिमा का बखान किया है, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। वे वीर और संघर्षशील लोग, जो अपनी जान की कीमत पर देश के लिए लड़े, उनका बलिदान कभी व्यर्थ नहीं गया और उनकी वीरता हमेशा अमर रहेगी। कविता की पहली पंक्तियाँ शहीदों के साहस और संघर्ष को व्यक्त करती हैं। 'जल अस्थियाँ बारी-बारी' का प्रयोग करके कवि यह दिखाते हैं कि शहीदों की अस्थियाँ एक-एक करके जलती हैं, लेकिन उनका बलिदान अमर रहता है। शहीदों का जीवन पुण्यवेदी पर चढ़ने जैसा था, जहाँ उन्होंने अपने कर्तव्यों को पूरा किया बिना किसी स्वार्थ या प्रपंच के। कविता में दीपों और चिंगारियों का उदाहरण देते हुए कवि यह बताते हैं कि ये शहीद, जैसे दीपों की लौ की तरह जलते हैं, वैसे ही उनकी वीरता और बलिदान समय के साथ मिटने वाली नहीं हैं। 'कलम, आज उनकी जय बोल' इस पंक्ति में कवि यह आह्वान करते हैं कि हमें अपनी कलम से उन वीरों की जय-जयकार करनी चाहिए और उनके बलिदान को हर दिल में जीवित रखना चाहिए।

6.4 पाठ सार

कवि रामधारी सिंह दिनकर की कविता 'कलम, आज उनकी जय बोल' शीर्षक कविता में शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों की वीरता और बलिदान को श्रद्धांजलि अर्पित करती है। यह कविता वस्तुतः 1857 की ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। इस कविता में कवि ने उन वीर आत्माओं की महिमा को उजागर किया है, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी जान की आहुति दी और बिना किसी स्वार्थ के देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया। कविता की शुरुआत में कवि शहीदों की बलिदान और संघर्ष को प्रस्तुत करते हुए 'जल अस्थियाँ बारी-बारी' कहकर शहीदों के द्वारा दी गई आहुति को याद करते हैं। शहीदों की अस्थियाँ एक-एक करके जलती हैं, लेकिन उनका बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि उनकी वीरता हमेशा जीवित रहती है। कवि ने उन शहीदों को पुण्यवेदी पर चढ़े हुए व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत किया है, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी और देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। 'छिटकाई जिनने चिंगारी' यह पंक्ति शहीदों के संघर्ष और क्रांति को दर्शाती है, जो उन्होंने समाज और देश के लिए किया।

कविता के अंत में कवि आह्वान करते हैं, 'कलम, आज उनकी जय बोल'। अर्थात अपनी कलम के माध्यम से हम उन शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित करें और उनके बलिदान और वीरता को हमेशा याद रखें। वे हमें यह सिखाते हैं कि शहीदों का बलिदान कभी नहीं भूलना चाहिए और हमें उनकी महिमा को जीवित रखना चाहिए। कविता का मुख्य संदेश यह है कि शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को स्मरण रखना चाहिए, उनकी वीरता और बलिदान को सम्मानित करना चाहिए और नई पीढ़ी को उनका महत्व समझाना चाहिए।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. 'कलम, आज उनकी जी बोल' शीर्षक कविता शहीदों के बलिदान को एक अमर धरोहर के रूप में प्रस्तुत करती है। शहीदों का संघर्ष और बलिदान कभी समाप्त नहीं हो सकता, वे हमेशा जीवित रहते हैं, उनके कार्यों और योगदान को हम कलम से सम्मानित करें। इस कविता ने शहीदों के प्रति गहरी श्रद्धा और सम्मान को स्थापित किया।
2. इस कविता के माध्यम से कवि ने न केवल इतिहास को स्मरण करने का आह्वान किया, बल्कि राष्ट्रीयता और सामाजिक जागरूकता को बढ़ाने का गुहार भी लगाया है। यह कविता हम सभी को यह सिखाती है कि हमें अपने देश की सेवा में उन वीरों के योगदान को न भूलना चाहिए और हमें अपनी कलम और लेखनी से उनकी महिमा को फैलाना चाहिए।
3. इस कविता में वीरों के संघर्ष को स्मरण करने और प्रेरणा लेने का संदेश दिया गया है। यह कविता आज के युवाओं को प्रेरित करती है कि वे अपने कर्तव्यों को समझें और अपनी संघर्ष शीलता और देशभक्ति की भावना को जागृत करें।
4. रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी काव्य शैली में सरलता और गहरी भावना को मिश्रित किया है, जिससे कविता पाठकों पर गहरा प्रभाव डालती है। उन्होंने प्राकृतिक रूपकों और प्रतीकों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया है, जैसे दीप, चिंगारी और पुण्यवेदी, जो शहीदों के बलिदान को व्यक्त और स्थिर रूप में प्रस्तुत करते हैं।
5. इस कविता का मुख्य उद्देश्य यह था कि शहीदों को याद किया जाए और उनकी वीरता और बलिदान को सम्मानित किया जाए। कविता प्रेरणादायक है क्योंकि यह न केवल शहीदों को याद करने की बात करती है, बल्कि यह राष्ट्रीय गौरव और स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति श्रद्धा को भी उत्तेजित करती है।
6. यह कविता इतिहास की अपूर्ता और सीमा को भी उजागर करती है।

6.6 शब्द संपदा

1. अक्षुण्ण = क्षीण न होने वाला, अटूट
2. आहुति = हवन में डालने वाली सामग्री, चुनौती
3. आह्वान = बुलाना, पुकारना
4. न्यौछावर = त्यागना
5. प्रतीक = चिह्न, लक्षण
6. प्रत्याभूति = जमानत के रूप में दी गई वस्तु या धनराशि
7. शहादत = शहीद होने का भाव

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

6.7.1 सही विकल्प चुनिए –

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी कविता में 'कलम' को किसका प्रतीक माना है?

A. एक साधारण लेखन सामग्री
B. युद्ध में प्रयुक्त होने वाला शस्त्र
C. लेखक की वाणी और इतिहास लेखन
D. शांति का संदेशवाहक

2. 'जला अस्थियाँ बारी-बारी' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या दर्शाना चाहते हैं?

A. युद्ध में हार का दृश्य
B. अस्थियों का वैज्ञानिक महत्व
C. शहीदों का निरंतर और निःस्वार्थ बलिदान
D. शवों के अंतिम संस्कार की विधि

3. कविता में 'अगणित लघु दीप' किन्हें कहा गया है?

A. आकाश के छोटे तारे
B. स्वतंत्रता संग्राम के केवल मुख्य नेता
C. वे अज्ञात शहीद जिन्होंने बिना किसी प्रसिद्धि के प्राण दिए
D. दिवाली के अवसर पर जलाए जाने वाले दीपक

4. 'लिए बिना गर्दन का मोल' वाक्यांश का क्या अर्थ है?

A. बिना सोचे-समझे कार्य करना
B. युद्ध में पराजित हो जाना
C. बिना किसी पुरस्कार या स्वार्थ के बलिदान देना
D. सिर का मूल्य कम आंकना

5. कवि के अनुसार इतिहास को 'अंधा' क्यों कहा गया है?

A. क्योंकि पुराने समय में ज्ञान का अभाव था

B. क्योंकि वह प्रसिद्ध लोगों की चमक में साधारण शहीदों को भूल जाता है

C. क्योंकि इतिहास केवल काल्पनिक होता है

D. क्योंकि इतिहास की पुस्तकें पढ़ना कठिन है

6. शहीदों की महिमा के गवाह (साखी) के रूप में कवि ने किसे प्रस्तुत किया है?

A. केवल युद्ध में जीवित बचे सैनिकों को

B. केवल सरकारी दस्तावेजों को

C. प्रकृति के तत्वों को (सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल)

D. विदेशी इतिहासकारों को

7. 'सिंहनाद' शब्द का प्रयोग कवि ने किसके लिए किया है?

A. विदेशी शासकों की धमकियों के लिए

B. जंगल में शेरों के चिल्लाने के लिए

C. शहीदों के प्रभावशाली कार्यों और गर्जना के लिए

D.प्राकृतिक आपदाओं के शोर के लिए

8. दिनकर जी की यह कविता किस मुख्य रस से ओत-प्रोत है?

A. शांत रस **B. वीर रस** C. श्रृंगार रस D. करुण रस

9. 'पुण्यवेदी' शब्द से कवि का क्या आशय है?

A. युद्ध का मैदान

B. इतिहास की पुस्तकें

C. देश के लिए बलिदान का पवित्र स्थान

D. एक धार्मिक मंदिर

10. 'स्नेह मुँह खोल' न माँगने का क्या तात्पर्य है?

A. वे बहुत अमीर थे

B. शहीदों ने बदले में प्रेम या सहानुभूति की अपेक्षा नहीं की

C. वे समाज से नफरत करते थे

D. उन्हें बोलना नहीं आता था

खंड (ब)

6.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. कविता 'कलम, आज उनकी जय बोल' के मुख्य विषय पर प्रकाश डालिए।
2. 'कलम आज उनकी जय बोल/ जल अस्थियाँ बारी-बारी/ छिटकाई जिनने चिंगारी/ जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल' - इन अंश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
3. 'जो अगणित लघु दीप हमारे/ तूफ़ानों में एक किनारे/ जल जलाकर बुझ गए, किसी दिन माँगा नहीं/ स्नेह मुँह खोल/ कलम, आज उनकी जय बोल' - इन अंश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
4. 'पीकर जिनकी लाल शिखाएँ/ उगल रहीं लू लपट दिशाएँ/ जिनके सिंहनाद से सहमी धरती रही अभी तक डोल/ कलम आज उनकी जय बोल' - इन अंश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

5. 'अंधा चकाचौंध का मारा/ क्या जाने इतिहास बेचारा?/ साखी है उनकी महिमा के सूर्य, चंद्र, भूगोल खगोल/ कलम आज उनकी जय बोल' - इन अंश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

6.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कविता 'कलम, आज उनकी जय बोल' के माध्यम से रामधारी सिंह 'दिनकर' ने स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों और उनके बलिदान को किस प्रकार सम्मानित किया है? -कविता के प्रमुख प्रतीकों और रूपकों का विवेचन करते हुए स्पष्ट कीजिए।
2. 'कलम आज उनकी जय बोल' कविता में शहीदों के बलिदान और संघर्ष को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है? पठित कविता के आधार पर चर्चा कीजिए।
3. रामधारी सिंह दिनकर की कविता 'कलम, आज उनकी जय बोल' में सामाजिक और राष्ट्रीय संदेशों का विश्लेषण करें।
4. 'कलम, आज उनकी जय बोल' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि ने आधुनिक समाज को क्या संदेश दिया है?
5. 'कलम, आज उनकी जय बोल' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।
6. दिनकर की कविता 'कलम, आज उनकी जय बोल' के महत्व को निरूपित कीजिए।
7. 'कलम, आज उनकी जय बोल' शीर्षक कविता में निहित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक तत्वों पर प्रकाश डालिए।

6.8 पठनीय पुस्तकें

1. कविता के पक्ष में : ऋषभदेव शर्मा, पूर्णिमा शर्मा
2. दिनकर रचनावली (खंड 1-14)
3. हिंदी साहित्य - उद्भव और विकास : हजारी प्रसाद द्विवेदी

इकाई 7 : सोहनलाल द्विवेदी एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 मूल पाठ : सोहनलाल द्विवेदी एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

7.3.1 सोहनलाल द्विवेदी : व्यक्तित्व

7.3.2 सोहनलाल द्विवेदी : कृतित्व

7.3.3 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : व्यक्तित्व

7.3.4 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : कृतित्व

7.3.5 सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के कवि

7.4 पाठ सार

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

7.6 शब्द संपदा

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के सशक्त कवि सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा नवीन का स्थान महत्वपूर्ण है। आप दोनों भारतीय समाज के जागरूक कवि थे और उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक गौरव और सामाजिक जागरूकता की भावना प्रमुखता से व्यक्त होती है। उनका साहित्य न केवल हिंदी कविता के लिए, बल्कि भारतीय संस्कृति के लिए भी एक अमूल्य धरोहर माना जाता है। कविद्वय ने केवल साहित्यिक रचनाओं द्वारा ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय योगदान द्वारा चेतना जगाने का कार्य किया।

7.2 उद्देश्य

छात्रो! आप इस पाठ्यक्रम के सप्तम इकाई सोहनलाल द्विवेदी एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पढ़ने जा रहें है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- सोहनलाल द्विवेदी के जीवन के बारे में जान सकेंगे।
- सोहन लाल द्विवेदी के कृतित्व के बारे में जान सकेंगे।

- बालकृष्ण शर्मा नवीन के जीवन के बारे में जान सकेंगे।
- बालकृष्ण शर्मा नवीन के कृतित्व के बारे में जान सकेंगे।
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के कवि के बारे में जान सकेंगे।

7.3 मूल पाठ : सोहनलाल द्विवेदी एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

छात्रो! सोहनलाल द्विवेदी एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में जानने का प्रयास करेंगे।

सोहनलाल द्विवेदी हिंदी साहित्य के एक प्रमुख कवि, लेखक और समाज सुधारक थे, जिनका योगदान साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वे विशेष रूप से अपनी कविताओं और काव्य-रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं, जिन्होंने भारतीय समाज के प्रति जागरूकता और राष्ट्रीयता की भावना को प्रगाढ़ किया। उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक दृष्टि से नहीं, बल्कि समाज की समस्याओं और स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध कवि, लेखक और साहित्यकार थे, जिनका योगदान हिंदी साहित्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वे विशेष रूप से अपनी कविता, कहानी और निबंध लेखन के लिए जाने जाते हैं। उनका लेखन जीवन के विभिन्न पहलुओं, सामाजिक मुद्दों और मानवीय संवेदनाओं को गहरे और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करता था।

7.3.1 सोहन लाल द्विवेदी : व्यक्तित्व

राष्ट्रीय चेतना के सशक्त कवि, गांधीवाद के प्रखर प्रवक्ता सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत, ओजस्वी वाणी तथा तेजस्वी व्यक्तित्व के स्वामी कविवर पंडित सोहनलाल द्विवेदी का जन्म उत्तरप्रदेश के फतेहपुर जिले के एक कस्बे बिंदकी में, एक संपन्न एवं प्रतिष्ठित परिवार में 4 मार्च सन् 1906 को हुआ था। आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पितामह श्री भिखारी लाल द्विवेदी और पिता पंडित वृंदावन प्रसाद द्विवेदी थे। उनके पिता भारतीय जीवन मूल्यों एवं आदर्शों के प्रतीक पुरुष थे। उनके पिताजी बिंदकी कस्बे के दीवानी फौजदारी दोनों के न्यायाधीश थे। कस्बे में उनकी धाक थी। यही दिलेरी और धाक दोनों भाइयों (मोहनलाल और सोहनलाल द्विवेदी) को समान रूप से मिली थी। वृंदावन प्रसाद द्विवेदी बिंदकी के जनता के दुख दर्द को समझते थे। लोगों की जटिल से जटिल समस्याओं का सुखद समाधान करने का निस्वार्थ भाव से प्रयास करना उनके जीवन में अभिन्न अंग बन गया था। बालक सोहनलाल द्विवेदी अभी केवल सात वर्ष के ही थे कि इनके पिता का सन् 1912 में देहांत हो गया। पितृ स्नेह से वंचित बालक को, उनकी माता श्रीमती शिवप्यारी का भरपूर ममत्व मिला। अग्रज पंडित मोहनलाल द्विवेदी के अभिभावकत्व में, संरक्षण में इनका पालन-पोषण एक राजकुमार की तरह हुआ। ये तीन भाई थे-चंद्रिका प्रसाद द्विवेदी,

मोहनलाल द्विवेदी तथा सोहनलाल द्विवेदी। चंद्रिका प्रसाद द्विवेदी का अल्पावस्था में ही देहावसान हो गया था। अतः सोहनलाल द्विवेदी ने ही पूरे परिवार की देख रेख का उत्तरदायित्व बहुत स्नेह एवं धैर्य से संपन्न किया।

सोहनलाल द्विवेदी के जीवन निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास में उनके अग्रज का बहुत ही महत्वपूर्ण योग रहा है। सोहनलाल द्विवेदी की चार बहनें थी - शिवरानी, सुखरानी, जगरानी और अनुसूया। इन चारों बहिनों का सोहनलाल द्विवेदी को भरपूर स्नेह मिला। बालक सोहनलाल द्विवेदी की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। उन्हें अपने कुल पुरोहित ने हिंदी का ज्ञान कराया और मौलवी असगर आली से इन्होंने उर्दू भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। छठी कक्षा तक की पढ़ाई इन्होंने बिंदकी में ही पूर्ण की। फतेहपुर के एंग्लो संस्कृत विद्यालय में यह सातवीं कक्षा में प्रविष्ट हुए। श्री रामचरण दुबे के मकान में रहते हुए उन्होंने यहाँ अपनी शिक्षा के क्रम को जारी रखा। श्री रामचरण दुबे एक प्रकार से फतेहपुर में बालक सोहनलाल द्विवेदी के संरक्षक एवं अभिभावक थे। इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्रीधर राव गोरे थे, जो महाराष्ट्रीय ब्राह्मण तथा राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत थे। उसी राजकीय विद्यालय फतेहपुर के हिंदी अध्यापक पंडित बलदेव प्रसाद शुक्ल ने बालक सोहनलाल को उच्च नैतिक मूल्यों आदर्शों की शिक्षा देकर इन्हें सदाचार, संयम एवं मर्यादा पालन के संस्कार प्रदान किए।

प्रिंस ऑफ वेल्स के 27 नवंबर 1921 को भारत आगमन पर, उनके स्वागतार्थ देश भर के विद्यालयों में मिठाई बांटी गई। सोहनलाल द्विवेदी ने इस मिठाई वितरण का विरोध करते हुए कहते है, "मुझे नहीं चाहिए यह मिठाई। मास्टर साहब, गुलामी के लड्डू खाने के बदले आजादी के कहने चबाना बेहतर है।" हिंदी प्राध्यापक पंडित बलदेव प्रसाद शुक्ल ने किशोर सोहनलाल को आत्मबल, संयम एवं आदर्श जीवन के पाठ पढाना प्रारंभ किया। फतेहपुर में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने अंग्रेज शासन के विरुद्ध ऐसा प्रभावोत्पादक भाषण दिया की संपूर्ण नगर में हलचल मच गई। इसका प्रभाव सोहनलाल के किशोर मानस पर भी पड़ा। साथ ही गाँधी जी के चरखा और खाड़ी के अभियान का भी उनपर पर्याप्त प्रभाव पड़ा परिणामस्वरूप उन्होंने विदेशी वस्त्रों का त्याग करते हुए खादी को ग्रहण किया।

हिंदू विश्वविद्यालय काशी उच्च शिक्षा के लिए प्रमुख केंद्र था। यहाँ बाबू श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आदि प्रसिद्ध एवं विशेषज्ञ प्राध्यापक थे, तो दूसरी ओर राष्ट्रीय विचारधारा से परिपुष्ट वातावरण का प्रसिद्ध केंद्र भी था। 1927 में सोहनलाल द्विवेदी ने इस विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया। वार्षिकोत्सव के समय मदान मोहन मालवीय जी की अध्यक्षता में सोहनलाल ने राणा प्रताप वाली ओजस्वी कविता को सस्वर पाठ किया। जिसकी भूरी-भूरी प्रशंसा मालवीय जी ने की। 1930 में बी. ए की उपाधि प्राप्त करने के बाद बैरिस्टरी करने विलायत जाने से पहले मालवीय जी के पास गए। मालवीय जी की बात सुन उन्होंने विदेश जाने का विचार त्याग दिया। वकालत पढ़ने के लिए प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया। सन् 1933 में उन्होंने एम. ए, एल. एल. बी. की द्वि-विषयक उपाधियाँ प्राप्त की।

1935 में फतेहपुर जिला परिषद के सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए। उक्त पद पर 8 वर्षों तक कार्य किया और परिषद की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करते रहे। 1938 से 1944 तक लखनऊ से प्रकाशित दैनिक अधिकार का सम्पादन कार्य पूर्ण दक्षता के साथ संपन्न किया। 1957 से 1968 तक इंडियन प्रेस प्रयाग से प्रकाशित 'बाल साहित्य' नामक पत्रिका का सम्पादन कार्य वे करते रहे। 1962 में बिंदकी में शिशु भारती नामक शिक्षा संस्था की स्थापना की। 20 मार्च 1964 को आप बिंदकी नगरपालिका के सर्वसम्मति से अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किए गए। 1968 में उत्तरप्रदेश शासन द्वारा उन्हें जनपद के जेल निरीक्षक के स्थान पर नियुक्त किया गया।

हिंदी साहित्य की अनुपम कृतियों का सृजन करने वाले राष्ट्र कवि सोहनलाल द्विवेदी का 1 मार्च 1988 को 82 वर्ष की आयु में राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी का निधन हुआ।

सम्मान : उनकी साहित्यिक एवं विविध क्षेत्रीय बहुविध सेवाओं को देखते हुए कलावलय सांस्कृतिक संस्था कानपुर ने 1964 में ताम्र पत्र पुरस्कार प्रदान किया। 1969 में राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर ने साहित्य चूडामणि पुरस्कार। 14 सितंबर 1969 को एक भव्य समारोह में पंडित सोहनलाल द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ 'एक कवि: एक देश' का लोकार्पण हुआ। 1969 में आपको भारत सरकार ने पद्मश्री उपाधि से सम्मानित किया।

बोध प्रश्न

- सोहनलाल द्विवेदी के जीवन निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास में किसकी भूमिका उल्लेखनीय है?
- बिंदकी में सोहनलाल द्विवेदी में किस संस्था की स्थापना की थी?
- सोहनलाल द्विवेदी के अभिनंदन ग्रंथ का क्या नाम है?

7.3.2 सोहनलाल द्विवेदी: कृतित्व

सोहनलाल द्विवेदी हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण कवि, निबंधकार और समालोचक थे। उनका व्यक्तित्व एक सशक्त साहित्यकार के रूप में उभरा। उनकी कविताओं में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों पर गहरी समझ और संवेदनशीलता का अहसास होता है। वे अपने समय के सामाजिक मुद्दों से जुड़े रहे और उनके लेखन में समकालीन समस्याओं का चित्रण होता था। उनका लेखन बहुत ही प्रेरणादायक और विचारशील था और उन्होंने हिंदी साहित्य को अपनी कई रचनाओं से समृद्ध किया। वे एक संवेदनशील, गंभीर और गहरी सोच रखने वाले लेखक थे, जिन्होंने समाज की समस्याओं को अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया। सोहनलाल द्विवेदी की कविताएँ जीवन, प्रेम, देशभक्ति, समाजवाद और मानवता जैसे विषयों को व्यक्त करती थीं। उनके लेखन में साहित्यिक शुद्धता, सरलता और सटीकता देखने को मिलती थी। वे विचारों की गहराई और शब्दों की ताकत को समझते थे और उसे पाठकों तक पहुँचाने में सक्षम थे। उनकी रचनाएँ आज भी हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं और उनकी काव्य-शैली को पढ़कर

नया दृष्टिकोण प्राप्त किया जा सकता है। उनका व्यक्तित्व उनकी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज और संस्कृति के प्रति उनके योगदान को दर्शाता है। वे एक समाज सुधारक और राष्ट्रीय चेतना के कवि के रूप में हिंदी साहित्य जगत में उभरे।

सोहनलाल द्विवेदी हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि थे, जिन्होंने अपनी कविताओं और लेखन के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीयता, संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम को महत्वपूर्ण स्थान दिया। सामाजिक और राष्ट्रीय जागरूकता उनकी कविताओं का मुख्य स्वर था। उनकी कई काव्य रचनाएँ भारतीय समाज और संस्कृति की महानता को उजागर करती हैं। सोहनलाल द्विवेदी का उपनाम था सागर।

सोहनलाल द्विवेदी की प्रमुख पुस्तकों और काव्य रचनाओं में निम्नलिखित शामिल हैं:

भारत माता: यह सोहनलाल द्विवेदी की सबसे प्रसिद्ध काव्य रचनाओं में से एक मानी जाती है। इस कविता में उन्होंने भारत को मातृभूमि के रूप में प्रस्तुत किया है और भारतीय जनता को एकजुट होकर देश की सेवा करने की प्रेरणा दी है। इस कविता के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव को व्यक्त किया है।

नवजीवन : 'नवजीवन' एक अन्य महत्वपूर्ण काव्य रचना है जिसमें सोहनलाल द्विवेदी ने समाज में नये विचारों और बदलाव की आवश्यकता पर जोर दिया है। इस काव्य में उन्होंने समाज के सुधार की दिशा में विचार व्यक्त किए हैं और देशवासियों को नई ऊर्जा और जागरूकता देने का प्रयास किया है।

वीर शिवाजी : यह काव्य रचना भारतीय इतिहास के एक महान वीरता और शौर्य की मिसाल, छत्रपति शिवाजी महाराज पर आधारित है। सोहनलाल द्विवेदी ने इस कविता में शिवाजी की वीरता और संघर्ष को प्रदर्शित किया है, जिससे भारतीय समाज में वीरता और साहस की भावना को प्रोत्साहन मिला।

भारतेंदु हरिश्चंद्र : यह पुस्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र के योगदान और उनकी साहित्यिक दृष्टि पर आधारित है। सोहनलाल द्विवेदी ने इस रचना में भारतेंदु हरिश्चंद्र की काव्य शक्ति और उनके साहित्यिक योगदान को उजागर किया है।

हिमालय : इस काव्य संग्रह में सोहनलाल द्विवेदी ने हिमालय के अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य और उसकी महानता का वर्णन किया है। यह काव्य संग्रह देश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को सम्मानित करने के उद्देश्य से लिखा गया है।

भारत कोकिला : इस काव्य में उन्होंने भारत की महानता और संस्कृति का चित्रण किया।

आओ फिर से दीप जलाएँ : यह कविता देशवासियों को एकजुट करने और राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का प्रयास है।

वीरता का गीत : यह काव्य भारतीय सैनिकों और स्वतंत्रता सेनानियों की साहसिकता और बलिदान को सम्मानित करता है। इसमें संघर्ष और बलिदान के महत्वपूर्ण पहलुओं का चित्रण किया गया है, जहाँ कवि यह दर्शाता है कि वीरता केवल युद्ध में नहीं, बल्कि जीवन के हर संघर्ष में दिखाई जाती है। यह कविता हमें अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है और समाज के लिए बलिदान की भावना को पुष्ट करती है।

संग्राम शेष है : यह रचना भारतीय समाज के संघर्ष और संघर्ष के महत्व को दर्शाती है।

हिमालय की पुत्री : इस रचना में उन्होंने हिमालय और उसकी महिमा का चित्रण किया है।

समाज की गाथाएँ : यह कविता सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर केंद्रित है और समाज में व्याप्त असमानताओं को उजागर करती है।

आत्मबल : इसमें आत्मनिर्भरता और आत्मबल की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।

इनकी अन्य रचनाओं में किसान, भैरवी, कुणाल, पूजा गीत, दूध बताशा, बाँसुरी, चेतन, झरना, बाल भारती, हंसो-हँसाओ आदि उल्लेखनीय हैं।

संपादन : आपने बालसखा (बाल साहित्य की पत्रिका) और अधिकार (दैनिक पत्र) का संपादन कार्य किया।

बोध प्रश्न

- सोहनलाल द्विवेदी की प्रमुख रचनाओं का नाम बताइए।
- सोहनलाल द्विवेदी का उपनाम क्या था?
- सोहनलाल द्विवेदी द्वारा संपादित बाल पत्रिका का नाम बताइए।

सोहनलाल द्विवेदी की रचनाएँ उनके समय के समाज, संस्कृति और राष्ट्रीय जागरण से संबंधित थीं और आज भी उनका लेखन प्रासंगिक है। उन्होंने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनता को जागरूक किया और उन्हें राष्ट्रीयता, वीरता और भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मानित किया। सोहनलाल द्विवेदी की प्रमुख रचनाएँ उनके सांस्कृतिक और राष्ट्रीय दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। उनकी कविताएँ साहित्यिक समाज में एक विशेष स्थान रखती हैं। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय समाज को जागरूक करने की कोशिश की। सोहनलाल द्विवेदी ने अपनी काव्य धारा के माध्यम से हिंदी साहित्य में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनका लेखन आज भी हमें भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता और समाज के प्रति जागरूकता की दिशा में मार्गदर्शन देता है। वे अपनी कविताओं के माध्यम से हमेशा भारतीय समाज को जागरूक करते रहे और आज भी उनके विचारों का प्रभाव साहित्य में महसूस किया जाता है। सोहनलाल द्विवेदी हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि रहे हैं और उनकी रचनाएँ साहित्यिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण मानी

जाती हैं। उनकी काव्य-रचनाएँ भारतीय संस्कृति, समाज और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत थीं।

बोध प्रश्न

- उनकी कविताओं का अमुख्य स्वर क्या था?

7.3.3 बालकृष्ण शर्मा नवीन: व्यक्तित्व

बालकृष्ण शर्मा का जन्म 8 दिसम्बर 1897 ई. को तत्कालीन ग्वालियर राज्य के भ्याना नामक गाँव में हुआ था। इनके पूर्वज ग्वालियर के गोदा गाँव के हैं। परिवार वल्लभाचार्य के वैष्णव संप्रदाय में विश्वास रखता था। इनके पिता तेज मिजाज लेकिन सरल हृदय के व्यक्ति थे। पिता के समान बालकृष्ण जी में भी त्याग एवं प्रखर स्वाभिमान के गुण समाहित थे। इनका बचपन गरीबी में बीता। माता चक्की पीस कर तथा दूसरों के यहाँ काम करके घर चलती थी।

बालकृष्ण जब आठ बरस के थे तब उन्हें पढ़ने के लिए नाथद्वारा भेज दिया गया। वहाँ पढ़ाई के बजाय शरारत करते थे अतः वापिस आकार शाजापुर के मिडिल स्कूल में भर्ती कर दिया गया। बालक नवीन को बचपन से ही नाटक में हिस्सा लेने की इच्छा थी। 1913 में मिडिल स्कूल में थे तभी मुद्रा राक्षस नाटक में वे चंद्र गुप्त बने, इस प्रकार हमेशा मंच पर ही कार्य करते रहे। यही कारण था की उनमें अभिनय तथा व्याख्यान देने के गुण का विकास हुआ। बाद में दिनों में राष्ट्रीय आंदोलन को सक्रिय सहयोग देते हुए वे अपने भाषणों से जनता में जागृति लाने का प्रयास करते रहे।

मिडिल स्कूल में पढ़ते समय उनकी मित्रता एक मराठी भाषा छात्र से हुई। उसका नाम सतु था। इसके चरित्र से प्रभावित होकर नवीन जी ने एक कहानी की रचना कर डाली। यह उनकी पहली कहानी थी। यह तत्कालीन सरस्वती पत्रिका छपी थी। अपने माता पिता से उन्होंने भक्ति के गीत सीखे तथा ब्रजभाषा की कविताएँ भी याद की। धीरे-धीरे हिंदी, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा के साहित्य से उनका लगाव बढ़ता गया। सीखने के ललक उनमें पहले से ही थी। केवल एक क्षेत्र में है बल्कि कई क्षेत्रों में। जैसे तैराकी, पहलवानी आदि में भी उन्होंने महारत हासिल की। सरस्वती पत्रिका के माध्यम से उनमें साहित्यिक रुचि का विकास हुआ।

सन् 1916 में लखनऊ के काँग्रेस अधिवेशन का उनके जीवन में विशेष स्थान रहा। इस अधिवेशन में वे कवि माखन लाल चतुर्वेदी के साथ गए थे। वहाँ उनकी मुलाकात गणेश शंकर विद्यार्थी और मैथिलीशरण गुप्त से भी हुई। अपने इस सौभाग्य का वर्णन उन्होंने चिंतन स्मृति अंक में बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। इसी अधिवेशन में उन्होंने देश के महान नेताओं का भाषण भी सुन। इनमें थे गणेश शंकर विद्यार्थी ने नवीन जी को क्राइस्ट चर्च कॉलेज में भर्ती कर दिया। नवीन जी ने यहाँ से 1917 में इन्टरमीडीएट की परीक्षा पास की थी। देश में राजनीतिक आंदोलन का दौर चल रहा था ऐसे में बालकृष्ण कैसे चुप बैठ सकते थे। जब गाँधी जी ना असहयोग आंदोलन

की शुरुआत की तब नवीन जी भी उसमें कूद पड़े। देश के लिए उनका जीवन समर्पित रहा। उन दिनों वे कानपुर के एकमात्र छात्र नेता थे। उत्तर प्रदेश के राजनीतिक नेताओं में उनका नाम हमेशा स्मरणीय रहेगा। सन् 1952 से मृत्यु पर्यंत यथार्थ 29 अप्रैल 1960 तक वे संसद सदस्य भी रहे।

सम्मान : 1952 से 1960 तक संसद के सदस्य। 1955 से 1960 तक राजभाषा आयोग के सदस्य। 1960 में पद्मभूषण से सम्मानित।

बोध प्रश्न

- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की साहित्यिक रुचि किस पत्रिका के माध्यम से बढ़ा?

7.3.4 बालकृष्ण शर्मा नवीन: कृतित्व

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का साहित्यिक जीवन समृद्ध और विविधताओं से भरा हुआ था। वे न केवल एक उत्कृष्ट कवि थे, बल्कि एक प्रबुद्ध विचारक भी थे। उनकी रचनाएँ शुद्ध साहित्यिकता के साथ-साथ समाज को जागरूक करने वाली और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाने वाली होती थीं। उनके लेखन में मानवीय मूल्यों, नैतिकता और समाज की वास्तविकताओं की खोज होती थी। उनकी कविताएँ सरल, लेकिन गहरी होती थीं। वे अपनी कविताओं के माध्यम से समाज को एक नया दृष्टिकोण देने का प्रयास करते थे।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता और समाज की समस्याओं पर विचार किया जाता था और वे यह चाहते थे कि समाज में सुधार हो। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ साहित्यिक दुनिया में महत्वपूर्ण मानी जाती हैं, और उनका योगदान हिंदी साहित्य में अमूल्य रहेगा। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की रचनाओं ने न केवल पाठकों को प्रेरित किया, बल्कि उन्हें समाज और संस्कृति के प्रति जागरूक भी किया।

नवीन जी बचपन से ही साहित्य में रुचि रखते थे। लेखन का कार्य उन्होंने इंदौर से शुरू किया किन्तु 1917 में गणेश शंकर विद्यार्थी से मिलने के बाद उन्होंने व्यवस्थित ढंग से लेखन कार्य शुरू किया। वे तत्कालीन एक महत्वपूर्ण पत्र प्रताप से जुड़ गए। वे इस पत्र के संपादक भी रहे। राष्ट्रीय काव्य धारा को प्रचारित करने वाली पत्रिका प्रभा का भी लगभग वर्षों तक संपादन भी किया। नवीन जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है- दीपमाला, कुमकुम, रश्मिरेखा, अपलक, कवासि, विनोबास्तवन, उर्मिला, प्राणर्पण, हम विषपायी जनम के, अर्चना के फूल, आधुनिक हिंदी काव्य, आधुनिक काव्य संग्रह, आकाशवाणी काव्य संगम (भाग- 1), आकाशवाणी काव्य संगम (भाग -2), कवि भारती, कविताएँ, कवियों की झांकी काव्य सरोवर, काव्य धारा, गाँधी अभिवादन, निकुंज, परिचय, पुष्कतरिणी, भारतीय कविता, मुंशी अभिनंदन ग्रांट, राष्ट्रीय कविताएँ, राजधानी के कवि, रूपबश, साहित्य चयन, सौहार्द्र सुमन, संकेत, हिंदी के वर्तमान कवि और उनका काव्य, हिंदी के सर्वश्रेष्ठ प्रेमगीत।

बोध प्रश्न

- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं का मुख्य स्वर क्या है?
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' किस पत्रिका के संपादन से जुड़े हुए थे?
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की प्रमुख रचनाओं का नाम बताइए।

7.3.5 सोहनलाल द्विवेदी एवं बालकृष्ण नवीन : राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के कवि

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा से तात्पर्य उस काव्य धारा से है, जो भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीयता के संदर्भ में लिखी गई हो। यह काव्य धारा भारतीय समाज के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तत्वों को अभिव्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनती है, जिसमें राष्ट्रवाद, समाज सुधार और देशभक्ति के विचार प्रमुख होते है। राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धार का उद्देश्य केवल कविता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतन और समाज के आदर्शों को प्रस्तुत करना ही नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत करने का कार्य करती थी। इस काव्य धारा में मुख्य रूप से भारतीयता, राष्ट्रीय एकता, समाज सुधार और उपनिवेशवाद से मुक्ति के विचारों को उभारने की कोशिश की जाती है।

राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य धारा की प्रमुख विशेषताएँ

1. **देशभक्ति और राष्ट्रीयता :** इस काव्य धारा में देश के प्रति प्रेम, गौरव और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए कवियों ने काव्य रचनाएँ की। जैसे कि स्वाधीनता संग्राम के समय कवि अपनी कविताओं में देश की स्वतंत्रता के महत्व और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ़ विद्रोह को व्यक्त करते थे।
2. **भारतीय संस्कृति और परंपराएँ :** इस काव्य धारा में भारतीय संस्कृति, धरोहर और परंपराओं का संरक्षण और प्रचार किया जाता है। कवि भारतीय समाज की विविधता, रीति रिवाज और सभ्यता को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करते थे, ताकि जनमानस में अपनी सांस्कृतिक पहचान को लेकर गर्व और जागरूकता उत्पन्न हो सके।
3. **समाज सुधार और जागरूकता :** राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा में समाज के सुधार की दिशा में भी कवि अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करते थे। उन्होंने जातिवाद, अस्पृश्यता, अंधविश्वास और सामाजिक असमानता के खिलाफ कविता लिखकर लोगों को जागरूक किया।
4. **स्वतंत्रता संग्राम और संघर्ष :** इस काव्य धारा में स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित कविताएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती थी, जिनमें राष्ट्र के स्वतंत्रता संग्रामियों के संघर्षों को और उनके बलिदानों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती थी। कवियों ने अपने शब्दों से देशवासियों को अंग्रेजी शासन के खिलाफ जागरूक किया और प्रेरित किया।

बोध प्रश्न

- राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य धारा से क्या तात्पर्य है?

- राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य धारा की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

राष्ट्रीय काव्य धारा के कवि सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' दोनों भारतीय साहित्य के महत्वपूर्ण कवियाँ हैं जिन्होंने राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य धारा को समृद्ध किया। उनका काव्य लेखन भारतीय संस्कृति, समाज और राष्ट्रीयता के प्रति गहरे प्रेम और जागरूकता को दर्शाता है। सोहन लाल द्विवेदी का काव्य लेखन भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के प्रति गहरी निष्ठा को दर्शाता है। उन्होंने अपनी कविताओं में भारतीय समाज की समस्याओं, देशभक्ति और सांस्कृतिक एकता पर जोर दिया। वहीं बालकृष्ण शर्मा नवीन हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण कवि और लेखक थे, जिनका योगदान विशेष रूप से राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने अपने काव्य और साहित्यिक कार्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम की भावना को प्रेरित किया। उनका साहित्य भारतीय समाज के जागरण और सांस्कृतिक चेतना के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बना। उनकी कविताओं में प्रमुख रूप से निम्नलिखित विशेषताओं को देखा जा सकता है -

देशभक्ति और राष्ट्रीय जागरूकता : सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं में भारतीय राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम के प्रति गहरी आस्था व्यक्त की जाती थी। उनके काव्य में देशप्रेम और स्वतंत्रता का विशेष रूप से उल्लिखित किया गया है। वे भारतीय समाज को जागरूक करने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। उनका काव्य समय के संघर्षों को दर्शाता है और यह प्रेरित करता है कि भारत को स्वतंत्र और समृद्ध बनाना चाहिए।

सोहनलाल द्विवेदी की प्रसिद्ध कविता 'वीरता का गीत' इसका प्रमुख उदाहरण है, जिसमें उन्होंने देशभक्ति और वीरता को प्रमुख स्थान दिया है। इस कविता में वे भारतीय सैनिकों और स्वतंत्रता सेनानियों की वीरता का वर्णन करते हैं। वे यह बताते हैं कि देश की रक्षा में अपनी जान की बाजी लगाने वाले नायक केवल युद्ध भूमि में ही नहीं, बल्कि हर क्षेत्र में अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र की सेवा करते हैं। राष्ट्र के प्रति श्रद्धा और देश की रक्षा में बलिदान देने वालों के प्रति सम्मान की भावना को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा था - भारत की भूमि को है शहीदों का प्रणाम। 'हम जीवित हैं, तो हमें अपने देश के लिए कुछ करना चाहिए' कहकर उन्होंने जागरूकता का संदेश दिया है। इस कविता के माध्यम से कवि यह बताते हैं कि राष्ट्र की प्रगति के लिए हम सभी को अपने कर्तव्यों को निभाना चाहिए। यह केवल युद्ध के मैदान तक सीमित नहीं है, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझे।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं में भी देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना का जागरण प्रमुख रूप से दिखाई देता है। उनकी कविता का उद्देश्य न केवल बच्चों में देशप्रेम का बीजारोपण करना था, बल्कि उन्हें समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का अहसास भी कराना था। वे भारतीय

समाज की समस्याओं के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए अपने काव्य का उपयोग करते थे। उनकी कविताओं में देश की स्वतंत्रता, राष्ट्र की एकता और समाज के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना का अभिव्यक्त हो जाता है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता 'भारत माता की जय' में यह भावना प्रकट होती है कि देश की एकता और अखंडता के लिए सभी नागरिकों को एकजुट होकर काम करना चाहिए। उनकी कविताएँ न केवल बच्चों को देशभक्ति का पाठ पढ़ाती हैं, बल्कि उन्हें यह समझाती हैं कि हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपनी मातृभूमि की सेवा करे। उदाहरण के लिए 'हर बच्चा भारत का एक दीपक है, उसे जलाए रखो' की पंक्ति के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया कि देश की नज़र में हर बच्चा देश की नई रौशनी है। बच्चों में राष्ट्रीय जागरूकता और देशभक्ति का बीज डालने की ज़रूरत है, ताकि वे अपने कर्तव्यों को समझ सकें और समाज में सुधार के लिए प्रयास करें।

बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविताओं में भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रति आस्था और सम्मान दिखाई देता है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से भारतीयों को जागरूक किया और भारतीय संस्कृति के महत्व को समझाया। उनकी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम और विदेशी शासन के खिलाफ विद्रोह की भवन प्रकट होती थी। सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं में भारतीय राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम की गहरी छाप थी। उनका लेखन भारतीय जनता को अंग्रेजी शासन के खिलाफ जागरूक करने का एक प्रयास था। उनकी कविताएँ भारतीय समाज को एकजुट करने के लिए प्रेरित करती थीं। उन्होंने भारतीय संस्कृति, स्वतंत्रता और राष्ट्रीय सम्मान को सर्वोपरि रखा। उनकी कविताएँ वीरता, साहस और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत थीं। उनकी कविताओं ने भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जागरूकता और उत्साह को बढ़ावा दिया। "भारत माता" जैसी कविताओं के माध्यम से उन्होंने भारतीय जनमानस को मातृभूमि के प्रति श्रद्धा और सम्मान का संदेश दिया। सोहनलाल द्विवेदी की कविताएँ स्वतंत्रता संग्राम के समय लोगों के बीच एकजुटता और जोश का संचार करती थीं।

बोध प्रश्न

- राष्ट्रीय जागरूकता को दर्शाने वाली सोहन लाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं का उदाहरण दीजिए।

समाज सुधारक दृष्टिकोण : दोनों ही कवि अपने-अपने समय के समाज सुधारक दृष्टिकोण को अपनी कविताओं में प्रमुखता से प्रस्तुत करते थे। उन्होंने न केवल समाज की विडंबनाओं को उजागर किया, बल्कि सामाजिक सुधार के लिए लोगों को जागरूक भी किया। दोनों ही कवि अपने काव्य के माध्यम से समाज में बदलाव की आवश्यकता को महसूस करते थे और इसके लिए प्रेरित करते थे।

सोहन लाल द्विवेदी ने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वास और जातिवाद के खिलाफ समाज सुधार की आवश्यकता को बाल दिया गया है। उन्होंने अपनी कविताओं में सामाजिक असमानता और अन्याय के खिलाफ जागरूकता पैदा की और भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता को समाप्त करने की वकालत की। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वास और अन्याय के खिलाफ अपनी कविताओं के माध्यम से आवाज उठाई। वे समाज सुधारक दृष्टिकोण से हमेशा सक्रिय रहे। उन्होंने विशेष रूप से सामाजिक असमानता, जातिवाद और पिछड़ी हुई सामाजिक व्यवस्थाओं के खिलाफ अपने विचार व्यक्त किए। सोहनलाल द्विवेदी ने अपने काव्य के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वास और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई। वे मानते थे कि समाज में बदलाव के लिए जागरूकता और शिक्षा का प्रसार आवश्यक है। उनकी कविताओं ने जनमानस को सुधार और जागरूकता के लिए प्रेरित किया।

सोहनलाल द्विवेदी ने 'हिमालय' कविता में 'हिमालय से आवाज उठाओ, मानवता का उल्लंघन मत करो' कहकर समाज में व्याप्त असमानताओं और शोषण के खिलाफ एक स्पष्ट संदेश दिया है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने बच्चों को समाज के प्रति जागरूक बनाने का प्रयास किया है। उनका मानना था कि बच्चों को सही शिक्षा और संस्कार दिए जाएं तो वे समाज में बदलाव लाने में सक्षम होंगे।

सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' दोनों ही कवि समाज सुधारक दृष्टिकोण से भरे हुए थे। सोहनलाल द्विवेदी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, असमानताओं और अन्याय के खिलाफ अपनी कविताओं के माध्यम से जागरूकता फैलाने का प्रयास किया, जबकि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने बच्चों में समाज सुधार और शिक्षा के महत्व को उजागर किया। दोनों ही कवियों ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव की दिशा में प्रेरणा दी और समाज को सुधारने के लिए जागरूक किया।

बोध प्रश्न

- दोनों कवियों ने किस प्रकार से समाज में जागरूकता फैलाने का काम किया है?

भारतीय संस्कृति का प्रसार : सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' दोनों ही कवियों की कविताओं में भारतीय संस्कृति का प्रसार और प्रचार बहुत महत्वपूर्ण विषय था। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया और समाज में इसके महत्व को पहचानने के लिए प्रेरित किया। दोनों ही कवि भारतीय संस्कृति, परंपरा और मूल्यों को आत्मसात करने का संदेश देते थे।

भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय एकता को दोनों की कविताओं में देखा जा सकता है। सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं में भारतीय संस्कृति का प्रतीक 'हिमालय' बहुत प्रमुख है। इस

कविता में उन्होंने भारतीय संस्कृति की महानता और उसे संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित किया है। वे मानते थे कि भारतीय संस्कृति अपनी सशक्त परंपराओं और मूल्यों से ही जीवित रह सकती है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविताओं में भारतीय संस्कृति और मूल्यों के संरक्षण की जिम्मेदारी बच्चों पर डाली। उन्होंने बच्चों को भारतीय संस्कृति के रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, बच्चों को भारतीयता के प्रति जागरूक करना और भारतीय संस्कृति के महत्व को समझाना बहुत आवश्यक था। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने भारतीय संस्कृति की प्राचीनता और उसकी सशक्तता को अपनी कविताओं में प्रमुख रूप से व्यक्त किया। वे मानते थे कि भारतीय संस्कृति, जो कि आत्म-निर्भरता, अहिंसा और समर्पण के सिद्धांतों पर आधारित है, उसे हर हाल में संरक्षित किया जाना चाहिए।

सोहनलाल द्विवेदी ने अपनी कविताओं में भारतीय संस्कारों को भी प्रमुखता से प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति में न केवल धार्मिक, बल्कि नैतिक और सामाजिक मूल्य भी निहित हैं, जो जीवन को सही दिशा देते हैं। उन्होंने भारतीय परिवारों की सामूहिकता और भाईचारे की भावना को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया - 'संस्कारों का दीप जलाना, यह हमारी संस्कृति है।' बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने भारतीय संस्कृति को बचाए रखने के लिए बच्चों को जागरूक करने का कार्य किया।

बोध प्रश्न

- सोहनलाल द्विवेदी ने भारतीय संस्कृति को kइस प्रकार से अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है?
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने किस प्रकार भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया है?

समाज सुधार और जागरूकता : सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं में समाज सुधार और जागरूकता की प्रवृत्तियाँ प्रमुख रूप से उभरकर आती हैं। दोनों ही कवि भारतीय समाज की बुराइयों, कुरीतियों, और असमानताओं के खिलाफ थे, और उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में सुधार और जागरूकता फैलाने का कार्य किया। उनका उद्देश्य था कि समाज को जागरूक किया जाए और उसे बेहतर बनाने के लिए एक सकारात्मक दिशा दिखाई जाए।

सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं में समाज में व्याप्त कुरीतियों, असमानताओं और अन्याय के खिलाफ जागरूकता का भाव है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह समझाने का प्रयास किया कि समाज में बदलाव लाने के लिए हमें अपनी मानसिकता और विचारधारा में परिवर्तन लाना होगा। उनकी कविता 'हिमालय' में वे भारतीय समाज की जड़ों में फैली कुरीतियों और समाज में व्याप्त असमानताओं के खिलाफ संघर्ष का आह्वान करते हैं। वे मानते थे कि भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए समाज में व्याप्त इन कुरीतियों और विसंगतियों

को खत्म करना आवश्यक है। 'वीरता का गीत' में वे यह संदेश देते हैं कि केवल बाहरी शत्रुओं से ही नहीं, बल्कि समाज की अंदरूनी कुरीतियों से भी लड़ने की आवश्यकता है।

बालकृष्ण शर्मा नवीन ने अपने काव्य के माध्यम से सामाजिक मुद्दों और कुरीतियों के खिलाफ भी आवाज उठाई। उनका मानना था कि समाज में सुधार और जागरूकता लाने के लिए साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कविताओं ने भारतीय समाज को अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूक किया। वे समाज में समानता, न्याय और धर्म की स्थापना के पक्षधर थे।

सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' दोनों ही कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज सुधार और जागरूकता की महत्ता को उजागर किया। सोहनलाल द्विवेदी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, असमानताओं और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई, जबकि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने बच्चों को जागरूक किया और उन्हें भारतीय संस्कृति और समाज सुधार के लिए जिम्मेदार बनाया। दोनों कवियों ने समाज में सुधार लाने के लिए शिक्षा, सांस्कृतिक जागरूकता, और राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता पर जोर दिया।

स्वतंत्रता संग्राम और वीरता की भावना: सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम और वीरता की भावना का विशेष स्थान है। इन दोनों कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की महत्ता, शहीदों की वीरता और भारतीय समाज के संघर्ष को चित्रित किया। उनकी कविताओं में राष्ट्र प्रेम, वीरता और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की भावना प्रमुख रूप से व्यक्त हुई है।

सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम को बहुत सम्मानजनक स्थान दिया गया है। वे मानते थे कि भारतीय समाज को ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष करना ही होगा ताकि स्वतंत्रता प्राप्त की जा सके। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष को जन-जन के हृदय में जागरूक करने का कार्य किया। उनकी कविताएँ 'वीरता का गीत' और 'हिमालय' में इस प्रवृत्ति को देखा जा सकता है।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविताओं में देश के प्रति श्रद्धा और स्वतंत्रता संग्राम की भावना को अभिव्यक्त किया है। उनकी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की वीरता और बलिदान का उल्लेख किया गया है, जो भारतीय जनमानस के लिए प्रेरणा का स्रोत बनें। उनकी कविता 'भारत माता की जय' में इस भावना को भलीभाँति देखा जा सकता है। सोहनलाल द्विवेदी ने अपनी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों के बलिदान और वीरता को प्रेरणास्त्रोत के रूप में प्रस्तुत किया। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की वीरता और बलिदान को राष्ट्रीय गौरव के रूप में चित्रित किया और बच्चों को प्रेरित किया कि वे स्वतंत्रता के मूल्य को समझें और अपने कर्तव्यों को निभाएँ। दोनों कवियों ने अपनी रचनाओं के

माध्यम से भारतीय जनमानस में देशभक्ति, वीरता और स्वतंत्रता संग्राम के योगदान को जागरूक किया और उसे सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनाया।

बोध प्रश्न

- सोहनलाल द्विवेदी ने अपनी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम को किस प्रकार दर्शाया है?
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम को किस प्रकार दर्शाया है?

7.4 पाठ सार

सोहनलाल द्विवेदी का योगदान केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक जागरूकता और स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण था। उनके काव्य ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक गौरव की भावना को मजबूत किया, जिससे वे भारतीय काव्य धारा के प्रमुख हस्ताक्षर बने। बालकृष्ण शर्मा नवीन का राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा में योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक था। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम को उजागर किया, और सामाजिक जागरूकता को प्रोत्साहित किया। उनके काव्य ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक गौरव और जागरूकता की भावना को प्रबल किया। उनकी रचनाएँ आज भी भारतीय साहित्य और समाज में प्रासंगिक बनी हुई हैं।

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ -

1. सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने भारतीय समाज को जागरूक करने का भी कार्य किया। वे चाहते थे कि भारतीय समाज अपने कर्तव्यों को समझे और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाए।
2. सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' समाज सुधारक दृष्टिकोण से भरे हुए थे। सोहनलाल द्विवेदी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, असमानताओं और अन्याय के खिलाफ अपनी कविताओं के माध्यम से जागरूकता फैलाने का प्रयास किया, जबकि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने बच्चों में समाज सुधार और शिक्षा के महत्व को उजागर किया। दोनों ही कवियों ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव की दिशा में प्रेरणा दी और समाज को सुधारने के लिए जागरूक किया।
3. दोनों कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनमानस में देशभक्ति, वीरता, और स्वतंत्रता संग्राम के योगदान को जागरूक किया और उसे सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनाया।

4. सोहनलाल द्विवेदी ने अपनी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों के बलिदान और वीरता को प्रेरणास्त्रोत के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने देशवासियों को प्रेरित किया कि वे देश के लिए अपने कर्तव्यों का पालन करें और समाज में व्याप्त कुरीतियों से निपटने के लिए भी संघर्ष करें, जबकि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की वीरता और बलिदान को राष्ट्रीय गौरव के रूप में चित्रित किया और बच्चों को प्रेरित किया कि वे स्वतंत्रता के मूल्य को समझें और अपने कर्तव्यों को निभाएँ।

7.6 शब्द संपदा

1. अभियान	=	आंदोलन, किसी कार्य सिद्धि के लिए योजनाबद्ध ढंग से करनेवाला प्रयास
2. अल्पावस्था	=	अल्प आयु, काम उम्र
3. असमानता	=	एक समान न होने का भाव
4. अहिंसा	=	किसी भी प्रकार का कष्ट न देना
5. आत्म-निर्भरता	=	अपने आप पर आश्रित होना
6. उत्तरदायित्व	=	जिम्मेदारी
7. कुरीतियाँ	=	निंदनीय प्रथाएँ
8. जनमानस	=	जनता का मन
9. देहावसान	=	मृत्यु
10. प्रेरणास्रोत	=	प्रेरणा देनेवाला

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

7.7.1 सही विकल्प चुनिए

1. पंडित सोहनलाल द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के किस जिले में हुआ था?

A. वाराणसी **B. फतेहपुर** C. कानपुर D. लखनऊ

2. सोहनलाल द्विवेदी ने किस विदेशी राजकुमार के आगमन पर बांटी गई मिठाई का विरोध किया था?

A. किंग जॉर्ज पंचम B. क्वीन एलिजाबेथ **C. प्रिंस ऑफ वेल्स** D. प्रिंस एडवर्ड

3. सोहनलाल द्विवेदी ने 'साधना' और 'जागरण' के लिए किस 'उपनाम' का प्रयोग किया था?

A. मधु B. नवीन **C. सागर** D. राष्ट्रकवि

4. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का जन्म किस राज्य में हुआ था?

A. बिहार **B. ग्वालियर राज्य (वर्तमान मध्य प्रदेश)** C. राजस्थान D. उत्तर प्रदेश

5. नवीन जी की पहली कहानी किस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी?

A. सरस्वती B. प्रभा C. प्रताप D. चाँद

6. राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य धारा का मुख्य उद्देश्य क्या था?

A. दरबारी संस्कृति का गुणगान करना

B. भारतीय संस्कृति का गौरव और राष्ट्रीय चेतना जगाना

C. केवल प्रकृति का चित्रण करना

D. केवल धार्मिक कर्मकांडों को बढ़ावा देना

7. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' किस प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और संपादक के संपर्क में आने के बाद व्यवस्थित लेखन की ओर मुड़े?

A. मैथिलीशरण गुप्त B. मदन मोहन मालवीय

C. माखनलाल चतुर्वेदी **D. गणेश शंकर विद्यार्थी**

8. सोहनलाल द्विवेदी की वह कौन सी रचना है जो भारतीय सैनिकों के साहस को समर्पित है?

A. किसान **B. वीरता का गीत** C. दूध बताशा D. बाँसुरी

9. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' को भारत सरकार द्वारा किस सम्मान से अलंकृत किया गया था?

A. पद्मभूषण B. भारत रत्न C. साहित्य अकादमी पुरस्कार D. पद्मश्री

10. नवीन जी की कविताओं में बच्चों के लिए क्या विशेष संदेश दिया गया है?

A. केवल अभिनय और नाटक सीखने का

B. हर बच्चा भारत का एक दीपक है और उसे अपनी संस्कृति का रक्षक बनना चाहिए

C. विदेशी संस्कृति को अपनाने का

D. केवल पढ़ाई पर ध्यान देने का

खंड (ब)

7.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. सोहनलाल द्विवेदी के जीवन से संबंधित पहलुओं पर प्रकाश डालिए।
2. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के जीवन से संबंधित पहलुओं पर प्रकाश डालिए।
3. राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।
4. 'सोहनलाल द्विवेदी की कविता में देशभक्ति और राष्ट्रीय जागरूकता निहित है।' उदाहरण सहित इस उक्ति का निरूपण कीजिए।
5. 'बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने भारतीय संस्कृति को बचाए रखने के लिए बच्चों को जागरूक करने का कार्य किया।' आप इस कथन से कहाँ तक सहमत है उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

7.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. सोहनलाल द्विवेदी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
2. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं में निहित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक तत्वों का निरूपण कीजिए।
4. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं में निहित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक तत्वों का निरूपण कीजिए।
5. सोहनलाल द्विवेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविताओं में निहित देशप्रेम और सांस्कृतिक संवेदना को उदाहरण सहित रेखांकित कीजिए।

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा - राहुल अवस्थी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास - सं. नगेंद्र
3. नवजागरण कालीन कवियों की पहचान - हेमंत कुकरेती

इकाई 8 : 'बढे चलो, बढे चलो' एवं 'अरे तुम हो काल के भी काल' : व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 मूल पाठ : बढे चलो, बढे चलो' एवं 'अरे तुम हो काल के भी काल' व्याख्या
8.3.1 (अ) 'बढ़े चलो, बढ़े चलो'- सोहनलाल द्विवेदी
8.3.2 (आ) 'अरे तुम हो काल के भी काल – बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
8.4 पाठ सार
8.5 पाठ की उपलब्धियाँ
8.6 शब्द संपदा
8.7 परीक्षार्थ प्रश्न
8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई संख्या-8 का संबंध राष्ट्रीय काव्यधारा के साथ है। हिंदी साहित्य के अंतर्गत भारतेन्दु युग से राष्ट्रीय काव्यधारा का जागरण काल प्रारम्भ होकर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में पुनर्जागरण काल भारतीय राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना का कहा जाना उचित है। स्वतंत्र होने के लिए संपूर्ण भारत प्रयास कर रहा था। इस राष्ट्रीय अभियान में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि कवियों ने अपनी रचनाओं के द्वारा देश के वीरों को प्रोत्साहित किया था। इन कवियों ने अपनी कविताओं के द्वारा राष्ट्रवादी भावना का प्रचार-प्रसार किया। कवियों ने जनता को संगठित होने के लिए प्रोत्साहित किया। राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों की रचनाओं में विदेशी सत्ता की बर्बरता के प्रति विरोध की भावना थी। ये कवि अहिंसा तथा हिंसा दोनों ही प्रकार की भावनाओं को समयानुसार स्वीकार करने के लिए तैयार थे। जैसे- सोहनलाल द्विवेदी गांधीवादी विचारधारा को माननेवाले साहित्यकार थे तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' स्वाधीनता के लिए उग्र विचारधारा के समर्थक थे।

8.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप-

1. 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' सोहनलाल द्विवेदी द्वारा लिखित कविता की संपूर्ण व्याख्या को समझ सकेंगे।

2. 'अरे तुम हो काल के भी काल' बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' द्वारा लिखित कविता की संपूर्ण व्याख्या को समझ सकेंगे।

8.3 मूल पाठ : 'बढे चलो, बढे चलो' एवं 'अरे तुम हो काल के भी काल' : व्याख्या

8.3.1 (अ) 'बढ़े चलो, बढ़े चलो'- सोहनलाल द्विवेदी

बढ़े चलो, बढ़े चलो / सोहनलाल द्विवेदी

न हाथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न वीर वस्त्र हो,
हटो नहीं, डरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
रहे समक्ष हिम-शिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाए जन बिखर,
रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
घटा घिरी अटूट हो,
अधर में कालकूट हो,
वही सुधा का घूंट हो,
जिये चलो, मरे चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,
अड़ो वहीं, गड़ो वहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
चलो नई मिसाल हो,
जलो नई मिसाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो,
झुको नही, रूको नही, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
अशेष रक्त तोल दो,
स्वतंत्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,

डरो नही, मरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।

निर्देश : इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वचन कीजिए।

शब्दार्थ- 1. अस्त्र- मंत्रों के द्वारा फेंक कर चलाया जानेवाला हथियार, 2. शस्त्र- शस्त्र बनाने के लिए धातु, लकड़ी आदि का प्रयोग किया जाता है। 3. समक्ष-सामने 4. हिम-शिखर- बर्फ से ढके पर्वत, 5. अधर-होंठ 6. कालकूट-विष 7. सुधा- अमृत 8. गगन- आसमान 9. फाग- होली 10. मिसाल- उदाहरण 11. अशेष- unlimited, 12. कड़ी- बंधन/chain 13. युग- समय

(अ) न हाथ एक शस्त्र हो,---------- हटो नहीं, डरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि सोहनलाल द्विवेदी **हैं।**

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि सोहनलाल द्विवेदी देश की जनता और सैनिकों को जागृत करते हुए संबोधित करते हुए लिखते हैं मनोबल से अधिक कुछ नहीं होता। यह मत सोचो कि तुम्हारे हाथ में अस्त्र और शस्त्र नहीं है तो तुम निर्बल हो। माना कि आज तुम्हारे पास अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं है मन संदेहों से भरा हुआ है। यह मत भूलो कि तुम्हारी यह वीरतापूर्ण मनोभावना ही तुम्हारा अन्न, वस्त्र, मनोबल सब कुछ है। इसलिए अपनी वीर भावना को नष्ट मत होने दो और अपनी धरती से तुम हटो नहीं, डरो नहीं, आगे बढ़ते चलो, आगे बढ़ते चलो देश को तुम्हारी आवश्यकता है।

विशेषता- अस्त्र और शस्त्र दोनों का ही अर्थ हथियार है लेकिन दोनों शब्दों के अर्थ में अंतर तो अवश्य ही है। कवि ने वीरतापूर्ण भावना की अन्न-वस्त्र के साथ की है।

बोध प्रश्न

1. कवि ने अन्न-वस्त्र की तुलना किस भावना के साथ की है?
2. किसे वीरों की आवश्यकता है?

(ब) रहे समक्ष हिम-शिखर---------- रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि सोहनलाल द्विवेदी **हैं।**

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि सोहनलाल द्विवेदी देश की जनता और सैनिकों को जागृत करते हुए संबोधित करते हुए लिखते हैं संकट हमेशा बर्फ से घिरे हुए पर्वत चोटी समान ही दिखते हैं ऐसा लगता है कि जैसे उन्हें पार नहीं किया जा सकता लेकिन ऐसी सोच रखना कदापि उचित नहीं है क्योंकि ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान नहीं है। तुम अपने निर्णय शक्ति पर अडिग रहो। कठिन समय को दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा ही अनुकूल बनाया जा सकता है। जीवन यात्रा पर चलते हुए कई बार ऐसा दिखाई पड़ता है कि साथ में चलनेवाले लोग बिखर गए हैं या फिर वे सहायता करने को तैयार नहीं है ऐसे समय में भी घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने हिस्से का युद्ध स्वयं अकेले ही लड़ना पड़ता है। तुम अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित करो लेकिन यह आशा मत रखो कि हमेशा तुमको सबका साथ मिलेगा। तुम्हारा मित्र तुम्हारा साहस और मनोबल है। इन दोनों मित्रों को साथ लेकर ही हे वीर! तुम बिना रुके, बिना झुके आगे बढ़ते रहो।

विशेषता- हिम शिखरों की तुलना संकट के साथ की गई है। साथ ही कवि ने वीरों को साहस और दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा बिना रुके, बिना झुके आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है।

बोध प्रश्न

1. संकट किसके समान दिखता है?
2. कठिन समय को किसके अनुकूल बनाया जा सकता है?

(स) घटा घिरी अटूट हो,---------- जिये चलो, मरे चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि सोहनलाल द्विवेदी **हैं।**

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि सोहनलाल द्विवेदी देश की जनता और सैनिकों को जागृत करते हुए संबोधित करते हुए लिखते हैं कठिनाइयों के साथ तो हमेशा ही लड़ना पड़ता है। संकट के समय में ही तो व्यक्ति के चरित्र की वास्तविक परीक्षा होती है। भूलो मत तुम तो स्वयं महाकाल हो जिसने विष को भी मानवता के कल्याण हेतु अमृत समान पी लिया था। इसलिए हे वीर! कठिनाइयों को देखकर, चुनौतियों को देखकर घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। अपने लक्ष्य को स्थिर रखो और दृढ़ प्रतिज्ञ होकर उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते रहो। युद्ध में हार होगी या जीत इस विषय से भी अधिक महत्वपूर्ण विषय है लक्ष्य को स्थिर रखना क्योंकि कठिन परिस्थिति को देखकर लक्ष्य से पीछे हटना ही सबसे बड़ी हार है। जन्म और मृत्यु दोनों शाश्वत सत्य है। मृत्यु को तो एक दिन आना ही है लेकिन जो व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में घबराकर अपने लक्ष्य से विमुख हो जाता है वह जीवित ही मर जाता है। कवि वीरों को संबोधित करते हुए लिखते हैं वीरता ही तुम्हारा आभूषण है। वीर अपनी वीरता के कारण से अमर हो जाता है इसलिए जीते

जी लक्ष्य से विमुख मत होना मृत्यु को साहस के साथ स्वीकार करने के लिए जीते रहो आगे बढ़ते रहो।

विशेषता- कवि ने वीरों की तुलना 'महाकाल' के साथ की है। साथ ही अंतिम पंक्ति में 'जिये चलो, मरे चलो' दो विपरीत वाक्यांशों का प्रयोग सहज रूप में किया है।

बोध प्रश्न

1. वीरता किसका आभूषण है?
2. कवि के अनुसार कौन जीते जी मर जाता है?

(द) गगन उगलता आग हो,------- अड़ो वहीं, गड़ो वहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि सोहनलाल द्विवेदी **हैं।**

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि सोहनलाल द्विवेदी देश की जनता और सैनिकों को जागृत करते हुए संबोधित करते हुए लिखते हैं आकाश चाहे आगे उगल रहा हो अर्थात, परिस्थिति चाहे प्रलय के समान हो चारों तरफ मृत्यु का तांडव मचा हुआ हो लेकिन फिर भी तुम डरना मत अपने रक्त से तुम होली खेलते रहना। मातृभूमि के लिए अपने रक्त से होली खेलने का अवसर बहुत कम सौभाग्यवानों को मिलता है। तुम्हें अपने संकल्प पर अटल रहते हुए अपनी धरती की रक्षा के लिए अड़े रहना है, डटे रहना है बिना रुके आत्मबलिदान के लिए आगे बढ़ते रहना है।

विशेषता- 'गगन उगलता आग हो', किसी आपदा का आना युद्ध अपने आप में आपदा ही है। इस असामान्य परिस्थिति में कवि ने वीरों को जिस प्रकार से उत्साहित किया है वह अपने आप में उत्कृष्ट है।

बोध प्रश्न

1. 'गगन उगलता आग हो', वाक्यांश का अभिप्राय क्या है?
2. कवि ने वीरों को क्या करने के लिए कहा है?

(य) चलो नई मिसाल हो,---------- झुको नही, रूको नही, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि सोहनलाल द्विवेदी **हैं।**

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि सोहनलाल द्विवेदी देश की जनता और सैनिकों को जागृत करते हुए संबोधित करते हुए लिखते हैं वीरों का जन्म तुमसे पहले हुआ है और तुम्हारे बाद भी होगा लेकिन तुम अपने समय के काल को पराजित करनेवाले महाकाल हो इसलिए तुम्हें अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के लिए नवीन उदाहरण अपनी वीरता के द्वारा स्थापित करना होगा। एक मशाल की तरह जलकर तुम्हें इस संसार को अपना मार्गदर्शन प्रदान करना होगा। तुम्हारा कर्म ही तुम्हें नवीन पहचान देगा। किसी के सामने झुकना या रुकना नहीं आगे बढ़ते रहना ही तुम्हारा दायित्व है।

विशेषता- वीरों की तुलना कवि ने 'मशाल' के साथ की है और 'मशाल' के समान जलकर ही इस संसार को मार्गदर्शन प्रदान करने की बात कवि ने की है।

बोध प्रश्न

1. कवि ने वीरों की तुलना किसके साथ की है?
2. कर्म किसे नवीन पहचान देगा?

(र) अशेष रक्त तोल दो,---------- डरो नही, मरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि सोहनलाल द्विवेदी **हैं।**

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि सोहनलाल द्विवेदी देश की जनता और सैनिकों को जागृत करते हुए संबोधित करते हुए लिखते हैं स्वतंत्रता सबको प्यारी होती है लेकिन यह भी सच है कि स्वतंत्रता रक्त माँगती है। वीरों! तुम अपना रक्त मातृभूमि की रक्षा के लिए बहा दो। मातृभूमि सदियों से परतंत्रता की जंजीरों में बंधी हुई है। तुम अब मातृभूमि को इन जंजीरों से मुक्त कर दो। डरना तुमको शोभा नहीं देता, केवल मरने के लिए तुमने जन्म नहीं लिया है। तुम्हें अपने आपको मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए आगे बढ़ाते रहना होगा। यही तुम्हारा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए।

विशेषता- स्वतंत्रता बिना रक्त बहाए नहीं मिलता कवि ने बलिदानियों को देश के लिए रक्त बहाने के लिए प्रेरित किया है।

बोध प्रश्न

1. स्वतंत्रता पाने के लिए क्या बहाना पड़ता है?
2. मातृभूमि सदियों से किस जंजीर से बंधी हुई है?

8.3.2 अरे तुम हो काल के भी काल / बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

कौन कहता है की तुमको खा सकेगा काल?
अरे? तुम हो काल के भी काल अति विकराल
काल का तब धनुष, दिक् की है धनुष की डोर;
धनु-विकंपन से सिहरती सृजन-नाश-हिलोर!
तुम प्रबल दिक्-काल-धनु-धारी सुधन्वा वीर;
तुम चलाते हो सदा चिर चेतना के तीर!
क्या बिगाड़ेगा तुम्हारा, यह क्षणिक आतंक?
क्या समझते हो की होगे नष्ट तुम अकलंक?
यह निपट आतंक भी है भीति-ओत-प्रोत!
और तुम? तुम हो चिरंतन अभयता के स्त्रोत!!
एक क्षण को भी न सोचो की तुम होगे नष्ट,
तुम अनश्वर हो! तुम्हारा भाग्य है सुस्पष्ट!
चिर विजय दासी तुम्हारी, तुम जयी उद्बुद्ध,
बनो हत आश तुम, लख मार्ग निज अवरुद्ध?
फूँक से तुमने उड़ाई भूधरों की पाँत;
और तुमने खींच फेंके काल के भी दाँत;
क्या करेगा यह बिचारा तनिक सा अवरोध?
जानता है जग तुम्हारा है भयंकर क्रोध!
जब करोगे क्रोध तुम, तब आएगा भूडोल,
काँप उठेंगे सभी भूगोल और खगोल,
नाश की लपटें उठेंगी गगन-मंडल बीच;
भस्म होंगी ये असामाजिक प्रथाएँ नीच!
औ पधारेगा सृजन कर अग्नि से सुस्नान;
मत बनो गत आश! तुम हो चिरंतन महान!

निर्देश : इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वचन कीजिए।

(अ) कौन कहता है कि तुमको खा सकेगा काल?-------- धनु-विकंपन से सिहरती सृजन-नाश-हिलोर!

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' देश की जनता को संबोधित करते हुए लिखते हैं तुम उस भारतभूमि के निवासी हो जिसने संपूर्ण विश्व को अपने ज्ञान-विज्ञान, कला, वीरता आदि से प्रभावित किया है। यह कोई एक दिन की बात नहीं है यह भारत का गौरवपूर्ण इतिहास है। काल के साथ युद्ध करनेवाले देश के निवासियों को काल भी हरा नहीं सकता। काल तो तुम्हारा धनुष है और दिशाएँ प्रत्यंचा है। जब तुम अपने हाथ में काल रूपी धनुष को उठाकर दिशा रूपी प्रत्यंचा पर हाथ धरोगे तब अवश्य ही विनाश का समय आएगा लेकिन उस विनाश को देखकर तुम घबराना मत याद रखना कि प्रत्येक विनाश के बाद ही फिर से नव निर्माण का युग आएगा। कवि कहते हैं वीर! तुम विनाश और निर्माण दोनों के बीच के सेतु हो अत: अपने आपको आगे निर्भीक होकर आगे बढ़ाते रहो।

विशेषता- कवि ने प्रस्तुत कविता के द्वारा भारत के निवासियों को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक किया है।

बोध प्रश्न

1. 'काल' की तुलना कवि ने किसके साथ की है?
2. कौन विनाश और निर्माण दोनों के बीच का सेतु है?

(ब) तुम प्रबल दिक्-काल-धनु-धारी सुधन्वा वीर;------क्या समझते हो की होगे नष्ट तुम अकलंक?

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' देश की जनता को संबोधित करते हुए लिखते हैं तुम अपने सामर्थ्य को लेकर संशय मत रखना क्योंकि तुमने अपनी चेतना के द्वारा सदियों से दूसरों का मार्गदर्शन किया है तुम्हें हराना आसान नहीं है। कवि कहते हैं वीर! तुम 'सव्यसाची' हो क्योंकि तुम अपने दोनों हाथों की शक्ति से काल के दिशा को भी बदल सकते हो। तुम्हारी तरफ ही विश्व की दृष्टि गढ़ी हुई है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ तुम्हारा रास्ता रोकेगी लेकिन तुम्हारे साहस को नष्ट कर दे ऐसी क्षमता उनमें नहीं है। इसलिए संशयहीन होकर आगे बढ़ते रहना ही तुम्हारा धर्म है।

विशेषता- कवि ने प्रस्तुत कविता के द्वारा भारत के निवासियों को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक किया है।

बोध प्रश्न

1. कवि ने वीर को क्या नाम दिया है?
2. वीरों ने सदियों से अपनी चेतना के द्वारा क्या किया है?

(स) यह निपट आतंक भी है भीति-ओत-प्रोत!----------तुम अनश्वर हो! तुम्हारा भाग्य है सुस्पष्ट!

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' देश की जनता को संबोधित करते हुए लिखते हैं यह जो बीच-बीच में तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए विषम परिस्थितियाँ आती है इन्हें देखकर तुम्हें यह समझ लेना होगा कि जो समस्याओं का समाधान निकाल सकता है समस्याएं उन्हीं का चुनाव करती है। तुम्हारी निडरता को लेकर किसी के मन में कोई संदेह नहीं है। तुम्हारा भाग्य सुस्पष्ट है कि तुम इस संसार को मार्ग दिखानेवाले राजा हो। विश्व तुम्हारी योग्यता के सामने नतमस्तक है।

विशेषता- कवि ने प्रस्तुत कविता के द्वारा भारत के निवासियों को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक किया है।

बोध प्रश्न

1. विश्व किसकी योग्यता के सामने नतमस्तक है?
2. किसका भाग्य सुस्पष्ट है?

(द) चिर विजय दासी तुम्हारी, तुम जयी उद्‌बुद्ध,---------और तुमने खींच फेंके काल के भी दाँत;

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' देश की जनता को संबोधित करते हुए लिखते हैं विजयश्री तो तुम्हारी दासी या सेवक ही है क्योंकि उसे पता है तुम्हें हराना असंभव है। तुमने हार स्वीकार करने के लिए जन्म नहीं लिया है। हाँ, युद्धभूमि के कभी-कभी शत्रु पर प्रहार करने से पहले पीछे भी हटना पड़ता है लेकिन यह पीछे हटना तुम्हारी कायरता नहीं है यह तुम्हारा युद्ध कौशल है।

इसे अपनी कमजोरी समझकर निराश होने की आवश्यकता कदापि नहीं है। कितने आक्रमणकारियों ने कितने प्रकार से तुम्हें और तुम्हारी मातृभूमि को पराधीन करने का प्रयास किया लेकिन हर बार तुमने अपने स्वाभिमान की रक्षा की है, मातृभूमि की रक्षा की है। तुमने अपने प्रहार से विशाल शत्रु सेना की पंक्तियों को तिनके के समान उखाड़ दिया है और विनाश के विषयुक्त दाँतों को भी उखाड़ फेंका है।

विशेषता- कवि ने प्रस्तुत कविता के द्वारा भारत के निवासियों को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक किया है।

बोध प्रश्न

1. युद्ध भूमि में कभी कभार क्या करना पड़ता है?
2. विजयश्री किसकी दासी है?

(य) क्या करेगा यह बिचारा तनिक सा अवरोध?--------काँप उठेंगे सभी भूगोल और खगोल,

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' देश की जनता को संबोधित करते हुए लिखते हैं यह शत्रु सेना की मूर्खता या फिर दिग्भ्रमित मानसिकता ही है कि हर बार वह तुम्हारे सामने आकर खड़ा हो जाता है इस आशा के साथ कि शायद इस बार वह तुमको हरा ही देगा लेकिन हर बार उसके हाथ निराशा ही आती है क्योंकि शांत देश के निवासी जब अपनी रक्षा के लिए अपने बाहुबल का जोश दिखते हैं तब धरती और आसमान दोनों सिमट जाते हैं और चारों तरफ केवल भारत और भारतवासियों के शौर्य का ही पताका लहराने लगता है। यही भारत देश की अपनी पहचान है। इस पहचान को नष्ट करना किसी के सामर्थ्य की बात नहीं है।

विशेषता- कवि ने प्रस्तुत कविता के द्वारा भारत के निवासियों को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक किया है।

बोध प्रश्न

1. शत्रु सेना की मानसिकता कैसी है?
2. चारों तरफ हरेक युद्ध के बाद क्या लहराता हुआ दिखता है?

(र) नाश की लपटें उठेंगी गगन-मंडल बीच;----------मत बनो गत आश! तुम हो चिर अनंत महान!

संदर्भ- प्रस्तुत कविता के कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत कविता का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है।

व्याख्या- कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' देश की जनता को संबोधित करते हुए लिखते हैं विश्वगुरु, मार्गदर्शक आदि बनना कोई आसान काम नहीं है। भारत ने यह सिद्ध किया है कि उसमें इस संसार को लेकर आगे बढ़ने का सामर्थ्य है। भारत ने प्रत्येक कुविचार का विरोध किया है। उनका संशोधन किया है। हिंसा और अहिंसा दोनों माध्यमों के द्वारा भारत ने इस विश्व में मानवता का प्रचार-प्रसार किया है। आज अगर कहीं तुम्हें कुछ असामाजिक दिखाई पड़ रहा है तो उसे लेकर चिंतित होने के स्थान पर तुम फिर से योजनाओं को बनाना प्रारम्भ करो। अगर तुम निराश हो जाओगे तो विश्व को मार्ग कौन दिखाएगा? तुम केवल एक देश नहीं, केवल कुछ नागरिक नहीं हो बल्कि अमर, अजेय सेना हो।

विशेषता- कवि ने प्रस्तुत कविता के द्वारा भारत के निवासियों को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक किया है।

बोध प्रश्न

1. भारत ने किसका विरोध किया है?
2. भारत ने क्या सिद्ध किया है?

8.4 पाठ सार

'बढ़े चलो, बढ़े चलो' सोहनलाल द्विवेदी के द्वारा लिखित राष्ट्रीय काव्यधारा से प्रेरित कविता है। कवि ने प्रस्तुत कविता के द्वारा भारत के नागरिकों को और वीर सेनानियों को उत्साहित करते हुए लिखा है मनोबल से अधिक कुछ नहीं होता। यह मत सोचो कि तुम्हारे हाथ में अस्त्र और शस्त्र नहीं है तो तुम निर्बल हो। माना कि आज तुम्हारे पास अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं है मन संदेहों से भरा हुआ है। यह मत भूलो कि तुम्हारी यह वीरतापूर्ण मनोभावना ही तुम्हारा अन्न, वस्त्र, मनोबल सब कुछ है। इसलिए अपनी वीर भावना को नष्ट मत होने दो और अपनी धरती से तुम हटो नहीं, डरो नहीं, आगे बढ़ते चलो, आगे बढ़ते चलो देश को तुम्हारी आवश्यकता है। संकट हमेशा बर्फ से घिरे हुए पर्वत चोटी समान ही दिखते हैं ऐसा लगता है कि जैसे उन्हें पार नहीं किया जा सकता लेकिन ऐसी सोच रखना कदापि उचित नहीं है क्योंकि ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान नहीं है। तुम अपने निर्णय शक्ति पर अडिग रहो। कठिन समय को दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा ही अनुकूल बनाया जा सकता है। जीवन यात्रा पर चलते हुए कई बार ऐसा दिखाई पड़ता है कि साथ में चलनेवाले लोग बिखर गए हैं या फिर वे सहायता करने को तैयार नहीं है

ऐसे समय में भी घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने हिस्से का युद्ध स्वयं अकेले ही लड़ना पड़ता है। तुम अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित करो लेकिन यह आशा मत रखो कि हमेशा तुमको सबका साथ मिलेगा। तुम्हारा मित्र तुम्हारा साहस और मनोबल है। इन दोनों मित्रों को साथ लेकर ही हे वीर! तुम बिना रुके, बिना झुके आगे बढ़ते रहो। कठिनाइयों के साथ तो हमेशा ही लड़ना पड़ता है। संकट के समय में ही तो व्यक्ति के चरित्र की वास्तविक परीक्षा होती है। भूलो मत तुम तो स्वयं महाकाल हो जिसने विष को भी मानवता के कल्याण हेतु अमृत समान पी लिया था। इसलिए हे वीर! कठिनाइयों को देखकर, चुनौतियों को देखकर घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। अपने लक्ष्य को स्थिर रखो और दृढ़ प्रतिज्ञ होकर उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते रहो। युद्ध में हार होगी या जीत इस विषय से भी अधिक महत्वपूर्ण विषय है लक्ष्य को स्थिर रखना क्योंकि कठिन परिस्थिति को देखकर लक्ष्य से पीछे हटना ही सबसे बड़ी हार है। जन्म और मृत्यु दोनों शाश्वत सत्य है। आकाश चाहे आगे उगल रहा हो अर्थात, परिस्थिति चाहे प्रलय के समान हो चारों तरफ मृत्यु का तांडव मचा हुआ हो लेकिन फिर भी तुम डरना मत अपने रक्त से तुम होली खेलते रहना। मातृभूमि के लिए अपने रक्त से होली खेलने का अवसर बहुत कम सौभाग्यवानों को मिलता है। तुम्हें अपने संकल्प पर अटल रहते हुए अपनी धरती की रक्षा के लिए अड़े रहना है, डटे रहना है बिना रुके आत्मबलिदान के लिए आगे बढ़ते रहना है। तुम अपने समय के काल को पराजित करनेवाले महाकाल हो इसलिए तुम्हें अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के लिए नवीन उदाहरण अपनी वीरता के द्वारा स्थापित करना होगा। एक मशाल की तरह जलकर तुम्हें इस संसार को अपना मार्गदर्शन प्रदान करना होगा। तुम्हारा कर्म ही तुम्हें नवीन पहचान देगा। किसी के सामने झुकना या रुकना नहीं आगे बढ़ते रहना ही तुम्हारा दायित्व है। स्वतंत्रता रक्त माँगती है। वीरों! तुम अपना रक्त मातृभूमि की रक्षा के लिए बहा दो। मातृभूमि सदियों से परतंत्रता की जंजीरों में बंधी हुई है। तुम अब मातृभूमि को इन जंजीरों से मुक्त कर दो। डरना तुमको शोभा नहीं देता, केवल मरने के लिए तुमने जन्म नहीं लिया है। तुम्हें अपने आपको मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए आगे बढ़ाते रहना होगा। यही तुम्हारा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए।

'अरे तुम हो काल के भी काल' बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के द्वारा लिखित राष्ट्रीय काव्यधारा से प्रेरित कविता है। कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' देश की जनता को संबोधित करते हुए लिखते हैं तुम उस भारतभूमि के निवासी हो जिसने संपूर्ण विश्व को अपने ज्ञान-विज्ञान, कला, वीरता आदि से प्रभावित किया है। यह कोई एक दिन की बात नहीं है यह भारत का गौरवपूर्ण इतिहास है। काल के साथ युद्ध करनेवाले देश के निवासियों को काल भी हरा नहीं सकता। काल तो तुम्हारा धनुष है और दिशाएँ प्रत्यंचा है। जब तुम अपने हाथ में काल रूपी धनुष को उठाकर दिशा रूपी प्रत्यंचा पर हाथ धरोगे तब अवश्य ही विनाश का समय आएगा लेकिन उस विनाश को देखकर तुम घबराना मत याद रखना कि प्रत्येक विनाश के बाद ही फिर से नव निर्माण का युग आएगा।

तुमने अपनी चेतना के द्वारा सदियों से दूसरों का मार्गदर्शन किया है तुम्हें हराना आसान नहीं है। तुम 'सव्यसाची' हो क्योंकि तुम काल के दिशा को भी अपने बाहुबल से बदल सकते हो। तुम्हारी तरफ ही विश्व की दृष्टि गढ़ी हुई है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ तुम्हारा रास्ता रोकेगी लेकिन तुम्हारे साहस को नष्ट कर दे ऐसी क्षमता उनमें नहीं है। इसलिए संशयहीन होकर आगे बढ़ते रहना ही तुम्हारा धर्म है। यह जो बीच-बीच में तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए विषम परिस्थितियाँ आती है इन्हें देखकर तुम्हें यह समझ लेना होगा कि जो समस्याओं का समाधान निकाल सकता है समस्याएं उन्हीं का चुनाव करती है। तुम्हारी निडरता को लेकर किसी के मन में कोई संदेह नहीं है। तुम्हारा भाग्य सुस्पष्ट है कि तुम इस संसार को मार्ग दिखानेवाले राजा हो। विश्व तुम्हारी योग्यता के सामने नतमस्तक है। हाँ, युद्धभूमि के कभी-कभी शत्रु पर प्रहार करने से पहले पीछे भी हटना पड़ता है लेकिन यह पीछे हटना तुम्हारी कायरता नहीं है यह तुम्हारा युद्ध कौशल है। इसे अपनी कमजोरी समझकर निराश होने की आवश्यकता कदापि नहीं है। कितने आक्रमणकारियों ने कितने प्रकार से तुम्हें और तुम्हारी मातृभूमि को पराधीन करने का प्रयास किया लेकिन हर बार तुमने अपने स्वाभिमान की रक्षा की है, मातृभूमि की रक्षा की है। तुमने अपने प्रहार से विशाल शत्रु सेना की पंक्तियों को तिनके के समान उखाड़ दिया है और विनाश के विषयुक्त दाँतों को भी उखाड़ फेंका है। यह शत्रु सेना की मूर्खता या फिर दिग्भ्रमित मानसिकता ही है कि हर बार वह तुम्हारे सामने आकर खड़ा हो जाता है इस आशा के साथ कि शायद इस बार वह तुमको हरा ही देगा लेकिन हर बार उसके हाथ निराशा ही आती है क्योंकि शांत देश के निवासी जब अपनी रक्षा के लिए अपने बाहुबल का जोश दिखते हैं तब धरती और आसमान दोनों सिमट जाते हैं और चारों तरफ केवल भारत और भारतवासियों के शौर्य का ही पताका लहराने लगता है। यही भारत देश की अपनी पहचान है। इस पहचान को नष्ट करना किसी के सामर्थ्य की बात नहीं है। विश्वगुरु, मार्गदर्शक आदि बनना कोई आसान काम नहीं है। भारत ने यह सिद्ध किया है कि उसमें इस संसार को लेकर आगे बढ़ने का सामर्थ्य है। भारत ने प्रत्येक कुविचार का विरोध किया है। उनका संशोधन किया है। हिंसा और अहिंसा दोनों माध्यमों के द्वारा भारत ने इस विश्व में मानवता का प्रचार-प्रसार किया है। आज अगर कहीं तुम्हें कुछ असामाजिक दिखाई पड़ रहा है तो उसे लेकर चिंतित होने के स्थान पर तुम फिर से योजनाओं को बनाना प्रारम्भ करो। अगर तुम निराश हो जाओगे तो विश्व को मार्ग कौन दिखाएगा? तुम केवल एक देश नहीं, केवल कुछ नागरिक नहीं हो बल्कि अमर, अजेय सेना हो।

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

प्रिय छात्रो! प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप-

1. 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' सोहनलाल द्विवेदी द्वारा लिखित कविता की संपूर्ण व्याख्या को समझ गए हैं।

2. ‘अरे तुम हो काल के भी काल’ बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' द्वारा लिखित कविता की संपूर्ण व्याख्या को समझ गए हैं।

3. कठिन शब्दार्थों से भी आप अवगत हो गए हैं।

8.6 शब्द संपदा

1. मानवता - humanity
2. नागरिक - देश की जनता
3. संशोधन - सुधारना
4. मार्ग - रास्ता
5. कुविचार - खराब विचार
6. सव्यसाची - जो दोनों हाथों से धनुष चला सकता है
7. प्रारम्भ - शुरू करना
8. अजेय - जिसको पराजित नहीं किया जा सकता है
9. सिद्ध - प्रमाणित करना
10. शाश्वत - हमेशा

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड-अ

8.7.1 सही विकल्प चुनिए।

1. ‘अरे तुम हो काल के भी काल’ कविता के कवि कौन हैं?

   A. **बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'** B. प्रेमचंद C. निराला D. इनमें से कोई नहीं

2. ‘बढ़े चलो, बढ़े चलो’ कविता के कवि कौन हैं?

   A. अज्ञेय B. महादेवी वर्मा **C, सोहनलाल द्विवेदी** D दिनकर

3. काल शब्द का अर्थ क्या है? समय

   A. रंग B. रात C. दिन **D. समय**

4. सिद्ध शब्द का अर्थ क्या है? प्रमाणित करना

A. पानी B. संदेह **C. प्रमाणित करना** D. इनमें से कोई नहीं

5. सुमेल कीजिए।

1) अस्त्र – (a) जो दोनों हाथों से धनुष चला सकता है

2) समक्ष - (b) धनुष को सुंदर ढंग से पकड़ने वाला

3) सुधन्वा - (c) सामने

4) सव्यसाची - (d) मंत्रों के द्वारा फेंक कर चलाया जानेवाला हथियार

A. 1-d, 2-c, 3-b, 4-a B. 1-a, 2-c, 3-b, 4-d

C.1-c, 2-d, 3-b, 4-a D. 1-d, 2-c, 3-a, 4-b

6. सोहनलाल द्विवेदी द्वारा रचित कविता 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' का मुख्य स्वर क्या है?

A. राष्ट्रीय चेतना और वीरता B. प्रकृति का चित्रण

C. श्रृंगार रस की प्रधानता D. विदेशी सत्ता का समर्थन

7. कविता 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' के अनुसार, यदि एक वीर के पास शस्त्र या वस्त्र न हों, तो उसे क्या नहीं खोना चाहिए?

A. वीरतापूर्ण मनोभावना B. अपनी संपत्ति

C. शत्रु के प्रति दया D. अतीत का दुख

8. कवि सोहनलाल द्विवेदी ने 'हिम-शिखर' की तुलना किससे की है?

A. शांति के प्रतीकों से B. देश की सीमाओं से

C. सफेद वस्त्रों से **D. जीवन में आने वाले संकटों से**

9. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता में 'सव्यसाची' शब्द किसके लिए संकेत करता है?

A. दिशाओं के देवता B. विदेशी आक्रमणकारी

C. काल या मृत्यु **D. शक्तिशाली भारतीय वीर**

10. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के अनुसार, विनाश के बाद किसका आगमन निश्चित है?

A. केवल अंधकार का **B. सृजन या नव-निर्माण का**

C. शत्रु के शासन का D. इतिहास के अंत का

खंड-ब

8.7.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिये।

निम्न पंक्तियों का भावार्थ समझाइए-

1. नाश की लपटें उठेंगी गगन-मंडल बीच;--------मत बनो गत आश! तुम हो चिर अनंत महान!
2. चलो नई मिसाल हो,---------- झुको नही, रूको नही, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
3. चिर विजय दासी तुम्हारी, तुम जयी उद्‌बुद्ध,------और तुमने खींच फेंके काल के भी दाँत;
4. यह निपट आतंक भी है भीति-ओत-प्रोत!----------तुम अनश्वर हो! तुम्हारा भाग्य है सुस्पष्ट!

खंड-स

8.7.3 निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिये।

निम्न पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये-

1. न हाथ एक शस्त्र हो,---------- हटो नहीं, डरो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
2. घटा घिरी अटूट हो,---------- जिये चलो, मरे चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो ।
3. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के द्वारा लिखित कविता 'अरे तुम हो काल के भी काल' का सार तत्व समझाइए।
4. सोहनलाल द्विवेदी द्वारा लिखित कविता 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' का सार तत्व समझाइए।

8.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – नगेंद्र
2. हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश
3. गूगल साभार

परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना

MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY

PROGRAMME: B.A – HINDI (DSE -1)

IV – SEMESTER EXAMINATION

TITLE & PAPER CODE : राष्ट्रीय काव्यधारा (BNHN402DET)

TIME: 2 HOURS TOTAL MARKS: 35

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभाजित हैं- भाग -1, भाग -2 और भाग - 3 प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग – 1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए। 5X1=5

i. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म किस स्थान पर हुआ था?

A. कलकत्ता B. इलाहाबाद **C. चिरगाँव, झाँसी** D. वाराणसी

ii. शिक्षा के अभाव में 'कल्याण की आशा' को कवि ने क्या संज्ञा दी है?

A. सुनहरी आशा **B. दुराशा** C. दृढ़ प्रतिज्ञा D. सार्थक प्रयास

iii. माखनलाल चतुर्वेदी ने किस प्रसिद्ध पत्रिका का संपादन करके राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया?

A. सरस्वती B. हंस C. मतवाला **D. कर्मवीर**

iv. 'गगन पर दो सितारे' कविता में 'सेवा-ग्राम' शब्द किसकी ओर संकेत करता है?

A. विनोबा भावे B. भगत सिंह C. जवाहरलाल नेहरू **D. महात्मा गांधी**

v. दिनकर के अनुसार समाज की सबसे घातक और मानवता विरोधी रूढ़ि क्या है?

A. सामंतवाद B. अंधविश्वास C. जातिवाद **D. भाग्यवाद**

भाग – 2

निम्नलिखित आठ प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना अनिवार्य है। 5X4 =20

2. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य के मूल स्वरों पर प्रकाश डालिए।

3. माखनलाल चतुर्वेदी की प्रमुख काव्य रचनाओं के नाम लिखिए ।

4. 'पुष्प की अभिलाषा'कविता का सारांश प्रस्तुत कीजिए।

5. दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।

6. प्रेम के संबंध में दिनकर की मान्यताओं पर विचार कीजिए।

7. कविता 'कलम, आज उनकी जय बोल' के मुख्य विषय पर प्रकाश डालिए।

8. सोहनलाल द्विवेदी के जीवन से संबंधित पहलुओं पर प्रकाश डालिए।

9. चलो नई मिसाल हो,---------- झुको नही, रूको नही, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

भाग- 3

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किन्हीं एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना अनिवार्य है। 1X10=30

10. आधुनिक हिंदी कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी के स्थान को बताइए।

11. 'भारत भारती' में शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्य किस प्रकार व्यक्त किए गए हैं?

*****